UNIVERSAL
LIBRARY
OU_178821
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83 T36A Accession No. H2092

Author ठाकुर केशवकुमार

Title अमीरी के दिन 1950

This book should be returned on or before the date last marked below.

अमीरी के दिन

(मौलिक सामाजिक उपन्यास)

लेखक

केशवकुमार ठाकुर

प्रकाशक

साहित्य निकेतन

दारागञ्ज, प्रयाग

प्रथम बार] १९५० [मूल्य ३)

प्रकाशिका
श्रीमती रामकली देवी
व्यवस्थापिका, साहित्य निकेतन
दारागंज, प्रयाग

मुद्रक—
गंगा प्रेस, दारागञ्ज
प्रयाग

भूमिका

उपन्यास में समाज के चित्र का प्रतिबिम्ब होता है। उपन्यास के पात्रों के चरित्र चित्रण में, उपन्यासकार जितना ही सफल होता है, उपन्यास उतना ही रोचक और सफल होता है। एक उपन्यास की इतनी ही परिभाषा होती है।

कुछ उपन्यासकार अपने उपन्यासों में आदर्श का चित्र खींचा करते हैं। मैं इसका समर्थन नहीं करता। मैं तो स्पष्ट रूप से इस बात को मानता हूँ कि उपन्यास समाज का वास्तविक चित्र होता है। यदि यह बात सही है तो वहाँ आदर्श की कल्पना को स्थान कहाँ है!

यह तो सभी जानते हैं कि समाज में सभी आदमी एक से नहीं होते। स्वभाव भिन्न होते हैं। शरीर की बनावट भिन्न होती है और व्यवहारिक प्रतिकूलता भी स्वभावतः देखने को मिलती है। इसी आधार पर, जब एक पाठक किसी उपन्यास को पढ़ते समय यह भूल जाता है कि वह कोई पुस्तक पढ़ रहा है; बल्कि उसे मानव जीवन की प्रत्यक्ष घटनाओं का अनुभव होता है, उसी अवस्था में उस उपन्यास का रचनाकार उसके लिखने में सफल होता है, इसके साथ ही उपन्यास की भाषा, शैली और भावुकता—तीनों मिलकर उसकी उपयोगिता की बृद्धि करती हैं।

'अमीरी के दिन' मेरा उपन्यास, आज तक की मेरी पुस्तकों में नया उपन्यास है। इसमें सामाजिक जीवन का एक स्पष्ठ चित्र देखने को मिलेगा। जितने भी पात्र पाठकों के सामने आवेंगे; वे अपना अलग-अलग अस्तित्व उपस्थित करेंगे। किसी अमीर आदमी का जीवन कैसा होता है, उसकी दूषित भावनायें समाज के लिए कितनी विपदपूर्ण होती हैं, साथ ही अमीरों से संबंध रखने वाले व्यक्ति कितने नराधम हो सकते हैं। इस प्रकार मानवजीवन के विभिन्न रूप देखने को मिलेंगे जो पाठकों के सामने एक अद्भुत तहलका पैदा करते हैं और पाठक कुछ समय के लिए कुछ का कुछ हो जाता है। 'अमीरी के दिन' का परिचय देने के लिए मेरे पास केवल इतने ही शब्द हैं। उसके संबन्ध में अधिक बातों का निर्णय करने के लिए पाठक सर्वथा अधिकारी हैं।

केशव कुमार ठाकुर

अमीरी के दिन

पहला परिच्छेद

बरसात के दिन हैं। आज कई दिनों से बादलों ने इस प्रकार आकाश को घेर रखा है कि क्षण-भर के लिए भी, सूर्य भगवान् के दर्शन नहीं हुए। आज भी बहुत देर तक छोटी-छोटी बूँदे पड़ती रही हैं। लेकिन दोपहर के बाद से वृष्टि बंद हो गयी है।

गिलिस बाज़ार का चौराहा पार करके शमशेरसिंह कोतवाली की ओर चले और उसकी इमारत में, ऊँचाई पर लगी हुई घड़ी में देखा, अभी पूरे चार नहीं बजे थे। शमशेरसिंह कोतवाली को पार करके जैसे ही कचहरी की ओर बढ़े, उनकी दृष्टि, स्वच्छ वस्त्र पहने हुए एक युवती पर पड़ी। वह रूपवती अत्यन्त स्वस्थ और गौरवर्ण थी। उसकी मुखाकृति सुगोल और उसके नेत्र विशाल थे।

युवती के आगे-आगे एक बूढ़ी स्त्री जा रही थी। शमशेरसिंह युवती को देखकर आगे बढ़े और सरसैया घाट जानेवाली सड़क पर, उसके बराबर-बराबर चलने लगे। शमशेरसिंह ने अनेक बार उस युवती की ओर देखा। युवती ने एक बार शमशेरसिंह की ओर

देखकर अभिमान पूर्वक अपनी आँखें नीची कर लीं। शमशेरसिंह अब भी बराबर-बराबर चले जारहे थे। युवती के दूसरी बार मुखातिब न होने पर शमशेरसिंह ने कुछ बातचीत करने का प्रयत्न किया और सोच-विचार कर युवती से पूछा—आप यहीं शहर में रहती हैं ?

युवती ने सिर उठाकर शमशेरसिंह की ओर देखा। किन्तु कुछ उत्तर न दिया। बुढ़िया ने उनकी बात को सुना और उनकी ओर घूमकर देखते हुए, उसने कहा—हाँ बाबू, हम लोग इसी शहर में रहती हैं।

शमशेरसिंह ने फिर पूछा—यहाँ किस मुहाल में आप रहती हैं ?

बुढ़िया—बंगाली मुहाल में।

शमशेरसिंह कुछ रुके, किन्तु कुछ सोचकर फिर पूछा—आप लोग बंगाली हैं ?

बुढ़िया—नहीं, हम लोग गुजराती हैं।

शमशेरसिंह—अच्छा, आप लोग गुजराती हैं ?

बुढ़िया—जी हाँ।

शमशेरसिंह ने फिर एक बार उस युवती की ओर देखा। वह बिना किसी भावना के, बुढ़िया के पीछे-पीछे जा रही थी। शमशेरसिंह ने उसको मुखातिब करने की चेष्टा की किन्तु उन्हें सफलता न मिली।

शमशेरसिंह ने अपने बायीं ओर घूमकर देखा, वे कचहरी की इमारतों को पार करके आगे निकल गई थीं। यह देखकर वे वहाँ से पुलीस लाइन की ओर जाने वाली सड़क पर घूम गये और आगे जाकर कुछ ही अन्तर से वे कचहरी की ओर गये।

अपने वकील के कमरे में जाकर देखा, दो-तीन देहाती आदमियों को छोड़कर वहाँ और कोई न था। वकील साहब की कुरसी खाली

पड़ी थी। कमरे में बैठे हुए आदमियों में से, एक से, शमशेरसिंह ने पूछा—बाबू जी कहाँ गये ?

आदमी—बाबू जी किसी मुक़दमें में गये हैं।

शमशेरसिंह—किसी मुक़दमे में ?

आदमी—जी हाँ।

शमशेरसिंह—किस अदालत में ?

आदमी—यह मैं नहीं जानता।

शमशेरसिंह—कब गये थे ?

आदमी—उनको गये हुए बड़ी देर हुई।

शमशेरसिंह—चुप हो रहे। वे एक कुरसी पर बैठ गये। और उस आदमी से फिर पूछा—कितनी देर में लौटेंगे।

आदमी—मैं यह भी नहीं बता सकता।

शमशेरसिंह ने आगे कुछ न कहा। वे चुपचाप अपनी कुरसी पर बैठे रहे और मन-ही-मन कहने लगे—वकील साहब से कोई विशेष काम तो नहीं है; लेकिन यहाँ आने पर भेंट हो जाती तो अच्छा था। थोड़ी देर बैठ कर उनका रास्ता देखना चाहिए। यदि अधिक देर होगी तो फिर यहाँ से चल देंगे।

चुपचाप बैठे हुए शमशेरसिंह का समय न कटता था। उन्होंने जेब से सिगरेट-केस निकाला और एक सिगरेट निकाल कर उसे जलाया। सिगरेट पीते हुए उन्होंने बैठे हुए आदमियों से पूछा—तुम लोग कहाँ के रहने वाले हो ?

बैठे हुए आदमियों में से एक ने कहा—हम तीनों आदमी एक ही स्थान के रहने वाले हैं। हमारे गाँव का नाम है, खैरातपुर।

शमशेरसिंह—खैरातपुर तो बिठूर की तरफ कहीं पड़ता है ?

आदमी—जी हाँ।

शमशेरसिंह—तुम लोग कौन भाई हो?

आदमी—हम तीनों आदमी राजपूत हैं।

शमशेरसिंह को वहाँ बैठे हुए कुछ देर हो गयी थी। उनकी तबीयत अब न लगी। वे वहाँ से उठकर चल दिए। और कचहरी से निकल कर उन्होंने अपने घर का रास्ता लिया। मार्ग में उनके नेत्रों में उस युवती का चित्र घूम रहा था। उसकी अवस्था, उसका स्वास्थ्य और रूप-रंग सोचकर वे मन-ही-मन कहने लगे—भगवान ने संसार में एक-से-एक बढ़कर बनाये हैं। इस गुजराती स्त्री का स्वरूप देखने के योग्य है। इस अवस्था में इन युवतियों को इतना अभिमान होता है कि वे देखना और बोलना भी पसंद नहीं करतीं।

मानसिक भावों की तरङ्गों में शमशेरसिंह अनेक प्रकार की बातें सोचते हुए चले जारहे थे। वे अपने घर के मार्ग पर थे। किन्तु घर उनका अभी दूर था।

दूसरा परिच्छेद

शमशेरसिंह कानपुर ज़िले के अन्तर्गत देवीगंज के निवासी हैं। आप एक बड़े ज़मींदार हैं। अपने मुक़दमों के सिलसिलों में वे प्रायः कानपुर में बने रहते हैं। अपने रहने के लिए उन्होंने एक किराये पर मकान नौघड़े में ले रखा है।

आज अपने मकान में, चारपाई पर लेटे हुए शमशेरसिंह अपने मुंशी हिम्मतसिंह से बातें कर रहे हैं। सफेद मसनद के सहारे लेटे हुए उन्होंने अपने मुंशी जी से कहा—मुन्शी जी!

मुन्शी जी—हाँ सरकार!

शमशेरसिंह ने हँसकर कहा—कल एक बड़ी घटना हो गई।

मुन्शी जी ने आश्चर्य के साथ शमशेरसिंह की ओर देखा और पूछा—घटना?

शमशेरसिंह—हाँ, घटना।

मुन्शी जी—कैसी घटना?

शमशेरसिंह मुस्करा रहे थे, फिर भी मुन्शी जी आश्चर्य के साथ उनकी ओर देख रहे थे। कुछ रुककर शमशेरसिंह ने कहा—बतावें मुन्शी जी!

मुन्शी जी—हाँ साहब, बताइए।

शमशेरसिंह—तुम सुनोगे ?

मुन्शी जी—हाँ साहब, सुनेंगे क्यों नहीं।

शमशेरसिंह—तुम सुनकर क्या करोगे ?

मुन्शी जी—सुनकर ?

शमशेरसिंह—हाँ, सुनकर।

मुन्शी जी—घटनायें सुनने और पढ़ने के लिए हज़ारों और लाखों आदमी पैसे खर्च करते हैं और अखबार खरीदकर पढ़ते हैं। हमको तो सरकार, बिना पैसे के ही जानने को मिल रहा है।

शमशेरसिंह—यह बात !

मुन्शी जी—जी हाँ।

शमशेरसिंह ने मुस्कराते हुए कहा—कल तीन-चार बजे के क़रीब हम कचहरी जा रहे थे, सोचा था कि वकील साहब से मुलाक़ात कर लेंगे।

मुन्शी जी ने तेज़ी के साथ पूछा—कल तीन-चार बजे ?

शमशेरसिंह—हाँ, कल।

मुन्शी जी—कल तीन-चार बजे तक मैं कचहरी में ही रहा हूँ। आपसे भेंट नहीं हुई ?

शमशेरसिंह—जब हम पहुँचे हैं, तब तुम चले आये होगे ?

मुन्शी जी—नहीं सरकार !

शमशेरसिंह—नहीं क्या ?

मुन्शी जी ने सोचते हुए कहा—हाँ, ठीक है, तीन बजे तक तो मैं कचहरी में था। उसके बाद मैं चला आया था।

शमशेरसिंह—अब तुम रास्ते पर आये।

मुन्शी जी—नहीं, ठीक है, मैं भूल रहा था। हाँ, तो फिर ?

शमशेरसिंह—हम कचहरी की ओर जा रहे थे, कोतवाली के आगे का चौराहा पार करते ही वह घटना हुई।

मुन्शी जी ने अपनी हँसी को छिपाकर कहा—सरकार, वह घटना कौन-सी हुई?

शमशेरसिंह—तुम थोड़ा-सा संतोष करो, हम अभी बताते हैं।

मुन्शी जी—बहुत अच्छा।

शमशेरसिंह ने फिर कहा—चौराहे के आगे बढ़ते ही हमने देखा, एक सत्रह-अठारह वर्ष की युवती हमारे दाहिनी ओर सरसैया घाट की ओर जा रही थी।

मुन्शी जी—अकेले?

शमशेरसिंह—नहीं, उसके साथ एक बुढ़िया थी। वह आगे-आगे चल रही थी।

मुन्शी जी—फिर?

शमशेरसिंह—मुन्शी जी, हम क्या बतावें, उसके शरीर की बनावट, जैसे संगमरमर!

मुन्शी जी ने मुस्कराकर कहा—क्या वह सफेद थी?

शमशेरसिंह—नहीं।

मुन्शी जी—लेकिन सरकार, संगमरमर तो सफेद होता है।

शमशेरसिंह—उसका रंग गोरा था, देखने-सुनने में वह बहुत खूबसूरत थी।

मुन्शी जी—अच्छा फिर?

शमशेरसिंह—कुछ देर हम लोग साथ-साथ चलते रहे। इसके बाद हमसे रहा नहीं गया, बिना सोचे-समझे हम पूछ बैठे कि आप लोग इसी शहर में रहती हैं।

मुन्शी जी—अच्छा।

शमशेरसिंह—उस युवती ने तो कुछ उत्तर न दिया, लेकिन बुढ़िया से कई एक बातें हुईं।

मुन्शी जी—क्या ?

शमशेरसिंह—बातों से हमने यह पता लगा लिया कि वे दोनों यहीं बंगाली मुहाल में रहती हैं।

मुन्शी जी—बंगाली मुहाल में ?

शमशेरसिंह—हाँ, बंगाली मुहाल में।

मुन्शी जी—किस जगह ?

शमशेरसिंह—यह तो हमने नहीं पूछा।

मुन्शी जी चुप हो गये। शमशेरसिंह ने कहा—अब आगे तुम्हारा काम बाकी है।

मुन्शी जी—क्या काम ?

शमशेरसिंह—यही कि वे वहाँ पर कहाँ रहती हैं।

मुन्शी जी ने कुछ सोचकर कहा—बिना नाम के उनका, सरकार, कैसे पता लगेगा ?

शमशेरसिंह—लग सकता है।

मुन्शी जी—कैसे ?

शमशेरसिंह—यह बता देने से फिर तुम्हारी खूबी ही क्या रही ?

मुन्शी जी चुप होकर मुस्कराने लगे। शमशेरसिंह चुप थे। वे कुछ देर तक चुपचाप लेटे रहे और फिर उसके बाद उन्होंने कहा—

मुन्शी जी, आज तुम्हारे पास क्या काम है ?

शमशेरसिंह ने मुन्शी जी को उत्तर देने का मौका न दिया और कहा—कचहरी में तो आज कुछ काम है नहीं।

मुन्शी जी—आज देवीगंज जाना है।

शमशेरसिंह—क्यों ?

मुन्शी जी—काम तो कई एक हैं, लेकिन वे कभी भी किये जा सकते हैं।

शमशेरसिंह ने धीरे-धीरे कहा—देवीगंज के काम आज न भी होंगे तो कुछ हानि नहीं। उनको कभी भी किया जा सकता है।

मुन्शी जी—तो फिर आज क्या काम होगा?

शमशेरसिंह—आज?

मुन्शी जी—जी!

शमशेरसिंह—आज तुम बंगाली मुहाल में उसका पता लगाओ।

मुन्शी जी ने कुछ उत्तर न दिया।

शमशेरसिंह—पता लगाकर हमें पूरी रिपोर्ट बताओ।

मुन्शी जी—किस किस बात की?

शमशेरसिंह—उसके सम्बन्ध में, जितनी बातें सम्भव हो सकती हैं।

मुन्शी जी—जैसे?

शमशेरसिंह—जैसे कि वे दोनों कौन हैं, उनके घर में कौन-कौन हैं और कितने दिनों से वे वहाँ रहती हैं?

मुंशी जी चुपचाप बैठे रहे। शमशेरसिंह के दिल में उस तरुणी की स्मृति बार-बार उठ रही थी। वे सोचने लगे—किसी प्रकार उससे मुलाक़ात करना है। कल उसने कोई बात नहीं कही। उसने किसी बात का उत्तर भी नहीं दिया, फिर भी यदि एक-दो बार मुलाक़ात हो सकी तो सभी बातें होंगी। कुछ थोड़ी-सी हैरानी हो सकती है। उसको देखने से जिन बातों का पता चलता है, उनसे निराशा नहीं होती। उनकी परिस्थिति मालूम होने पर बाकी बातों में अनुमान लगाये जा सकते हैं। किसी स्त्री को बस में करना कठिन नहीं होता, मिलने-जुलने का मौक़ा मिलना चाहिए। आगे तो सभी-कुछ हो ही जाता है।

कुछ देर तक चुप रह कर शमशेरसिंह ने कहा—मुंशी जी, इस मामले में तुम्हारी हिम्मत की परीक्षा लेना है।

मुंशी जी—मेरी परीक्षा ?

शमशेरसिंह—हाँ, तुम्हारी परीक्षा।

'लेकिन यदि कामयाबी न हुई तो'—मुंशी जी ने कहा।

'तो तुम्हारा नाम हम बदल देंगे'—शमशेरसिंह ने जवाब दिया।

मुंशी जी हँसने लगे। शमशेरसिंह भी मुस्करा रहे थे। हँसते-हँसते मुंशी जी ने कहा—एक ही बात की नाकामयाबी पर आप इतनी बड़ी सजा देंगे ?

शमशेरसिंह—यह कोई मामूली बात है ?

मुंशी जी—नहीं, मामूली बात तो नहीं है।

शमशेरसिंह—तो फिर ?

मुंशी जी—नाम बदलने की बात आपने क्यों सोच डाली ?

शमशेरसिंह ने मुस्करा कर कहा—कामयाबी न होने पर यह बात साबित होगी कि तुम्हारा नाम हिम्मतसिंह गलत रखा गया है।

जोर के साथ हँसकर, मुंशी जी ने कहा—तो फिर क्या नाम रखेंगे ?

शमशेरसिंह—तुम्हारा नाम हिम्मतसिंह बदल कर कमहिम्मतसिंह रखेंगे।

मुंशी जी और भी जोर के साथ हँस पड़े। शमशेरसिंह भी मुस्करा रहे थे। कुछ देर तक हँसने के बाद मुंशी जी ने कहा—और यदि कामयाबी हुई तो ?

शमशेरसिंह ने हँसकर कहा—कामयाबी होने पर ?

मुंशी जी—हाँ सरकार !

शमशेरसिंह—तुमको इनाम देंगे।

मुंशी जी—क्या इनाम ?

शमशेरसिंह—यह आज नहीं कहा जा सकता ।

मुंशी जी फिर हँसने लगे । शमशेरसिंह ने सिगरेट-केस से सिगरेट निकाल कर जलाया और उसे पीते हुए कहा—मुंशी जी, तुम अब जाओ ।

मुंशी जी—तो मैं देवीगंज न जाऊँ ?

शमशेरसिंह—न ।

मुंशी जी वहाँ से उठकर कमरे से बाहर आये और अपने जूते पहन कर सिर की टोपी सम्हालते हुए घर से बहर चले गये ।

मुन्शी जी के चले जाने पर शमशेरसिंह आराम के साथ लेट गये और मन-ही-मन सोचने लगे—वह युवती या तो अविवाहित है अथवा विधवा है । उसके कुछ न बोलने पर भी इतना तो हम समझ ही सके थे । विवाहित युवती या स्त्री के लक्षण ही और होते हैं । अविवाहित अवस्था में हाथों-पैरों और आँखों में जो चंचलता होती है, विवाह हो जाने पर वह सब उड़ जाती है । छोटेपन में किसी लड़की के विधवा हो जाने पर भी उसकी अवस्था पहले की-सी हो जाती है । चारपाई पर लेटे हुए शमशेरसिंह बहुत देर तक उस युवती के संबंध में तरह-तरह की बातें सोचते रहे ।

तीसरा परिच्छेद

नन्हे पटवारी, चतुरी और उसकी बूढ़ी सास को लिए हुए जब शमशेरसिंह के मकान पहुँचे तो देखा, शमशेरसिंह मकान में नहीं हैं। वहाँ पर मुंशी हिम्मतसिंह मौजूद थे, जो घर के नौकर के साथ बातें कर रहे थे।

नन्हे अपने साथ की दोनों स्त्रियों के साथ वहाँ बैठे ही थे, इतने में मुंशी जी ने पूछा—लाला जी, आज कैसे कानपुर आये ?

मुंशी जी की बात का उत्तर देते हुए नन्हे ने कहा—आपके मालिम के पास हम लोग आये हैं।

मुंशी जी—अच्छी बात।

नन्हे—क्या नम्बरदार हैं नहीं ?

मुंशी जी—वे कहीं शहर में निकल गये हैं।

नन्हे—कब गये थे ?

मुंशी जी—हम जब मकान आये हैं, तब वे यहाँ न थे।

नन्हे—आप से भेंट नहीं हुई ?

मुंशी जी—इस समय लौटने पर हमसे, उनसे भेंट नहीं हुई।

नन्हे ने फिर पूछा—तो आपके अनुमान से वे कब तक आ जायँगे ?

मुन्शी जी—उनके आने का कोई अनुमान नहीं है। लेकिन आप बैठिए, सम्भव है, कुछ देर में आ जायँ।

नन्हे—लेकिन निश्चय नहीं ?

मुन्शी जी—हाँ, निश्चय नहीं है।

नन्हे चुप हो गये। मुन्शी जी भी चुप होकर चतुरी की ओर देखने लगे। सब को चुप देखकर चतुरी ने कहा—मुंशी जी, मैं अपने मामले के संबंध में नम्बरदार के पास आयी हूँ। नन्हे लाला को भी मैं ही लिवा लाई हूँ।

नन्हे—हाँ मुंशी जी, आप जानते हैं कि हमें एक घण्टे की भी फ़ुरसत नहीं है। लेकिन इनके बहुत आग्रह करने पर हम साथ में चले आये हैं।

चतुरी देवीगंज की रहनेवाली एक विधवा स्त्री है। उसकी अवस्था छब्बीस वर्ष से अधिक नहीं है। शमशेरसिंह ने चतुरी के विरुद्ध एक नालिश की थी। उसकी डिगरी हो चुकी है। चतुरी उसी का निपटारा करना चाहती है।

मुंशी जी के चुप होने पर चतुरी ने कहा—मुंशी जी, मैं एक विधवा स्त्री हूँ।

मुंशी जी—हाँ, ठीक है।

मुंशी जी की बात समाप्त होते-होते नन्हे ने कहा—मुंशी जी, इनके मामले में आप क्या चाहते हैं ?

मुंशी जी ने चतुरी की ओर देखा और कहा—किस मामले में ?

चतुरी– मुंशी जी, मेरा एक ही मामला है ?

मुंशी जी—तुम्हारा तो एक ही मामला है, लेकिन हमारे तो सैकड़ों मामले हैं।

नन्हें ने कहा—इनका वही मामला है, जिसमें नम्बरदार ने इन पर नालिश की थी। और उसकी डिगरी हो गयी है।

मुंशी जी—हाँ, ठीक है। हमको अब याद आगया।

चतुरी—अब आपको याद आगया?

मुंशी जी—हाँ याद आगया।

चतुरी चुप हो गयी। कुछ रुककर मुंशी जी ने कहा—तो उसमें तुम क्या चाहती हो?

चतुरी—उस डिगरी का रुपया देकर मैं निपटारा करना चाहती हूँ।

मुंशी जी—ठीक है।

नन्हे—ठीक कैसे है?

मुंशी जी—क्यों?

नन्हे—चतुरी ने यह तो कहा कि मैं रुपया देना चाहती हूँ, लेकिन कितना रुपया देना चाहती हैं, यह बात इन्होंने आपको नहीं बतायी और आपने पूछी भी नहीं।

मुंशी जी ने हँसकर कहा—मैं ऐसा प्रश्न क्यों करता।

नन्हें—क्यों?

मुंशी जी—इसलिए कि नम्बरदार की इन पर डिगरी है। और यह उसका रुपया देना चाहती हैं। तो अब पूछने का कोई प्रश्न ही नहीं है।

चतुरी ने उतावली के साथ कहा—मुंशी जी, आप को सब मालूम है। मेरे आदमी ने नम्बरदार से कुल सत्तर रुपये लिए थे। लेकिन नम्बरदार ने कागज दो-सौ रुपये का लिखाया था। यह बात पहले हम

लोगों को मालूम नहीं थी। लेकिन बाद में गाँव के सभी आदमियों को यह मालूम होगया था और उसी समय मुझे भी मालूम हुआ।

मेरे आदमी के मर जाने पर भी नम्बरदार ने उसके सम्बन्ध में हम लोगों से कुछ नहीं कहा।

चतुरी कुछ रुकी। मुंशी जी ने कहा—फिर क्या हुआ?

चतुरी—हुआ यह कि नम्बरदार ने आप लोगों से उन रुपये की नालिश करवा दी।

मुंशी जी—फिर?

चतुरी—उस नालिश में मैंने जवाब लगाया था। वकीलों ने मुझ से कहा था कि तुम्हारे ऊपर इतने रुपयों की डिगरी नहीं हो सकती।

नन्हे ने बिगड़ कर चतुरी से कहा—तुम इतनी बड़ी कथा क्यों कहती हो!

चतुरी—तो!

नन्हे—तुम अपनी मुख्य बात कहो।

चतुरी ने कहा—हाँ, ठीक है।

चतुरी ने मुंशी जी की ओर देखा और कहा—मुन्शी जी, आपको भी यह बात मालूम होगी कि नम्बरदार ने रुपये सत्तर दिये थे। और दो सौ रुपये का कागज लिखवाया था।

मुन्शी जी—देखो, हम नम्बरदार के नौकर हैं; उनके कारिन्दा हैं। हर हालत में हम उन्हीं-सी कहेंगे। इसलिए यहाँ पर तुमसे हम चाहे जो कुछ कहें, लेकिन नम्बरदार के सामने और कचहरी में हम उनके विरुद्ध कुछ नहीं कह सकते।

नन्हें ने कहा—देखिए मुन्शी जी, यही बात हम भी इनसे कहते हैं। बात यह है कि नम्बरदार हमारे यहाँ के ज़मीदार हैं। हमारा उनका रोज़ का काम है। इसलिए हम भी उनके विरुद्ध नहीं चल

सकते। हाँ, इतना हो सकता है कि तुम अनाथ विधवा हो, तुम्हारी तरफ़ से, हम नम्बरदार से और मुन्शी जी से भी प्रार्थना कर सकते हैं। क्यों मुन्शी जी ?

मुन्शी जी—हाँ, बात तो ठीक है।

चतुरी ने दुखित होकर कहा—आप लोग यदि मेरा साथ न देंगे तो मेरे गुज़र के लिए जो तीन-चार बीघे ज़मीन है, वह सब नम्बरदार की इस डिगरी में चली जायगी।

चतुरी ने इतना कहकर अपनी धोती से अपने नेत्रों का जल पोंछा और फिर कहा—जब मैंने इस नालिश का जवाब लगाया था, तो मुन्शी जी आपने भी, नम्बरदार ने और दूसरे कई आदमियों ने भी मुझे समझाया था कि तुम किसी बात की चिन्ता न करो। नम्बरदार की डिगरी हो जाने दो, वे ऐसे आदमी नहीं हैं, जो तुम्हारे साथ बेइ-मानी करें। डिगरी हो जाने के बाद भी जो कुछ रुपया तुम अदा करोगी, नम्बरदार उतना रुपया लेकर तुमको उऋण कर देंगे।

मुन्शी जी—यह सब सही है, मैं यह नहीं कहता कि तुम्हारी कोई बात झूठ है। लेकिन मैं उनका नौकर हूँ। उनके विरुद्ध मैं चल नहीं सकता। तुम्हारे कहने पर मैं भी उनसे कहूँगा।

चतुरी की बूढ़ी सास ने कहा—लेकिन नम्बरदार ने अगर न माना तो ?

मुन्शी जी—तो फिर तुम्हारा क्या जोर है ?

बुढ़िया—जब जोर था, तब हम लोगों ने आपके ऊपर विश्वास किया। अब तो भगवान् पर जोर है। हम दो अनाथ हैं, आधा सेर आटे का कोई आसरा नहीं है।

नन्हें ने कहा—मुन्शी जी, यह बात तो सही है।

मुन्शी जी चुपचाप सुन रहे थे। उन्होंने कुछ उत्तर न दिया। नन्हे ने फिर कहा—मुन्शी जी, इन लोगों के लिए कुछ आप से मदद मिलनी चाहिए।

मुन्शी जी—हमारी हालत आप समझ सकते हैं।

नन्हे—हाँ, यह ठीक है।

मुन्शी जी—हमारा ख़्याल है कि इन लोगों के कहने पर नम्बदार कुछ रहम करेंगे।

नन्हे—यही हमारा मतलब है।

चतुरी ने अपनी आँखों के आँसुओं को पोंछते हुए कहा—हम दोनों अनाथों ने आप लोगों की बातों का विश्वास किया था।

मुंशी जी—हम लोग कोई तुमसे बाहर नहीं हैं। नम्बरदार से बातें करो, घबराने की जरूरत नहीं है।

नन्हे और चतुरी ने बहुत देर तक शमशेरसिंह के आने का रास्ता देखा, लेकिन उनके न आने पर नन्हे उन्हें लेकर वहाँ से चल दिए और चलते समय मुंशी जी से कहा—कि हम लोग कल सबेरे नम्बरदार के पास आवेंगे।

चतुरी और उसकी सास को लेकर नन्हे वहाँ से चले गये।

नन्हे के चले जाने पर नौकर ने कहा—मुंशी जी, क्या ये बातें सही हैं?

मुंशी जी—सही तो हैं।

नौकर—लेकिन!

मुंशी जी—लेकिन नम्बरदार का मानना बहुत कठिन है।

नौकर ने लम्बी साँस लेकर कहा—नम्बरदार बड़े आदमी हैं। उनको ऐसा न करना चाहिए।

मुंशी जी—लेकिन इसके लिए उनको कौन समझा सकता है !

नौकर—कोई नहीं।

मुन्शी जी चुप हो रहे। नौकर ने भी उसके बाद कुछ न कहा।

चौथा परिच्छेद

शमशेरसिंह सबेरे जब सोकर उठे, तो घड़ी में आठ बज चुके थे। रात में वे बारह बजे के बाद लौटे थे। घर आने पर भी दो बजे के पहले उनको नींद नहीं आई। इसीलिए सबेरे उठने में कुछ देर हो गयी। प्रायः रोज़ही वे रात को देर में सोते हैं और सवेरे देर में ही सोकर उठते हैं। यह उनका रोज़ का नियम है।

सोकर उठने पर शमशेरसिंह ने नौकर को बुलाकर कहा—दिलदार !

दिलदार—हां सरकार !

शमशेरसिंह—सन्दूक़ से सिगरेट निकाल कर हमारे सिगरेट केस में भरो।

दिलदार सिगरेट-केस लेकर भीतर गया, उसने सन्दूक खोला और सिगरेट निकालकर जब वह भर चुका तो उसने सिगरेट-केस को लेकर शमशेरसिंह की चारपाई पर रख दिया।

शमशेरसिंह ने सिगरेट जलाने के लिए दियासलाई जलायी। एक, दो, तीन और चार सींकें जला चुकने पर उन्होंने नौकर से कहा—दिलदार !

जी !

अरे ! इस दियासलाई को जलाना।

दिलदार ने शमशेरसिंह के हाथ से दियासलाई ले ली, और एक-एक करके उसमें की कई सींकें जला डालीं, लेकिन दियासलाई न जली। यह देखकर नौकर ने कहा—सरकार, यह दियासलाई खराब हो गयी है।

शमशेरसिंह—ऐं !

दिलदार—दियासलाई सील गयी है।

शमशेरसिंह—तो !

दिलदार—यह न जलेगी।

शमशेरसिंह—लेकिन यह तो अभी कल ही हमने खरीदी है।

दिलदार—सरकार, बरसात के दिन हैं। यह सरदी खा गयी है।

शमशेरसिंह—अच्छा तो दूसरी ले आओ।

दिलदार पैसे लेकर बाहर गया और दियासलाई लाकर शमशेरसिंह को देदी। वे उसे जलाकर सिगरेट पीने लगे। दिलदार वहाँ से हटकर कुछ काम करने लगा।

सिगरेट पीते-पीते शमशेरसिंह ने नौकर से कहा—दिलदार !

जी !

कल क्या शाम को मुन्शीजी नहीं आये थे ?

आये थे सरकार !

फिर ?

मुन्शीजी आये थे और उनके बाद देवीगंज से नन्हे लाला पटवारी भी आये थे।

शमशेरसिंह ने अँगड़ाई लेते हुए कहा—नन्हे लाला ?

दिलदार—हाँ सरकार !

शमशेरसिंह—और ?

दिलदार—उनके साथ चतुरी भी थीं।

शमशेरसिंह—अच्छा!

दिलदार चुप हो रहा। शमशेरसिंह सिगरेट पी रहे थे, उसका धुंआ मुंह से निकालते हुए उन्होंने कहा—नन्हे लाला यह तमाशा लेकर आये थे!

दिलदार—हाँ सरकार!

उस समय मुन्शीजी भी थे!

दिलदार—जी हाँ!

शमशेरसिंह ने कुछ रुककर कहा—फिर क्या बातें होती रहीं!

दिलदार—मैं तो सरकार, अपना काम कर रहा था।

शमशेरसिंह—कुछ तो तुमने सुना होगा!

दिलदार—मैंने इतना जाना था कि चतुरी के ऊपर जो आपकी डिगरी हो गयी है, उसी के लिए वे आयी हैं।

शमशेरसिंह—अच्छा!

दिलदार चुप था। शमशेरसिंह ने फिर कहा—डिगरी के लिए चतुरी आयी थीं?

दिलदार—हाँ सरकार!

तो वे क्या कहती थीं!

और बातें मैंने अधिक नहीं सुनी।

आखिर जो कुछ सुना है।

दिलदार—सरकार, वे नन्हे और मुन्शीजी से बातें करती रहीं थीं।

अच्छा!

दिलदार—जी हाँ।

शमशेरसिंह ने चारपाई पर उठकर बैठते हुए कहा—यह कार्यवाही सब नन्हे की है।

दिलदार चुप था। शमशेरसिंह ने फिर कहा—इन पटवारियों का कोई विश्वास नहीं है।

दिलदार ने इस बात को सुना लेकिन कुछ उत्तर न दिया। कुछ देर तक शांत रहकर शमशेरसिंह ने फिर कहा—चतुरी बड़ी चतुर है। जवानी की उम्र है। अब लाला को बेवकूफ बनाये है।

दिलदार ने कहा—लेकिन सरकार, नन्हे आपको बहुत डरते हैं।

'बहुत डरते हैं ?'—शमशेरसिंह ने कहा।

दिलदार—हाँ सरकार।

शमशेरसिंह—कैसे जाना ?

दिलदार—चतुरी से वे कह रहे थे कि हम नम्बरदार से कुछ कह नहीं सकते, वे जमींदार हैं, मालिक हैं।

शमशेरसिंह ने हँसकर कहा—अच्छा !

दिलदार चुप हो रहा। शमशेरसिंह ने फिर कहा—अभी तुम इन पटवारियों को नहीं जानते। इनकी चालों को समझना कठिन होता है।

दिलदार अब भी चुप था। शमशेरसिंह ने फिर कहा—ये लोग दोमुहाँ साँप होते हैं।

दिलदार को हँसी आगयी। उसने कहा—हाँ सरकार, यह तो ठीक है।

इसी समय किसी ने 'मुन्शी जी' कहकर पुकारा। आवाज सुनते ही दिलदार ने पूछा—कौन हैं ?

चतुरी और उसकी सास को लिये हुए नन्हे लाला चले आ रहे थे। निकट पहुँचकर लाला ने शमशेरसिंह को जैराम जी कहा।

नन्हे की ओर देखते हुए शमशेरसिंह ने कहा—कहिए लाला जी !

बिछी हुई चटाई पर नन्हे बैठ गये। चतुरी और उसकी सास भी उसी पर एक किनारे बैठीं। नन्हे ने कहा—नम्बरदार, चतुरी आपके पास आयी है।

शमशेरसिंह—हमारे पास !

नन्हे—जी हाँ।

शमशेरसिंह—बड़ी कृपा है।

नन्हे चुप हो गये। शमशेरसिंह ने चतुरी की ओर कई बार देखा; किन्तु मुँह से कुछ न कहा, नन्हे ने चतुरी से कहा—तुम्हें जो कुछ कहना हो कहो। मालिक मौजूद हैं।

चतुरी ने सिर नीचा कर लिया। शमशेरसिंह ने उसकी ओर देखा और कहा—क्या !

चतुरी की सास ने कहा—नम्बरदार, कल हम सब लोग आपके पास आयी थीं; लेकिन आप मिले नहीं।

शमशेरसिंह—यह मेरी गलती है।

नन्हे को हँसी आगयी। चतुरी की सास ने फिर कहा—आपकी गलती नहीं है। आप मालिक हैं।

शमशेरसिंह—मालिक की ही तो गलती होती है।

चतुरी ने अपनी सास से कहा—अम्मा, तुम चुप रहो।

शमशेरसिंह ने चतुरी की ओर देखा और हँसकर कहा—हाँ, तुम चुप रहो। वकील को बात करने दो।

नन्हे को फिर हँसी आगयी। शमशेरसिंह भी मुस्कराने लगे। चतुरी ने कहा—नम्बरदार, मैं अपनी व्यथा लेकर आपके पास आयी हूँ।

शमशेरसिंह—लेकिन मैं तो कोई डाक्टर नहीं।

चतुरी—लेकिन मेरे लिए आप डाक्टर ही हैं।

शमशेरसिंह—अच्छी बात है।

चतुरी—आपकी जो डिगरी हुई है, उसको हमसे अब निपटारा करा लीजिए।

कुछ सोचकर शमशेरसिंह ने कहा—इससे अच्छा और क्या होगा।

चतुरी—तो कितना रुपया हमें देना होगा?

शमशेरसिंह—क्या यह भी हमें बताना पड़ेगा?

चतुरी—और कौन बतावेगा?

शमशेरसिंह—जिसका फैसला अदालत ने किया है, उसमें किसी को बताने की क्या जरूरत है।

चतुरी—मामला जब अदालत में था, तब आपने कहा था कि अदालत से फैसला हो जाने दो, बाद में तुम जैसा कहोगी, वैसा हम कर देंगे।

शमशेरसिंह—तो तुम क्या चाहती हो?

चतुरी—हमारे चाहने की बात यह है कि हम दो अनाथें हैं, अगर आप हमारे साथ मिहरबानी करेंगे, तो मैं समझूँगी कि आपही हमको रोटी देते हैं।

शमशेरसिंह—रोटी कोई किसी को नहीं देता, रोटी देनेवाले भगवान हैं।

चतुरी—भगवान तो देते ही हैं, लेकिन कोई जरिया होता है।

शमशेरसिंह चुप हो रहे। चतुरी ने भी आगे कुछ न कहा। यह देखकर नन्हे ने कहा—तुम अपनी बात साफ-साफ कहो।

चतुरी—मेरी बात नम्बरदार सब समझते हैं।

नन्हे—तो फिर तुम्हें आने की ही क्या जरूरत थी?

शमशेरसिंह इन बातों को सुन रहे थे। चतुरी ने कहा—नम्बरदार से मुझे यही कहना है कि डिगरी में जो रुपये असली हैं उनको हमसे ले लें और हमें उऋृण कर दें।

नन्हे—हाँ, इस प्रकार कहो।

शमशेरसिंह ने कुछ उत्तर न दिया। उनको चुप देखकर चतुरी ने कहा—क्यों नम्बरदार!

शमशेरसिंह—अभी हम तुम्हारी बात को समझे नहीं हैं।

चतुरी—आपने हमसे कहा था कि हमारी डिगरी हो जाने दो, फिर जैसा कहोगी, हम कर देंगे।

शमशेरसिंह—वही तो हम तुमसे पूछ रहे हैं कि तुम चाहती क्या हो?

चतुरी ने अत्यन्त करुण होकर कहा—आपकी डिगरी का सब रुपया हमसे अदा न होगा।

शमशेरसिंह—तो फिर?

चतुरी—इसलिए जितना रुपया आपका असली है, उतना रुपया हमसे ले लीजिए।

शमशेरसिंह—अर्थात्!

चतुरी—अर्थात् जितना रुपया हमारे आदमी ने आपसे लिया था, उतना ही रुपया मैं दे सकती हूँ।

शमशेरसिंह—उन्होंने तो जो रुपये लिए थे, उसका कागज लिख दिया था।

चतुरी—कागज उतने का नहीं लिखा गया था।

शमशेरसिंह—तो फिर कितने का लिखा गया था!

चतरी—यह सभी कोई जानता है।

शमशेरसिंह—सब कोई तो जानता ही है, लेकिन तुम तो कुछ बताओ।

चतुरी—असली रुपये आपके सत्तर हैं।

शमशेरसिंह—सत्तर?

चतुरी—जी हाँ।

शमशेरसिंह—लेकिन तुमको मालूम है कि डिगरी छः सौ रुपये की हुई है?

चतुरी—हाँ मालूम है।

शमशेरसिंह—फिर वह रकम कौन देगा?

चतुरी—आपने क्या कहा था?

शमशेरसिंह—तुम्हीं बताओ।

चतुरी—क्या आपको याद नहीं है?

शमशेरसिंह—तुमको बताने में क्या कोई चोरी है?

चतुरी—आपकी नालिश पर जब मैंने जवाब लगाया था तो आपके मुन्शीजी ने और मुन्शीजी के कई आदमियों ने मुझसे कहा था कि तुम जवाब न लगाओ, नम्बरदार की डिगरी हो जाने दो, बाद में जो कुछ रुपया तुम अदा करोगी, उतने पर ही निपटारा हो जायगा। मैंने सबकी बात को मान लिया था।

शमशेरसिंह—तो तुमको उन्हीं लोगों से कहना भी चाहिए।

चतुरी—लेकिन मामला तो आपका था और मालिक तो आप हैं!

शमशेरसिंह—मालिक होने से क्या होता है।

चतुरी—फिर किससे कहा जाय?

शमशेरसिंह—जिन लोगों ने तुमसे कहा था।

चतुरी—कहा तो आपने भी था।

शमशेरसिंह—अपने काम के लिए सब कुछ कहना पड़ता है।

चतुरी—तो क्या उन बातों का अब कोई मतलब नहीं है?

शमशेरसिंह—आपस की बातों का मतलब उस समय तक होता है, जब तक अदालत के फैसले की कोई नौबत नहीं आती।

चतुरी के प्राण इन बातों से सूख रहे थे। शमशेरसिंह की बातों से उसने समझा कि इन्होंने जाल बिछाकर हमको झूठा विश्वास दिया था। ये अब सत्तर रुपये के छः सौ रुपये वसूल करना चाहते हैं। उसका हृदय घबराने लगा। उसने मन-ही-मन सोचा—हम दो अनाथों के लिए जो दो-चार बीघे जमीन है, इनकी नजर उसी पर लगी है। इनको न अपनी बात का ख्याल है और न किसी पर रहम करना चाहते हैं।

चतुरी की आँखें आँसुओं से डबडबा गयीं। उसने रोकर कहा—नम्बरदार, ऐसा करने से हम दोनों किसकी रोटी खायेंगी? जिन्दा रहने के लिए हमारे ऊपर दया करो। रुपये की अदायगी में हम दोनों जब तक जिन्दा हैं, आपके घर की मजदूरी करेंगी!

शमशेरसिंह—रुपये का मामला रुपये से ही निपटता है। इन बातों से काम नहीं चलता।

चतुरी फूट-फूटकर रोने लगी। उसने कहा—आप इतने बड़े आदमी हैं। आपको अपनी बातों का ख्याल नहीं है? अब मैं किसके पास जाकर रोऊँगी?

शमशेरसिंह—रोने से अगर रुपये चुकता होते तो रुपये न देकर सभी कर्जदार केवल रोकर ही अदा कर देते।

नन्हे बड़ी देर तक इन बातों को सुनते रहे। चतुरी ने कई बार नन्हे की ओर देखा। उसका अभिप्राय यह था कि नन्हे के कहने से शायद कुछ बातें बदलेंगी।

यह समझकर नन्हे ने शमशेरसिंह से कहा—नम्बरदार, इनकी डिगरी में यदि आप कुछ मेहरबानी कर सकें तो अच्छा है।

शमशेरसिंह—क्या ?

नन्हे—ये दोनों विधवा हैं।

शमशेरसिंह—ठीक है।

नन्हे—इनकी गुजर-बसर का और कोई जरिया भी नहीं है।

शमशेरसिंह—यह भी ठीक है।

नन्हे—इनको भगवान ने अनाथ कर दिया है। कोई इन्हें आध सेर आटा देनेवाला नहीं है।

शमशेरसिंह ने सिगरेट जलाकर उसे पीते हुए कहा—अनाथें और विधवायें लाखों की संख्या में हैं। उनका उत्तरदायित्व मेरे ऊपर नहीं हो सकता।

नन्हे—यह मेरा मतलब नहीं है।

शमशेरसिंह—तो ?

नन्हे—इनकी डिगरी में जो कुछ आप छोड़ सकें, वह आपकी मेहरबानी होगी।

शमशेरसिंह—जो कुछ आप बताइए।

नन्हे—नम्बरदार, इसके लिए मैं आपसे कुछ नहीं कह सकता।

अपने नेत्रों की त्योरियाँ चढ़ाकर शमशेरसिंह ने कहा—फिर बेकार की बातों से क्या लाभ है ?

नन्हे चुप हो गये। उन्होंने समझा कि शमशेरसिंह एक पैसे की भी रियायत करने के लिए तैयार नहीं है।

शमशेरसिंह उठकर टट्टी चले गये। और नन्हे ने चतुरी और उसकी सास को लेकर, वहाँ से लौटकर, अपने गांव का रास्ता पकड़ा।

पाँचवाँ परिच्छेद

शमशेरसिंह के मकान से नन्हे और चतुरी को गये हुए अभी बहुत देर नहीं हुई थी कि मुन्शी हिम्मतसिंह वहाँ आ गये। मुन्शी जी को देखते ही शमशेरसिंह ने कहा—मुन्शी जी !

मुन्शी जी—जी !

'आज सबेरे से ही चतुरी का यहाँ पर मेला पड़ाथा,—शमशेरसिंह ने कहा।

मुन्शी जी—क्या वे आयी थीं !

शमशेरसिंह—आयी थीं।

मुन्शी जी—अच्छा !

शमशेरसिंह—चतुरी के साथ उनकी सास भी थीं और साथ में आये थे नन्हे लाला।

मुन्शी जी—यही तीनों आदमी कल यहां पर आपके पास आये थे।

शमशेरसिंह—कल किस समय आये थे !

मुन्शी जी—कल जब आप घर से चले गये थे, उसके बाद मैं आया था। और मेरे भी कुछ देर बाद ये तीनों आदमी आये थे।

शमशेरसिंह चुप हो रहे। कुछ ठहरकर मुन्शी जी ने कहा—अच्छा आज क्या कुछ बातें उनसे हुईं ?

शमशेरसिंह—हां हुईं।

मुन्शी जी—क्या कहा चतुरी ने ?

शमशेरसिंह—चतुरी आयी थीं, हमारी डिगरी को खतम कराने के लिए।

मुन्शी जी—खतम कराने के लिए ?

शमशेरसिंह—हाँ।

मुन्शी जी—फिर ?

शमशेरसिंह—फिर क्या, हम भी उन्हें बनाते रहे।

मुन्शी जी ने हँसकर कहा—कल हमसे भी उसने कुछ बातें की थीं।

शमशेरसिंह—तुमने उससे क्या कहा था ?

मुन्शी जी—हमें तो उस पर हँसी आरही थी।

शमशेरसिंह—क्यों ?

मुन्शी जी—हमें इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि जो कुछ वे कहने के लिए आयीं थीं, उसके लिए उनकी हिम्मत कैसे पड़ी !

शमशेरसिंह ने अपने बायें कान को उँगली से खुजलाते हुए कहा—हमसे भी वे कह रही थीं कि उनकी डिगरी का असली रुपया ले लीजिए।

मुन्शी जी—असली रुपया ?

शमशेरसिंह—हाँ, असली रुपया।

मुन्शी जी—कितना ?

शमशेरसिंह—सत्तर रुपये।

मुन्शी जी ने हँसकर कहा—भला काहे को ऐसा कोई आदमी मिलेगा जो छः सौ रुपये की डिगरी छोड़कर सत्तर रुपये ले ले।

शमशेरसिंह—और कौन मिलेगा, हम जो हैं।

मुन्शी जी चुप हो रहे। शमशेरसिंह ने कुछ ठहरकर फिर कहा—इसमें मुन्शी जी, नन्हे लाला की कुछ चालबाजी मालूम पड़ती है!

मुन्शी जी—नन्हे की?

शमशेरसिंह—हाँ।

मुन्शी जी—नन्हे की चालबाजी डिगरी के संबंध में कुछ नहीं है।

शमशेरसिंह—तो?

मुन्शी जी—नन्हे असल में चतुरी के चक्कर में हैं।

शमशेरसिंह—कैसा चक्कर?

मुन्शी जी ने हँस दिया। उनके कुछ उत्तर न देने पर शमशेरसिंह ने कहा—उस चक्कर को हम समझते हैं। इसीलिए नन्हे से भी हमने रुख नहीं मिलाया।

मुन्शी जी ने हँसकर पूछा—क्या नन्हे ने भी कुछ कहा था?

शमशेरसिंह—हाँ, कहा था।

मुन्शी जी—क्या?

शमशेरसिंह—वे बार-बार कहते थे कि चतुरी की डिगरी में कुछ रियायत कर दीजिए।

मुन्शी जी—फिर आपने क्या कहा?

शमशेरसिंह—हमने ऐसा जवाब दिया कि फिर लाला जी के मुँह से बोल नहीं निकला।

मुन्शी जी—क्या आपने साफ-साफ इन्कार कर दिया?

शमशेरसिंह—बिल्कुल साफ।

मुन्शी जी चुप हो गये। चतुरी के मामले में वे अनेक प्रकार की बातें सोचने लगे। कुछ देर चुप रहकर और सोच विचारकर मुन्शी जी ने कहा—मेरी समझ में इन्कार करना ठीक नहीं हुआ।

शमशेरसिंह ने कुछ गम्भीर होकर पूछा—ठीक नहीं हुआ ?

मुन्शी जी—हाँ, ठीक नहीं हुआ।

शमशेरसिंह—क्यों ?

मुंशी जी—हम इसमें कुछ और सोचे थे।

शमशेरसिंह—क्या ?

मुन्शी जी—हमने सोचा था कि जो कुछ रुपया चतुरी दे सकती है, उसे ले लिया जाय और उसके बाद बाकी रुपया वसूल करने के लिए कोशिश की जाय।

शमशेरसिंह ने कुतूहल होकर कहा—इससे लाभ ?

मुन्शी जी कुछ सोचने लगे। इसी समय शमशेरसिंह ने फिर कहा—छः सौ रुपये की हमारी डिगरी है, और सत्तर रुपये वह देना चाहती है। इन थोड़े से रुपयों को लेने से हमारा क्या काम चलेगा ?

मुन्शी जी—सत्तर रुपये की बात चतुरी ने कही जरूर थी। लेकिन यदि ढङ्ग से काम लिया जाय तो दो-ढाई सौ रुपये देने के लिए चतुरी तैयार हो जायगी; लेकिन उसमें एक चाल चलनी पड़ेगी और वह यह कि उसे यही समझने दिया जायगा कि इतने रुपयों के बाद डिगरी खतम हो जायगी।

शमशेरसिंह बड़ी गहराई के साथ इस बात को सोच रहे थे।

मुन्शी जी ने फिर कहा—इससे एक बड़ा भारी लाभ यह होगा कि इतनी बड़ी रकम आसानी के साथ हमको मिल जायगी। बाकी रुपये डिगरी के वसूल करने के लिए उसके पास इतना सामान और छोटी-सी रियासत है, जिससे हमको कामयाबी हो जायगी।

शमशेरसिंह चुपचाप सुन रहे थे। उन्होंने कुछ उत्तर न दिया।

मुन्शी जी ने फिर कहा—यदि ऐसा हम नहीं करते तो कुल रुपया वसूल करने के लिए उसके पास जो कुछ है, काफी नहीं है। दूसरी एक बात और होगी, यदि चतुरी किसी के सिखाने में लग गयी तो हमें अपने घर से ही बहुत सा रुपया खर्च करना पड़ेगा, जिसका वसूल होना कठिन हो जायगा।

शमशेरसिंह ने एक लम्बी साँस ली और कहा—मुन्शी जी, तुम यह ठीक कहते हो, लेकिन हमने इसको सोचा नहीं था। अब तो बात बिगड़ गई। तुम्हारे न होने से यह गड़बड़ हुआ।

मुन्शी जी—गड़बड़ कुछ नहीं हुआ।

शमशेरसिंह—क्यों?

मुन्शी जी—अभी सब कुछ हो सकता है।

शमशेरसिंह—कैसे?

मुन्शी जी—इसे अभी न पूछिए।

शमशेरसिंह—लेकिन कुछ तो बताओ।

मुन्शी जी—अभी इसे आप न जानिए।

शमशेरसिंह—लेकिन हो जायगा?

मुन्शी जी—इसे हमारे ऊपर छोड़ दीजिए। सब कुछ ठीक हो जाने पर मैं आपको बताऊँगा।

शमशेरसिंह—अच्छी बात है।

छठवाँ परिच्छेद

दोपहर के बारह बज चुके हैं। आज सवेरे से ही शमशेरसिंह अपनी चारपाई पर लेटे हैं। उनकी तबीयत दो दिनों से अच्छी नहीं थी। रात से उन्हें हल्का-सा ज्वर हो गया है। सम्पूर्ण शरीर में पीड़ा है। इसीलिए वे चारपाई पर लेटे हैं।

लेटे हुए शमशेरसिंह ने एक बार नौकर को बुलाकर आवाज लगायी—दिलदार!

दिलदार—जी!

शमशेरसिंह—तुमसे चाय बनाने को कहा था!

दिलदार—सरकार, चाय बन रही है।

शमशेरसिंह—चाय बन रही है!

दिलदार—जी हाँ।

शमशेरसिंह—तुम्हारी चाय बीरबल की खिचड़ी हो गयी है!

दिलदार—नहीं सरकार, अब देर नहीं है। उतारकर रख दी है, छानकर अभी लाता हूँ।

शमशेरसिंह चुप हो गये। थोड़ी देर में दिलदार चाय लेकर आया

और चारपाई के पास लगी हुई छोटी मेज़ पर उसने चाय का प्याला रख दिया।

शमशेरसिंह उठकर चाय पीने लगे।

दिलदार चूल्हे के पास लौट गया था। चाय पीते हुए शमशेरसिंह ने कहा—दिलदार!

जी!

तुम क्या कर रहे हो?

चाय को ढककर रख रहा हूँ।

शमशेरसिंह चुप हो रहे। वे चाय पीते जाते थे और चतुरो के मामले में कुछ सोचते जाते थे। शमशेरसिंह ने फिर कहा—दिलदार!

जी!

क्या मुन्शी जी आज नहीं आये?

आये थे।

कब?

बहुत देर हुई, उस समय आप सो रहे थे।

तो फिर?

मुन्शी जी कुछ ठहरे, आपका हाल पूछा। इसके बाद वे चले गये।

शमशेरसिंह ने कुछ रुककर फिर पूछा—वे कुछ कह गये हैं?

जी हाँ।

क्या?

मुन्शी जी कह गये हैं कि हम काम से जा रहे हैं। सरकार यदि पूछें तो कह देना कि बंगाली मुहाल किसी काम से गये हैं।

शमशेरसिंह—क्या कहा? बंगाली मुहाल?

दिलदार—जी हाँ, बंगाली मुहाल।

शमशेरसिंह चुप हो गये। वे चाय पी चुके थे, प्याले को मेज पर रखकर वे फिर लेट गये। और मन-ही-मन सोचने लगे—चतुरी के सम्बन्ध में मुन्शी जी की सलाह ठीक है। हमने इस बात को सोचा न था। मुन्शी जी की सलाह से चतुरी का मामला बहुत कुछ सहज हो जाता है।

कुछ देर रुककर शमशेरसिंह ने फिर सोचा—मुन्शी हिम्मतसिंह कभी-कभी बहुत अच्छा सोचते हैं। ज़मींदारी में सभी प्रकार सोचना पड़ता है। सीधा तैरने से काम नहीं चलता।

"चतुरी के मामले की तरह यदि मुन्शी जी बंगाली मुहाल की उस युवती के सम्बन्ध में भी बुद्धि से काम लें तो काम बहुत कुछ बन सकता है। अभी तो उसका पता भी नहीं है। न घर ही मालूम है। मुन्शी जी गये तो हैं। वे और भी एक-दो दिन जा चुके हैं, तब तो कुछ हुआ नहीं था। देखें आज वे क्या करके लौटते हैं।"—इस प्रकार शमशेरसिंह तरह-तरह की बातें सोचते रहे।

धीरे-धीरे दोपहर ढल गयी, लगभग पाँच बजने का समय हुआ। अकेले लेटे हुए, शमशेरसिंह का जी ऊब रहा था। अचानक उन्होंने देखा, मुन्शी जी आकर उनकी चारपाई के पास खड़े होगये। वे मुस्करा रहे थे। उनको देखकर शमशेरसिंह ने कहा—मुन्शी जी!

जी!

आज लेटे-लेटे जी नहीं लगता।

मुन्शी जी ने मुस्कराते हुए कहा—जी लगने के लिए मैं सामान लेकर आया हूँ।

शमशेरसिंह को हँसी आगयी। उन्होंने कहा—तुम सामान लेकर आये हो!

मुन्शी जी—जी हाँ!

क्या कोई पेटेण्ट दवा है ?

जी हाँ, डबल पेटेण्ट दवा !

शमशेरसिंह ने हँसते हुए कहा—अच्छा, कोई ऐसा भी डाक्टर है ?

मुन्शी जी—कैसा ?

शमशेरसिंह—जो डबल पेटेण्ट दवा देता हो ?

मुन्शी जी—जी हाँ, कई दिनों की दौड़-धूप के बाद उस डाक्टर का पता लगा।

शमशेरसिंह ने घूमकर मुन्शी जी की ओर देखा और पूछा—पता लगा ?

मुन्शी जी—जी हाँ, लगा।

शमशेरसिंह—खाली पता ?

मुन्शी जी—खाली पता नहीं, सब-कुछ।

शमशेरसिंह—सब-कुछ से मतलब ?

मुन्शी जी—मतलब मैं बताऊँगा।

शमशेरसिंह ने अँगड़ाई लेकर करवट बदली और कहा—कब बताओगे ? जब हम सन्निपात में होंगे ?

मुन्शी जी—वह ऐसा डाक्टर है, जिसके सामने आते ही सन्निपात जैसी बीमारियाँ कोसों दूर भागती हैं।

शमशेरसिंह हँस पड़े। उन्होंने आँखें बंद करके एक बार उस युवती का स्मरण किया और फिर कहा—मुन्शी जी !

मुन्शी जी—जी !

शमशेरसिंह—हाँ, तो तुम अपनी कथा कहो।

थोड़ी दूर पर रखी हुई कुरसी को घसीटकर उस पर बैठते हुए मुन्शी जी ने कहा—आपकी तबियत कैसी है ?

शमशेरसिंह ने मुस्कराकर कहा—बहुत खराब, तुम जल्दी सुनाओ।

मुन्शी जी ने कुछ सोचकर कहना आरम्भ किया—कई दिन बंगाली मुहाल में चक्कर काटे, लेकिन कुछ पता न चलता था। पता चले कैसे, कुछ नाम मालूम हो, तो किसी से पूछा जाय, इसलिए वहाँ पर बार-बार घूमने के सिवा और कोई उपाय न था।

शमशेरसिंह—फिर ?

मुन्शी जी—आज सबेरे आठ-नौ बजे के लगभग मैं फिर गया। जाने के पहले सोचा था, कि आज बिना पता लगाये मैं लौटूँगा नहीं।

शमशेरसिंह मुन्शी जी की ओर देख रहे थे, उन्होंने कहा—अच्छा ?

मुन्शी जी—आज घर से निकलते ही बहुत अच्छा शकुन हुआ।

शमशेरसिंह—शकुन हुआ ?

मुन्शी जी—जी हाँ, शकुन।

शमशेरसिंह हँस पड़े। मुन्शी जी भी हँसने लगे। कुछ देर में मुन्शी जी ने फिर कहा—बहुत अच्छा शकुन हुआ। घर से निकलकर गली पार करते ही जैसे ही मैं सड़क पर पहुँचा, एक गाय बछड़े को दूध पिला रही थी। यह देखकर तबीयत खुश हो गयी। मैंने सोचा, आज सफलता ज़रूर मिलेगी।

शमशेरसिंह—अच्छा फिर ?

मुन्शी जी—आज जब मैं बंगाली मुहाल में पहुँचा और थोड़ी ही दूर चला था कि इतने में एक दरवाजे पर देखा, एक गुजराती बुढ़िया खड़ी थी और उसके पास ही एक जवान लड़का। मैंने दूर से देखा, समझ लिया, यही दोनों हैं।

शमशेरसिंह—यह कैसे समझा ?

मुन्शी जी—आपने जितनी बातें बतायीं थीं, सब मुझे याद थीं।

शमशेरसिंह—फिर क्या हुआ ?

मुन्शी जी—मैंने कुछ सोचकर तय किया कि इनसे कुछ बात करना चाहिए, धीरे-धीरे उनके पास गया और बुढ़िया से पूछा—माता, यहाँ पर कोई मकान किराये के लिए तो नहीं खाली है ?

उसके उत्तर देने के पहले ही, उस युवती ने मुझसे पूछा—आप कैसा मकान चाहते हैं ?

उसके प्रश्न को सुनकर मैं प्रसन्न हुआ और बड़ी नम्रता के साथ मैंने उत्तर दिया—घर-गृहस्थों के रहने के योग्य।

युवती—आप अकेले हैं ?

मैंने कहा—जी नहीं, बाल-बच्चेदार हूँ।

यह कहकर मैं चुप हो गया। युवती भी चुप थी। इसी बीच में बुढ़िया ने कहा—भैया, इसी मकान का ऊपर का हिस्सा खाली है। मकान छोटा है, लेकिन हमारे घर में कोई मर्द नहीं है, इसीलिए किसी भलेमानस को ही देना चाहती हूँ।

उसकी बात सुनकर मैंने कहा—माता, आप किसी बात का विचार न करें। मैं बाल-बच्चेदार हूँ। अपने बाल-बच्चे और दूसरे के बराबर होते हैं।

बुढ़िया—हाँ भैया, यही मेरा मतलब है। तुम भले आदमी जान पड़ते हो, इसलिए तुमको देने में मुझे कुछ इनकार नहीं है।

यह सुनते ही मुझे और भी प्रसन्नता हुई, मैंने एकबार उस युवती की ओर देखा और पूछा—तो क्या माता, मुझे अपना मकान अभी दिखा दोगी ?

बुढ़िया ने कहा—हाँ भैया, चलो देख लो—युवती भीतर चली

गई, उसके पीछे बुढ़िया और उसके बाद मैं चला। ऊपर जाकर देखा, एक पक्का कमरा था जो पुराना था, लेकिन बना अच्छा था। कुल मकान छोटा होने पर भी, साफ सुथरा था। मकान के नीचे के भाग में पानी का नल था। टट्टी कुल एक ही थी। मकान देखकर हम लोग ऊपर से नीचे आगये और बुढ़िया से मैंने पूछा—माता, इसका किराया कितना होगा ?

उसने कहा—किराया इसका आठ रुपये है, लेकिन तुम भले आदमी हो, तुम्हें मैं सात रुपये में ही दे दूँगी।

मैंने मकान तय कर लिया और किराये में मैंने पाँच रुपये का एक नोट उस बुढ़िया के हाथ में दे दिया। इससे बुढ़िया बहुत प्रसन्न हुई। उसने जब जाना कि मैं ठाकुर हूँ, तो वह और भी बहुत प्रसन्न हुई। वह ठाकुरों को राजपूत कहती है। उसने कहा—राजपूत तो बड़ी हिम्मतवाले होते हैं।

पूछने पर मालूम हुआ कि वह युवती, उसी बुढ़िया की लड़की है, वह विधवा है, मैंने उसके विधवा होने पर बहुत रंज किया। सभी बातें वह लड़की सुनती रही। उस लड़की का नाम बुढ़िया ने किशोरी बताया।

मुन्शी जी की बातों को सुनकर शमशेरसिंह ने एक गहरी साँस ली और कहा—मुन्शी जी, तुम काम तो बहुत कर आये। अब मुझे बुखार नहीं है। उस मकान में तुम कब से रहोगे ?

मुन्शी जी ने कहा—उस मकान में !

शमशेरसिंह—हाँ।

मुंशी जी—यह तो मेरे ऊपर है, चलते हुए किशोरी ने पूछा था—आप कब से इस मकान में आवेंगे।

शमशेरसिंह—फिर तुमने क्या कहा था !

मुंशी जी—मैंने कहा था कि बहुत जल्दी।

शमशेरसिंह चुप हो गये। उनको चुप देखकर, मुंशी जी ने फिर कहा—उस मकान में जाना अब मेरे हाथ में है। किराये में मैंने पाँच रुपये भी जमा कर दिये हैं।

शमशेरसिंह ने हँसकर कहा—और भलेमानस भी साबित हो चुके हो?

मुन्शी जी ने मुस्कराते हुए कहा— मैं कुछ भूल गया, नहीं तो कह देता कि माताराम, मैं तो कुछ कम भलामानस हूँ लेकिन मेरे मालिक अधिक भलेमानस हैं, जिनके लिए मैं यह जासूसी कर रहा हूँ।

मुन्शी जी की यह बात सुनकर शमशेरसिंह खिलखिलाकर हँस पड़े। मुंशी जी भी हँसने लगे। बड़ी देर तक किसी ने कुछ न कहा।

कुछ देर तक चुपचाप लेटे रहने पर शमशेरसिंह ने कहा—मुंशी जी!

मुंशी जी ने कहा—जी!

शमशेरसिंह—तो अब किशोरी के दर्शन कब होंगे?

मुन्शी जी—जब आपकी इच्छा होगी।

शमशेरसिंह—हम तो भूखे बंगाली हैं।

मुन्शी जी—और किशोरी भी बंगाली महाल में है!

शमशेरसिंह फिर हँस पड़े। मुंशी जी ने कुछ देर चुप रहकर कहा—सरकार, किशोरी की आपसे मैं क्या तारीफ करूँ!

शमशेरसिंह—वास्तव में वह सहस्रों सुन्दरियों में एक है! इसमें सन्देह नहीं।

मुन्शी जी—लेकिन सरकार, एक बात और है। वह बहुत सीधी और शिष्ट स्वभाव की है।

शमशेरसिंह—यह सब तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

मुंशी जी—मैं जैसा आपसे कह रहा हूँ। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

शमशेरसिंह ने फिर एकबार गहरी सांस ली और मन-ही-मन कहा—"भगवान, तुमने बड़ी हमारी सहायता की। नहीं तो किशोरी के पता का कोई विश्वास न था।"

इसी समय मुन्शी जी ने कहा—किशोरी ही नहीं, गुजराती सीधे और विश्वासी होते ही हैं।

शमशेरसिंह ने इस बात का समर्थन करते हुए कहा—सीधे होते हैं?

मुन्शी जी—अब आपको कानपुर में किसी प्रकार का कष्ट न हुआ करेगा।

शमशेरसिंह—हमें?

मुंशी जी—जी हाँ, आपको।

शमशेरसिंह—क्यों?

मुंशी जी—किशोरी आपकी सेवा किया करेगी।

शमशेरसिंह जोर के साथ हँस पड़े, मुंशी जी भी हँस रहे थे, शमशेरसिंह ने कहा—मुंशी जी, ऐसे हमारे भाग्य कहाँ हैं।

मुंशी जी—मेरी बात मानिए।

शमशेरसिंह—कैसे विश्वास हो?

मुंशी जी—अधिक देर नहीं है।

शमशेरसिंह ने हँसकर, दूसरी ओर को करवट बदली और चुप हो रहे। मुंशी जी की बात का उन्होंने कुछ उत्तर न दिया।

सातवाँ परिच्छेद

कानपुर से चतुरी के लौट आने पर देवीगंज में लोगों में यह बात फैल गयी कि शमशेरसिंह ने चतुरी को बेवकूफ बना दिया। लोगों के पूछने पर चतुरी ने जो बातें बतायीं, उनसे वहाँ के स्त्री-पुरुष तरह-तरह की बातें करने लगे।

देवीगंज के प्रायः सभी लोग इस बात को जानते थे कि चतुरी के आदमी ने शमशेरसिंह से सत्तर रुपये कर्ज में लिए थे और शमशेरसिंह ने उन रुपयों के बदले में उनसे दो सौ रुपये का क़ागज़ लिखवाया था। इस क़ागज़ के लिखते समय शमशेरसिंह ने समझा दिया था कि हम दो सौ रुपये वसूल करने के लिए नहीं लिखा रहे, बल्कि इसलिए लिखा रहे हैं कि जिसमें हमको सत्तर रुपये वसूल करने में परेशानी न हो और अदालत में नालिश न करनी पड़े।

चतुरी के आदमी की मृत्यु कुछ दिनों के बाद हो गयी। मरने के पहले ही उसने एक बार फिर उस कागज़ को बदला था और रुपये न अदा कर सकने की हालत में, ब्याज-पर-ब्याज लगाकर चार सौ रुपये का क़ागज़ दूसरी बार लिखा गया था। इसके डेढ़ वर्ष बाद उसकी मृत्यु हो गयी थी।

शमशेरसिंह ने उस रुपये की अदायगी में चतुरी को नोटिस दिया था, किन्तु चतुरी के रुपये न अदा करने पर उन्होंने पूरे रुपयों की नालिश कर दी थी। चतुरी ने लोगों से सलाह लेकर उसका जवाब लगाया था, लेकिन शमशेरसिंह ने उसको समझा-बुझाकर उस पर छः सौ रुपये की नालिश करवा दी थी।

देवीगंज के प्रायः सभी आदमी इन सभी बातों से परिचित थे। चतुरी के कानपुर आने और असफल होकर लौटने पर वहाँ के लोगों ने तरह-तरह की आलोचनायें कीं।

किसी ने कहा—शमशेरसिंह का नाम ही शमशेरसिंह नहीं है, उनका हृदय और मस्तिष्क भी शमशेरसिंह है। चतुरी उनको जानती न थीं। वे समझती थीं कि उनके रोने पर शमशेरसिंह की शमशेर मक्खन बन जायगी।

चतुरी के मामले की आलोचना करते हुए किसी ने कहा—ज़मींदार और बड़े आदमी दया करने लगें तो उनकी ज़मींदारी और सम्पत्ति न जाने कहाँ चली जाय। जो लोग जमींदारों और पैसेवालों की बातों पर इसलिए विश्वास करते हैं कि बड़े आदमी हैं, जो कहेंगे, वही करेंगे, भयंकर भूल करते हैं। और उनकी दशा वैसी ही होती है, जैसी चतुरी की हुई।

कुछ स्त्रियों और पुरुषों में इस मामले पर बातें होतीं—चतुरी के पास जो थोड़ी-सी जमीन है, उसको लेकर ही शमशेरसिंह चुप न होंगे, बल्कि अपना एक-एक पैसा वसूल करने के लिए वे चतुरी से न जाने किसकी मजदूरी करवावेंगे। जमींदारों को न समझने से यही परिणाम निकलता है।

देवीगंज के एक-एक घर में इस प्रकार की बातें होतीं, लेकिन चतुरी के मुंह पर कोई भी शमशेरसिंह की निन्दा न करता।

चतुरी रोज एक-न-एक उपाय सोचती और दूसरों के पास जाकर कुछ रास्ता निकालने की चेष्टा करती; परन्तु उसे कोई मार्ग न मिलता।

इसी बीच में चतुरी को मालूम हुआ कि मुन्शी हिम्मतसिंह कानपुर से आये हैं, वह मुन्शी जी के पास गयी। मुन्शी जी अपने डेरे में बैठे हुए थे। उनके पास जाकर, जैसे ही वह बैठी मुन्शी जी ने पूछा—तुमसे क्या नम्बरदार से मुलाकात हुई थी?

हाँ, मुंशी जी।

फिर क्या हुआ?

कुछ नहीं।

क्यों?

नम्बरदार के मन की बात।

मुन्शी जी ने टकटकी लगाकर चतुरी की ओर देखा। उनकी आँखों ने चतुरी को अनेक प्रकार समझने की कोशिश की। उनके हृदय में अनेक भावनायें उठीं। चतुरी के शरीर के ढलते हुए यौवन ने मुन्शी जी के नेत्रों में एकबार प्रलोभन की भावना उत्पन्न कर दी।

मुन्शी जी ने हँसकर कहा—अच्छा! लेकिन हमें कुछ मालूम नहीं हुआ।

चतुरी—हाँ, फिर आपसे भेंट नहीं हुई।

मुन्शी जी—तुमको हमसे मिलना चाहिए था।

चतुरी—मैं आपसे मिल तो चुकी थी।

मुन्शी जी—कब?

चतुरी—नम्बरदार के मकान पर पहले आप ही से बातें हुईं थीं।

मुंशी जी—हाँ, हुई थीं।

मुंशी जी कहकर चुप हो गये। उन्होंने आस-पास देखा, और फिर चतुरी से कहा—हम तुमसे साफ-साफ बतावें?

चतुरी—हाँ, बताइए।

मुंशी जी—लेकिन हमारी बात मानोगी?

चतुरी—मुन्शी जी, आप कैसी बातें करते हैं। मैं आपका जितना विश्वास करती हूँ, मेरा दिल जानता है।

यह कहकर चतुरी ने अपनी आँखों का पानी पोंछा, उसने अपने नेत्र नीचे कर लिये। मुंशी जी उसकी ओर देख रहे थे। सम्पूर्ण शरीर पर एकबार दृष्टि डालकर मुंशी जी ने फिर उसके मन की ओर देखा और कहा—चतुरी, तुम रंज न करो। तुम्हें देखकर हमें कितनी दया आती है, इसे हम बता नहीं सकते। केवल परमात्मा गवाही है।

अपनी ग़रीबी और मुसीबत में सहानुभूति की इन बातों को सुनकर चतुरी का हृदय उमड़ पड़ा। उसके नेत्रों से अनेक आँसू टपक-टपककर ज़मीन पर गिरे। उसने अपनी आँखों में धोती का आञ्चल लगाकर कहा—मुंशी जी, मैं अनाथ हूँ। आपकी सहायता पर ही मेरी ज़िन्दगी के दिन कट सकते हैं। और मैं क्या कहूँगी!

मुन्शी जी टकटकी लगाकर चतुरी के मुंह की ओर देख रहे थे। उसके चुप होने पर मुन्शी जी ने कहा—चतुरी, तुम मेरी बात सुनो।

चतुरी ने आँखें उठाकर, मुन्शी जी की ओर देखा, उसने मुंह से कुछ न कहा।

मुंशी जी—तुम मेरी बात मानोगी?

जी हाँ।

किसी के कहने-सुनने पर आओगी तो नहीं?

जी नहीं।

मैं जो कुछ कहूँगा, उन्हें किसी से जाहिर तो न करोगी?

जी नहीं।

तुम्हारा पक्का वादा है?

जी हाँ।

कुछ चुप होकर, और अनेक क्षण ठहरकर मुंशी जी ने चतुरी की ओर देखा और कहा—तुमने अभी हमारा मतलब समझा न होगा।

चतुरी मुन्शी जी की ओर देख रही थी। उसने कुछ उत्तर न दिया।

मुंशी जी ने फिर कहा—हम नम्बरदार के नौकर हैं, इसलिए जाहिर तौर पर हम उनका विरोध न करेंगे।

चतुरी ने सन्तोष के साथ कहा—जी हाँ।

मुन्शी जी—लेकिन, हम ऐसा करेंगे कि थोड़े से रुपये देकर तुम उऋण हो जाओ।

चतुरी—बस मुन्शी जी, मैं यही चाहती हूँ। असली रुपये के अलावा वे मुझसे कुछ और ले लें और डिगरी का निपटारा कर दें।

मुन्शी जी—हम तुम्हारी बात को समझ गये।

चतुरी चुप थी। मुन्शी जी ने फिर कहा—तुम एक बात को याद रखना।

चतुरी—क्या ?

मुन्शी जी—हम सब के सामने कुछ भी कहें, तुम उसका ख्याल न करना।

चतुरी—हाँ ठीक है।

मुन्शी जी—लेकिन हम-तुम जब कहीं एकान्त में मिलेंगे तब हमारी तुम्हारी बातें काम की होंगी।

चतुरी—जी हाँ।

मुन्शी जी—यदि तुमने हमारे ऊपर विश्वास किया तो ईश्वर चाहेगा, नम्बरदार की डिगरी यों ही समाप्त हो जायगी।

मुन्शी जी की एक-एक बात चतुरी को अपनी ओर आकृष्ट कर रही थी। उसने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा—मुन्शी जी, मैं आपको छोड़कर दूसरे की बात न मानूंगी, ईश्वर इस बात का गवाही है।

कुछ देर चुप रहकर मुन्शी जी ने फिर कहा—तुम एक बात और करना।

चतुरी—क्या?

मुन्शी जी—हमारी और तुम्हारी बातें गुप्त रूप से होंगी।

चतुरी—जी हाँ।

मुन्शी जी—समझ लिया?

चतुरी—जी हाँ।

कुछ रुककर मुन्शी जी ने कहा—कानपुर जाने पर थोड़ी सी बात बिगड़ गयी है।

चतुरी—मुझसे?

मुंशी जी—हाँ, तुमसे।

चतुरी—क्या?

मुंशी जी—हमारी और तुम्हारी यदि ये बातें पहले हो गयी होतीं तो बहुत अच्छा होता।

चतुरी ने इस बात को सुना, उसने कुछ उत्तर न दिया।

मुन्शी जी ने फिर कहा—अब हमको बहुत-कुछ उलट-पलट करना पड़ेगा। और किसी प्रकार इस मामले को रास्ते पर लाना पड़ेगा। लेकिन कुछ हर्ज नहीं है। मैंने तुमसे जो कुछ कह दिया, उसमें अंतर न पड़ेगा।

चतुरी को आज बहुत आश्वासन मिला। उसने कहा—अब मैं केवल आपके भरोसे हूँ।

यह कहकर चतुरी वहाँ से उठकर अपने घर चली गयी।

आठवाँ परिच्छेद

मुन्शी हिम्मतसिंह को देवीगंज आये हुए दो दिन बीत गये। यहाँ पर जो उनके काम थे, उनमें चतुरी का मामला ही विशेष था। उसके सम्बन्ध में चतुरी से जो बातें हुईं, उनसे मुन्शी जी को बहुत सन्तोष मिला। चतुरी के सम्बन्ध में जितनी बातें उन्होंने सोची थीं, बातें करने के बाद उसमें उन्हें उससे भी अधिक सफलता मिली।

मुन्शी जी दूसरे आदमियों से निपटकर जब अकेले बैठते तो वे चतुरी के सम्बन्ध में सोचते—मामला बिल्कुल अपने हाथ में है। हम जैसा चाहेंगे, चतुरी उसी प्रकार चलने के लिए तैयार है। उसके पास कोई दूसरा उपाय है भी नहीं। ऐसी दशा में उस मामले में हमें पूरी सफलता मिल सकती है।

इसी प्रकार की बातों को लेकर मुन्शी जी जिस समय मन-ही-मन कुछ सोच-विचार रहे थे, उसी समय नन्हे और पण्डित काशीप्रसाद उनके पास पहुँचे। डेरे में मुन्शी जी के पास पहुँचते ही नन्हे ने कहा—मुन्शी जी, कहिए कब तक आपका यहाँ पर मुकाम है?

मुन्शी जी—शायद एक-दो रोज़ और रहूँगा।

नन्हे—चतुरी के मामले में आपने क्या निश्चय किया?

मुन्शी जी—मेरा कोई नया निश्चय नहीं है।
नन्हे—चतुरी आप से मिली भी थीं?

मुंशी जी—हाँ मिली थीं।

नन्हे—क्या बातें हुईं?

मुन्शी जी—उन्होंने वही बातें कहीं, जिन बातों को लेकर कानपुर गयी थीं।

नन्हे—फिर?

मुन्शी जी—मैंने तो आपके सामने कानपुर में जो कुछ कहा था, वही मैंने यहाँ पर भी कहा है।

नन्हे चुप हो गये। उनको चुप देखकर मुन्शी जी ने पूछा—चतुरी के मामले में आपकी क्या राय है?

नन्हे—उसमें मेरी क्या राय हो सकती है।

मुन्शी जी क्यों?

नन्हे—इसलिए कि जमींदारों का मामला है। मेरे कहने का उनके ऊपर असर क्या?

मुन्शी जी—असर क्यों नहीं, आप पटवारी हैं।

नन्हे—मै पटवारी ज़रूर हूँ, लेकिन किसी किसान का यदि मामला होता तो मैं उसमें कुछ राय भी देता।

मुन्शी जी—और इसमें?

नन्हे—इसमें मेरी कोई राय नहीं हो सकती।

नन्हे चुप हो गये। मुन्शी जी ने भी आगे कुछ न कहा। काशीप्रसाद बड़ी देर से इन बातों को सुन रहे थे। वे शमशेरसिंह के पास उठते बैठते हैं, उनके प्रत्येक काम में काम आते हैं। नन्हे और मुन्शी जी की बात को सुनकर काशीप्रसाद ने कहा—चतुरी के मामले में दूसरा कोई कुछ नहीं कह सकता।

यह सुनकर नन्हे ने कहा—दूसरा कोई करे या न करे, आपको उसमें कुछ करना चाहिये।

काशीप्रसाद—हमें क्यों करना चाहिये?

नन्हे—कई ऐसे कारण हैं, जिनकी सबब से आपका उस मामले में कुछ कर्त्तव्य है।

कुछ सोचकर नन्हे ने कहा—मेरा कर्त्तव्य?

नन्हे—जी हाँ।

काशी प्रसाद ने पूछा—मेरा कर्त्तव्य क्यों है?

नन्हे—इसलिए कि आप नम्बरदार के पास उठते-बैठते हैं। चतुरी आपके गाँव की एक विधवा स्त्री है। इसके सिवा, नम्बरदार ने जब चतुरी पर नालिश की थी, तो आपने भी चतुरी को समझाया था कि नम्बरदार की डिगरी हो जाने दो, बाद में तुम जैसा कहोगी, वैसा हो जायगा।

इस बात को सुनकर काशीप्रसाद चुप हो रहे। नन्हे ने फिर कहा—पंडित जी, जो कुछ मैंने आपसे कहा है, मेरी समझ में ये सब सही बातें हैं।

काशीप्रसाद—सही तो हैं, लेकिन......।

नन्हे—लेकिन क्या?

काशीप्रसाद—लेकिन यह कि शमशेरसिंह बड़े आदमी हैं, उनके विरुद्ध भला कौन कह सकता है।

नन्हे—कह सकता है।

काशी प्रसाद—कौन?

नन्हे—जिसको न्याय प्रिय होगा।

काशी प्रसाद ने हँसकर कहा—न्याय-प्रिय लोगों में आप भी तो हो सकते हैं।

काशीप्रसाद की इस बात को सुनकर मुंशी जी हँस पड़े—नन्हें को भी हँसी आगयी। लेकिन काशीप्रसाद की बात का उत्तर देते हुए नन्हे ने कहा—

पंडित जी, आपकी बात तो सही है।

काशीप्रसाद—लेकिन?

नन्हे—लेकिन हममें और आपमें एक बड़ा अंतर है।

काशीप्रसाद—क्या?

नन्हे—हम एक मामूली पटवारी हैं, और पटवारी किसी बड़े ज़मींदार से अधिक कुछ नहीं कह सकता।

मुंशी हिम्मतसिंह बड़ी देर से इन बातों को सुन रहे थे। उन्होंने कहा—इस मामले में मेरी कुछ राय है।

मुंशी जी की इस बात को काशीप्रसाद और नन्हे ने सुना, लेकिन किसी ने उत्तर में कुछ न कहा।

मुंशी जी ने फिर कहा—चतुरी के मामले में अब कुछ और बात हो गयी है। जब किसी आदमी को अदालत से डिगरी मिल जाती है, तो फिर उस आदमी के लिए डिगरी का रुपया छोड़ना कठिन हो जाता है।

काशीप्रसाद—यही बात है।

मुंशी जी ने फिर कहा—चतुरी के मामले में सच्ची बात यह है कि मैं कुछ नहीं कह सकता। मैं नम्बरदार का नौकर हूँ। मेरा कार्य तो यह है कि जैसे भी हो सके, मैं मालिक का अधिक लाभ सोचूँ। रही लाला जी की बात, सो इन्होंने नम्बरदार से कुछ बातें कहीं भी, लेकिन वे सब निष्फल गयीं।

नन्हें ने तेज़ी के साथ कहा—हाँ साहब, मैंने तो कानपुर में नम्बरदार से कहा था लेकिन मानना और न मानना उनके हाथ में है।

मुंशी जी—अब रही पंडित काशीप्रसाद की बात, इनके संबंध में मैं कुछ नहीं कह सकता। यदि ये चाहें तो नंबरदार से कह सकते हैं।

काशीप्रसाद ने मुंशी जी की बात का उत्तर देते हुए कहा—मेरा कहना और न कहना—दोनों बराबर हैं।

नन्हे—क्यों?

काशीप्रसाद—इनके सम्बन्ध में पहले बात हो चुकी है, कि यदि अदालत से किसी को डिगरी मिल जाती है, तो फिर उसको छोड़ना नहीं चाहता, यह स्वाभाविक बात है।

काशीप्रसाद चुप हो रहे। मुंशी जी ने कहा—मुझे भी इसमें कुछ लेने की आशा नहीं है।

इस प्रकार मुंशी जी के पास डेरे में टहलकर नन्हे और काशीप्रसाद बहुत देर तक बातें करते रहे। और उसके बाद वे दोनों आदमी चले गये।

नन्हे और काशीप्रसाद के चले जाने पर भी मुंशी जी के सामने चतुरी के मामले की बातें बार-बार घूमती रहीं। उन्होंने मन-ही-मन कहा—

नन्हे लाला चतुरी के जो पक्षपाती हो रहे हैं, इसका रहस्य क्या है? इसमें कोई-न-कोई भेद अवश्य है। एक पटवारी किसी ग़रीब के साथ सहायता का कार्य नहीं करता। वह अपना लाभ अधिक देखता है। फिर लाला जी इतने बड़े सहायक क्यों बन रहे हैं?

नन्हे की सभी बातें मुन्शी जी को याद आने लगी। उनको सोच-सोचकर मुन्शी जी ने मन-ही मन कहा—

इस रहस्य को मैं समझने की कोशिश करूँगा। लाला जी ने चतुरी से जो लाभ उठाना चाहा है, वह अब बड़ी दूर की बात हो गई है। चतुरी को अब वही करना पड़ेगा, जिसको मैं चाहूँगा। मैंने उसको इतना बाँध लिया है कि वह अब एक पल भी इधर-उधर नहीं हो सकती।

नवाँ परिच्छेद

किशोरी के मकान में रहते हुए मुन्शी हिम्मतसिंह को लगभग एक महीना हो रहा है। उस छोटे-से मकान में नीचे किशोरी और उसकी माँ रहती हैं और ऊपर मुन्शी हिम्मतसिंह। ऊपर के हिस्से में, एक कमरे के सिवा खुला स्थान है। टट्टी और पाइप नीचे है।

मुन्शी जी ने अपने कमरे को खूब सजाया है। उसमें दो दरवाज़े हैं। दोनों में चिकें पड़ी हैं। कमरे की चारों दीवारों में शीशेदार कुछ तस्वीरें लगी हुई हैं। कमरे के भीतर दो चारपाइयाँ बिछी रहती हैं, जिसमें एक बहुत अच्छा पलँग है।

इतने दिनों में मुन्शी हिम्मतसिंह और किशोरी तथा उनकी माँ के बीच बहुत-कुछ मेल-जोल हो गया है। किशोरी अपनी माँ को 'माँ' कहती है। मुन्शी जी भी उनको 'माँ' कहकर ही पुकारते हैं। देहातों से आने वाली अनेक वस्तुएँ मुन्शी जी लाकर किशोरी की माँ को दिया करते हैं। मुन्शी जी के इन व्यवहारों से वे बहुत खुश होती हैं।

आज जिस समय मुन्शी जी अपने कमरे में लेटे हुये थे, किशोरी की माँ सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आ गयीं उनके पीछे किशोरी भी थी। किशोरी और उसकी माँ को देखकर मुन्शी जी ने कहा—

माँ, आइए !

मुन्शी जी उठकर अपनी चारपाई पर बैठ गये। किशोरी और किशोरी की माँ दूसरी चारपाई पर बैठीं और उसके बाद किशोरी की माँ ने पूछा—

मुन्शी जी, आपके भोजन हो गये ?

मुन्शी जी—जी हाँ हो गये।

किशोरी की माँ—क्या आपने भोजन बनाया था ?

मुन्शी जी—जी हाँ।

किशोरी की माँ—लेकिन हम लोगों को नहीं मालूम होता कि आप कब बना-खा लेते हैं।

मुन्शी जी ने हँसकर कहा—एक आदमी का भोजन बनाने में देर ही कितनी लगती है। अँगीठी पर पावभर आटे की रोटियाँ सेंक लीं अथवा चावल तरकारी बनाकर खा-पी लिया।

किशोरी की माँ चुप हो रहीं। किशोरी पास ही चुप-चाप बैठी थी। मुन्शी जी को चुप देखकर किशोरी की माँ ने फिर पूछा—

आप कहीं नौकर हैं ?

जी हाँ।

कहाँ पर ?

मैं एक बड़े ज़मीदार का मुख़्तार हूँ।

बड़े ज़मीदार के ?

जी हाँ।

तब तो आपको बहुत आमदनी होती होगी।

हाँ, हो ही जाती है।

वे ज़मीदार कहाँ रहते हैं ?

वे कभी कानपुर में रहते हैं और कभी अपने गाँव में।

अच्छा, उनका गाँव कहा है ?

देवीगंज ही उनके रहने का गाँव है। वहीं उनकी ज़मींदारी भी है। देवीगंज के सिवा उनकी ज़मींदारी और भी कई गाँव में है।

किशोरी की माँ ने प्रसन्न होकर कहा—तब तो वे बड़े आदमी हैं।

मुन्शी जी—हाँ बड़े आदमी हैं।

किशोरी की माँ ने आगे कुछ न कहा। उनको चुप देखकर मुन्शी जी ने पूछा—

माँ, किशोरी का व्याह कहाँ हुआ था ?

लखनऊ में !

मुन्शी जी—तो क्या किशोरी की ससुराल में अब कोई नहीं है ?

किशोरी की माँ—व्याह के एक साल बाद ही किशोरी विधवा हो गयी थी। किशोरी को ससुराल में रहने का छः महीने से अधिक अवसर नहीं मिला।

यह सुनकर मुन्शी जी ने बहुत दुख प्रगट किया। किशोरी की माँ ने फिर कहा—किशोरी की सास है, इसके देवर हैं और ससुर भी हैं। लेकिन सास से किशोरी की नहीं पटती, इसलिये किशोरी की तबीयत वहाँ लगती भी नहीं है।

मुन्शी जी—फिर कैसे लगेगी ?

किशोरी की माँ—यहाँ जब से किशोरी के बाबू मर गये। तब से मैं भी अकेली हो गयी। अकेले के कारण मेरी भी तबीयत यहाँ न लगती थी। इसीलिए किशोरी को मैं अपने ही साथ रखा करती हूँ।

मुन्शी जी—यह बहुत अच्छा है। इससे आपकी भी तबीयत लगी रहेगी और किशोरी का भी जी बहलेगा।

कुछ देर चुप रहकर किशोरी की माँ ने पूछा—तो मुन्शी जी, आप ज़मींदार साहब का काम क्या करते हैं ?

मुन्शी जी—काम ?

हाँ, काम।

मुंशी जी ने हँसकर कहा—कोई बड़ा काम नहीं है। गाँव में रियाया का प्रबन्ध देखना पड़ता है। और जो मुकदमे चलते हैं, कचहरी में उनको देखना-सुनना पड़ता है।

किशोरी बड़ी देर से इन बातों को सुन रही थी। उसने धीरे से अपनी माँ से कुछ कहा जिसको सुनने के बाद भी मुन्शी जी समझ न सके। इसलिए उन्होंने किशोरी की माँ से पूछा—

माँ, किशोरी ने क्या कहा?

माँ—किशोरी पगली है।

मुन्शी जी—नहीं, कोई बात है?

माँ ने किशोरी की ओर देखा और मुन्शी जी की बात का उत्तर देते हुए कहा—

किशोरी का मतलब यह है कि आपके ज़मींदार साहब से हम लोगों का एक काम निकलेगा।

मुंशी जी कैसा काम?

माँ—इसी हिस्से में जिसमें आप रहते हैं, पहले एक और कि‍रायेदार रहते थे, वे लगभग दो वर्ष इसमें रहे, लेकिन अंत में पाँच महीने का किराया लेकर वे इस मकान से चले गये।

मुन्शी जी—उनसे वह किराया वसूल नहीं हुआ?

माँ—एक पैसा भी नहीं।

मुन्शी जी—अच्छा फिर?

माँ—वे अब पास हीं इटावा बाज़ार में रहते हैं। मैंने अनेक बार उनके पास जाकर किराया माँगा; लेकिन उन्होंने कुछ नहीं दिया।

मुन्शी जी—वे करते क्या हैं?

किसी बैंक में नौकर हैं। अस्सी रुपये वेतन पाते हैं।

मुन्शी जी—किराये में कितने रुपये बाकी हैं ?

माँ—पैंतीस रुपये।

मुन्शी जी ने मुस्कराकर किशोरी की ओर देखा और कहा—माँ, यदि आपके ये पैंतीस रुपये वसूल हो जायँ तो आप क्या खिलायेंगी ?

किशोरी और उसकी माँ, दोनों प्रसन्न हो उठीं। माँ ने कहा—मुन्शी जी, जो आपकी तबीयत हो, मैं तो पूरे रुपयों से निराश हो चुकी हूँ।

मुन्शी जी ने हँसते हुए किशोरी से कहा—किशोरी जी, अच्छा आप बताइए।

किशोरी—क्या ?

मुन्शी जी—इन पैंतीस रुपयों के वसूल हो जाने पर आप क्या खर्च करेंगी ?

किशोरी—जो कुछ आप कहेंगे।

मुन्शी जी हँस पड़े। माँ ने हँसकर कहा—ठीक है।

मुन्शी जी ने माँ की बात का समर्थन करते हुये कहा—किशोरी ने बहुत ठीक उत्तर दिया है।

किशोरी कभी माँ की ओर और कभी मुन्शी जी की ओर देखती थी। मुन्शी जी ने मुस्कराते हुए कहा—अच्छा, खर्च करने का निर्णय मेरे ऊपर रहा ?

माँ—रहा।

किशोरी ने मुस्कराकर कहा—जी हाँ, रहा।

मुन्शी जी ने हँसकर कहा—आप लोगों ने जो अधिकार मुझे दिया है, उसको आप बदलेंगे नहीं।

किशोरी—जी नहीं।

माँ—बदलने की ज़रूरत नहीं है।

मुंशी जी मुस्कुरा रहे थे। उन्होंने कहा—अच्छा इन पैंतीस रुपयों के वसूल करने का काम मेरे ऊपर रहा। और जिस दिन इन रुपयों को वसूल करके मैं आप लोगों को दूँगा। उसी दिन वसूल करने की खुशी में मैं अपने पास से पाँच रुपये की मिठाई मैं बाटूँगा।

किशोरी ने हँसकर कहा—यह कैसे हो सकता है?

माँ—ऐसा उचित नहीं है।

मुंशी जी ने हँसकर कहा—देखिए, अभी आप लोगों ने जिस बात का निर्णय किया था, उसे आप लोग भूल गयीं।

माँ—क्या?

मुंशी जी—अभी आप लोगों ने निश्चय किया था कि, खर्च करने का निश्चय करना मेरे अधिकार में रहेगा।

किशोरी ने कहा—लेकिन उसका यह मतलब नहीं होता।

मुंशी जी—अब आप उसका मतलब न निकालकर जो बात निश्चय हो गयी है, उसी को रहने दीजिए।

माँ ने कहा—मुंशी जी, यह ठीक न रहेगा।

मुंशी जी—माँ, अब इसको इसी प्रकार रहने दीजिए।

माँ चुप हो गयीं, किशोरी ने भी आगे कुछ न कहा। मुन्शी जी भी कुछ देर तक चुपचाप बैठे रहे। उसके बाद उन्होंने कहा—

माँ, इन रुपयों का वसूल करना आपके लिए कठिन है, लेकिन ये रुपये कैसे वसूल होंगे, यह हमसे पूछिए।

किशोरी चुपचाप सुन रही थी। माँ ने कहा—अच्छा बतलाइए!

मुन्शी जी—जिनके यहाँ मैं नौकर हूँ। वे बड़े आदमी हैं। बड़े जमींदारों के यहाँ इस प्रकार के काम मामूली समझे जाते हैं, मैं उनसे इस मामले को कहूँगा, वे बड़ी आसानी के साथ इसका प्रबन्ध करा देंगे और आप देखेंगी कि कितनी जल्दी ये रुपये वसूल हो जाते हैं।

मुन्शी जी ने हँसकर कहा—बिगड़ने का बदला उनको बहुत शीघ्र मिल जायगा।

माँ—मिल जायगा, मैं समझती हूँ।

मुन्शी जी ने कुछ उत्तर न दिया। कुछ ठहर कर माँ ने पूछा—मुन्शी जी, आपके नम्बरदार कौन बिरादरी हैं?

मुन्शी जी—ठाकुर-राजपूत!

माँ—राजपूत?

मुन्शी जी—जी हाँ।

माँ—आप भी राजपूत हैं और नम्बरदार भी राजपूत हैं?

मुन्शी जी—जी हाँ, हम दोनों ही क्षत्रिय हैं—राजपूत हैं!

माँ ने हँसकर कहा—तब तो बहुत अच्छा है!

किशोरी ने गंभीर होकर कहा—माँ, राजपूत लोग बड़े बहादुर होते हैं।

माँ—और नहीं तो क्या। किताबों में नहीं पढ़ा है कि अपने देश में पहले राजपूत ही राज्य करते थे?

किशोरी—पढ़ा है, और यह भी पढ़ा है कि उनका काम केवल युद्ध करना था।

मुंशी जी चुपचाप बैठे थे। किशोरी और उसकी माँ भी अनेक क्षण पर्यन्त चुपचाप बैठी रहीं। इसके बाद किशोरी की माँ उठकर खड़ी हो गयी और नीचे जाती हुई उन्होंने कहा—इस मामले में मैं आपका बहुत यश मानूँगी, मुन्शी जी।

मुन्शी जी—माँ, इसकी आवश्यकता नहीं है।

माँ के साथ किशोरी भी वहाँ से उठकर चली गयी।

मुन्शी हिम्मतसिंह का हृदय प्रसन्नता से गदगद हो रहा था। उन्होंने सोचा; शाम को नम्बरदार के पास जाऊँगा और आज की समस्त बातें मैं उनसे कहूँगा, जिनको सुनकर वे बहुत प्रसन्न होंगे।

माँ—कैसे ?

मुन्शी जी—इसके लिए आपको अदालत में नालिश नहीं करनी पड़ेगी, वे किसी आदमी को आपका नौकर बना देंगे। वह नौकर आप की तरफ से उन बाबू जी के पास दो-चार बार तगाज़े जायगा और इस प्रकार रुपये न वसूल होने पर एक दिन जहाँ रास्ते में उनको पकड़ा और दो-चार थप्पड़ उनके उसने लगाये, रास्ते में उनकी बेइज्जती हुई कि उनसे रुपये वसूल होगये।

मुन्शी जी की बात सुनकर किशोरी हँसने लगी और प्रसन्न होकर उसने कहा—इस प्रकार के लोग इसी तरह मानते हैं।

माँ ने कहा—हाँ, बात तो यही है।

मुन्शी जी चुप हो रहे। किशोरी की माँ ने फिर कहा—मैं स्त्री हूँ। बिना आदमियों के हूँ। मेरी सुनता ही कौन है।

मुन्शी जी—उनके सुनने में फिर देर न लगेगी।

माँ—न लगेगी।

किशोरी—फिर तो ये रुपये बहुत जल्दी वसूल हो जायँगे, इन लोगों की यही दवा है!

मुन्शी जी ने किशोरी की ओर देखा, उसका सुगोल मुख-मण्डल प्रसन्नता के कारण और भी सुन्दर हो रहा था।

मुंशी जी ने कहा—माँ, अब आप उन रुपयों को कुछ दिनों के लिए और भूल जाइए। आप देखिएगा कि कितनी जल्दी यह खोये हुये रुपये आपके पास आते हैं।

माँ—मैं समझती हूँ। आपने जो रास्ता सोचा है; उसमें देर न लगेगी।

मुन्शी जी चुपचाप सुन रहे थे। माँ ने फिर कहा—अभी तो वे मेरी कुछ बात समझते ही न थे। कभी-कभी वे मुझसे बिगड़ भी जाते थे।

मुंशी जी चारपाई पर लेट गये। लेटे हुए उन्होंने अपनी दृष्टि कमरे की दीवारों पर डाली। जो तस्वीरें दीवारों पर लगी हैं, एक एक करके वे सब को देख गये और फिर मन ही मन सोचने लगे—

एक दिन था, जब नम्बरदार किशोरी के अकस्मात् दर्शनों को स्वप्न की तरह सोचा करते थे और उसके संबंध में अनेक प्रकार की बातें गढ़ा करते थे। लेकिन वह दिन आ गया है जब वे किशोरी के इस मकान में आवेंगे और इस कमरे में बैठकर किशोरी के साथ अनेक प्रकार की बातें करेंगे।

इस प्रकार की न जाने कितनी बातों को सोचकर मुंशी जी बहुत प्रसन्न हो रहे थे। उनके मुँह से अकस्मात् निकल गया—

जो बात ईश्वर को मंजूर होती है। उसका रास्ता अपने आप बनता जाता है।

दसवाँ परिच्छेद

रात के आठ बजे हैं। शमशेरसिंह अपने चारपाई पर बैठे हुए सिगरेट पी रहे हैं। उनके पास ही एक कुरसी पर मुंशी हिम्मतसिंह बैठे उनसे बातें कर रहे हैं। शमशेरसिंह ने सिगरेट का धुआँ ऊपर की ओर फेंकते हुए कहा—

उस मकान में जैसा निश्चय हुआ था, लगभग सभी सामान पहुँच गया है?

मुंशी जी ने कुछ सोचकर कहा—जी हाँ।

शमशेरसिंह—गुजरातियों में परदा तो होता नहीं!

मुंशी जी—बिल्कुल नहीं।

शमशेरसिंह—इस अवस्था में तुमको उनसे बातचीत करने का अधिक अवसर मिलना चाहिए।

मुंशी जी ने हँसकर कहा—जितनी आवश्यकता थी उससे भी अधिक अवसर मिल चुका है।

शमशेरसिंह—ऐसा ?

मुंशी जी—जी हाँ।

शमशेरसिंह—लेकिन तुमने हमको कुछ बताया नहीं है।

मुन्शी जी—बताने की आवश्यकता नहीं है।

शमशेरसिंह—क्यों ?

मुंशी जी—इसलिए कि मैंने क्षेत्र तैयार कर दिया है। और ऐसा वातावरण बन गया है, जिसमें आपका जाना और आना प्रायः नित्य ही होता रहेगा।

शमशेरसिंह ने कुछ सोचा और कहा—कैसा वातावरण ?

मुंशी जी—जिस प्रकार के वातावरण की बात आपने कभी सोची भी न होगी।

शमशेरसिंह—ऐसा वातावरण ?

मुंशी जी—जी हाँ।

शमशेरसिंह—लेकिन तुम क्या जान सकते हो कि हमने किस वातावरण की कल्पना कर रखी है ?

मुंशी जी—और सरकार, आप नहीं जान सकते कि वहाँ पर मैंने किस प्रकार की परिस्थिति उत्पन्न कर रखी है !

शमशेरसिंह ने चौंककर मुंशी जी की ओर देखा, और पूछा—कैसी परिस्थिति ?

मुंशी जी—उस परिस्थिति का अभिप्राय यह है कि मेरा कार्य वहाँ का समाप्त हो चुका है।

शमशेरसिंह--अब आगे ?

मुंशी जी—अब आगे आपका कार्य है !

मुंशी जी की इस बात को सुनकर शमशेरसिंह को हँसी आगयी। उन्होंने मुस्कराकर कहा—जान न पहचान, बड़े मियाँ सलाम।

मुंशी जी ने हँसकर कहा—जान पहचान का कार्य भी आपका समाप्त हो चुका है।

हृदय में बढ़ते हुए विस्मय के साथ शमशेरसिंह ने कहा—मुंशी जी, तुम पहेली बुझाने की-सी बातें न करो।

मुंशी जी—सरकार, पहेली नहीं है।

शमशेरसिंह—तो और क्या ?

मुन्शी जी ने गम्भीर होकर कहा—इतने थोड़े दिनों में मेरे साथ उनका सम्पर्क बहुत बढ़ गया है। मेरे पास किशोरी और उसकी माँ का उठना बैठना प्रायः नित्य होता है।

शमशेरसिंह शांतपूर्वक सुन रहे थे। मुन्शी जी ने फिर कहा—

मैं उन दोनों की आँखों में अब कोई नया आदमी नहीं रहा। बिना किसी संकोच के वे दोनों ही बातें करती हैं और मैं उनसे करता हूँ।

शमशेरसिंह अब भी बातें सुन रहे थे। उन्होंने कुछ भी न कहा। मुन्शी जी ने फिर कहा—

आपके वहाँ न जाने पर भी आपकी बहुत-सी बातें उन दोनों से हो चुकी हैं।

शमशेरसिंह ने लम्बी साँस लेकर पूछा—किस प्रकार ?

मुन्शी जी—एक दिन था जब आप किशोरी से मिलने की कल्पना करते थे और एक दिन आज है जब, किशोरी और उसकी माँ, आप से मिलने के लिए उत्सुक होती है।

शमशेरसिंह—लेकिन यह सब किस प्रकार हुआ !

मुन्शी जी—सूर्य का प्रकाश किसी को बताना नहीं पड़ता।

शमशेरसिंह—अर्थात् ?

मुन्शी जी—मैं जिसका नौकर हूँ, उसको बिना जाने-समझे भी, किशोरी के मकान में, आज उसकी बातें होती हैं।

'तुम्हारी पहेली कुछ समझ में नहीं आयी।'—सिगरेट को जलाकर पीते हुए शमशेरसिंह ने कहा।

मुन्शी जी—मेरी अनेक बातों के साथ-साथ आपकी बहुत-सी बातें वहाँ पर हो चुकी हैं। इस प्रकार आपका जो परिचय हुआ है, उस पर किशोरी ने अपनी एक इच्छा प्रगट की है।

शमशेरसिंह—क्या !

मुन्शी जी—बहुत संक्षेप में बात यह है कि उनका एक किरायेदार पैंतिस रुपये लेकर चला गया है। और वह इटावा बाज़ार में रहता है। उससे उनके रुपये वसूल करा देना है।

शमशेरसिंह ने गम्भीरता पूर्वक कहा—और कुछ !

मुन्शी जी—और बातें सब आपके सामने होंगी।

शमशेरसिंह—कब ?

मुन्शी जी—जब आपकी इच्छा हो।

मुंशी जी चुप हो रहे। शमशेरसिंह के मन में अनेक प्रकार की बातें उठने लगीं। उन्होंने कुछ सोचकर कहा—

कल सबेरे दस बजे वहाँ चलेंगे, तुम हमारे साथ चलना।

इस समय घड़ी में ग्यारह बज रहे थे। शमशेरसिंह की इच्छा को जानकर मुंशी जी वहाँ से उठकर दूसरे कमरे में सोने चले गये और शमशेरसिंह लेटकर किशोरी के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की बातें सोचने लगे।

मुंशी जी के चले जाने के बाद भी शमशेरसिंह को बहुत देर तक नींद न आयी।

दसवां परिच्छेद

अपने मकान में, उज्वल वस्त्रों से सुसज्जित शमशेरसिंह को किशोरी की माँ ने देखा, लंकलाट का बना हुआ चूड़ीदार पाजामा और बन्द गले का सुन्दर कोट पहने थे। सिरपर जयपुरी नमूने का साफ़ा बाँधे थे। बायें हाथ में मूल्यवान रिस्टवाच पहने थे और कोट की ऊपरी जेब में फाउण्टेन पेन लगाये थे। मुंशी हिम्मतसिंह के साथ आकर शमशेरसिंह किशोरी के मकान में ऊपरी हिस्से के कमरे में बड़े पलंग पर बैठ गये थे। उसी चारपाई के एक कोने में मुंशी जी भी बैठे थे और शमशेरसिंह की ओर बार-बार देख कर उनके मूल्य और महत्व को बढ़ा रहे थे।

बैठने के कुछ ही देर बाद, शमशेरसिंह ने किशोरी की माँ से कहा—बाईजी, हमारे मुंशी जी ने आप लोगों की बड़ी-बड़ी प्रशंसायें मुझसे कीं, इसलिये मैंने सोचा कि चलकर मैं भी आप लोगों से मुलाकात करूँ।

बाई जी ने बड़ी नम्रता के साथ कहा—नम्बरदार, आप बड़े आदमी हैं। मेरा यह सौभाग्य है कि आप को मैंने अपने मकान में देखा और आपके दर्शन किये।

शमशेरसिंह ने इसका कुछ उत्तर न दिया। वे चुपचाप बैठे थे और गम्भीर हो रहे थे। बाई जी ने फिर कहा—

नम्बरदार, आप आज इस छोटे से मकान में आये हैं, लेकिन आप के सम्बन्ध में मुंशी जी के साथ हम लोग अकसर बातें करती रही हैं।

किशोरी अपनी माँ की बगल में बैठी थी और इन बातों को सुन रही थी। शमशेर सिंह ने बाई जी की इस बात को सुना और किशोरी के मुख पर दृष्टि डालते हुए कहा—मेरे ऊपर आप लोगों की यह कृपा थी।

बाई जी—कृपा नहीं थी, पुराने लोग कह गये हैं कि जब अच्छे दिन आने को होते हैं तब किसी बड़े आदमी से मुलाकात होती है।

शमशेर सिंह ने सुनकर इसका कुछ उत्तर न दिया। इसी बीच में मुंशी जी ने मुस्कराते हुए कहा—सरकार, यह बात सही है।

शमशेर सिंह—क्या?

मुंशी जी—जैसा कि मैंने माँ के मुंह से अभी सुना।

शमशेरसिंह—क्या सुना?

मुंशी जी—यही कि आपके संबन्ध में हम लोगों में प्रायः बातें हुआ करती थीं।

शमशेर सिंह ने एक गम्भीर मुस्कराहट के साथ कहा—माँ की यह बात सही है और मैंने जो कुछ अब तक कहा है वह सब एक तरफ से गलत है, यही न?

मुंशी जी हंस पड़े, बाई जी और किशोरी को भी हँसी आ गयी।

मुंशी जी ने कहा—नहीं सरकार, ऐसी बात नहीं है।

शमशेर सिंह—तो फिर और क्या बात है?

मुंशी जी ने अभी कुछ इसका उत्तर न दिया था, तब तक शमशेर सिंह ने फिर कहा—कोई भी कुछ करे, लेकिन अपने आपको मैं समझता हूँ।

बाई जी ने शमशेरसिंह की ओर देखा और पूछा-क्या बात?

शमशेरसिंह—जिसके मुँह पर ही उसकी बातों को झूठ साबित किया जाता हो और जिसकी बातों को सभी लोग हँसी में उड़ा देते हो, उसको क्या समझा जाय, यह मैं जानता हूँ।

शमशेरसिंह की इस बात को सुनकर सभी लोग जोर से हँस पड़े। शमशेर सिंह ने किशोरी की ओर देखा, हँसते हुए उसने अपना मुंह अपनी धोती के एक कोने से ढक लिया।

शमशेरसिंह ने फिर कहा—आप लोग यों तो मेरी बड़ी प्रशंसा कर रहे हैं, लेकिन मैं तो यह समझता हूँ कि जिसको देख कर यदि कोई अपना मुह कपड़े से ढक ले तो उस आदमी को अपने लिये क्या समझना चाहिये ?

फिर सबके सब हँसने लगे। किसोरी ने अपना मुंह और भी ढक लिया। मुंशीजी ने कहा—

सरकार में यह आदत है कि जो कोई रोता हो, उसको भी हँसा देंगे।

बाई जी-इसमें सन्देह नहीं, आप बहुत हँसाते हैं। बड़े आदमियों के यही स्वभाव होते हैं।

अपनी बात कह कर बाई जी चुप हो गईं। मुन्शी जी भी शान्त थे। शमशेरसिंह ने किशोरी की ओर देखा, उसने अपना मुंह खोल दिया था और मुंह पर से कपड़ा हटा लिया था।

सब को चुप चाप देख कर बाई जी ने फिर कहा—मुन्शी जी, आपने नम्बरदार की सभी बातें तो बताई थीं, लेकिन यह बात नहीं बताई थी।

मुंशी जी—क्या—कौन बात ?

बाई जी—यही कि सबसे पहले वे तो हँसाने में ही बहुत प्रसिद्ध हैं।

मुंशी जी—मैं मैं अपना तारीफ नहीं करना चाहता, लेकिन आप देखेंगी कि इस प्रकार अनेक बातें आप में ऐसी हैं, जो सभी में न मिलेंगी,

शमशेरसिंह ने तेजी के साथ कहा—जी हाँ, जैसे चोरी, डाका, बेईमानी, दगाबाज़ी, बटमारी सेंध आदि-आदि।

मुंशी जी हँस पड़े बाई जी भी हँसने लगीं, किशोरी ने अपनी हँसी को मुँह के भीतर ही रोक कर कुछ गम्भीर हो उठी। उसने शमशेरसिंह को देखा और क्षण भर में उसने अपने नेत्रों को घुमाकर दूसरी ओर देखने लगी।

कुछ देर चुप रहकर शमशेरसिंह ने कहा—बाई जी, कुछ मेरी आदत ऐसी जरूर है, जैसा कि आपने ख्याल किया। मुझे चुप्पापन और कुछ रोनी-सी हालत पसन्द नहीं है।

बाई जी—यह तो ठीक है।

शमशेरसिंह—बात यह है कि आदमी की जिन्दगी में सच पूछिए तो दुख और मुसीबतें बहुत हैं। लेकिन भगवान ने मनुष्य को ऐसी बुद्धि दी है कि वह यदि चाहे तो लाख मुसीबतों में भी प्रसन्न रह सकता है।

बाई जी—हाँ, ठीक है।

शमशेरसिंह ने फिर कहा—यदि मनुष्य ऐसा नहीं करता तो फिर वह कभी सुखी रह नहीं सकता।

बाई जी—जी हाँ।

शमशेरसिंह—गरीब लोग समझते हैं कि हम बहुत दुःखी हैं, लेकिन अमीर उनसे भी अधिक दुःखी हुआ करते हैं। उनके ऊपर चिन्ताओं के इतने बोझ लदे रहते हैं कि वे कभी सुख से बैठ नहीं सकते।

बाई जी—यही बात है।

कुछ रुककर शमशेरसिंह ने फिर कहा—मैं आप ही को देखता हूँ, आप की यह लड़की किशोरी है। भगवान ने इतनी छोटी अवस्था में

ही इसको बिगाड़ दिया है। अब यदि आप इसके दुःख को अपने सामने चौबीस घण्टे रखें तो मैं समझता हूं कि न तो आप का ही जीवन कट सकता है और न किशोरी को ही कुछ आराम मिल सकता है।

शमशेरसिंह की बातों को सुनकर बाई जी का हृदय शोकाकुल हो गया। उन्होंने अपनी तबियत को बदलकर कहा—

अपनी हालत मैं आपको क्या बताऊँ। किशोरी के एक भाई था, बड़ी अवस्था में वह न रहा। उसी के दुख से उसके पिता की मृत्यु हुई। इन दोनों दुःख के पहाड़ों ने मुझे पीस डाला।

शमशेरसिंह—इसमें क्या सन्देह।

बाई जी ने फिर कहा—भगवान को फिर भी शान्ति न मिली। मैं दो मुसीबतों की मारी तो थी ही, मुझपर तीसरा बज्रपात हुआ; मैंने सुना किशोरी विधवा हो गयी! मेरे सामने रोने के सिवा और कोई उपाय न था।

शमशेरसिंह ने किशोरी की ओर देखा, वह चुपचाप बैठी थी। उन्होंने कहा—भगवान की मरज़ी।

बाई जी यहाँ पर मैं अकेली थी, किशोरी के जो पत्र आते थे, उनसे मालूम होता था, कि इसकी सास से, इसकी पटती नहीं थी।

शमशेरसिंह—कुछ स्त्रियाँ दुष्ट होती ही हैं।

बाई जी—मैंने सोच विचार कर किशोरी को अपने पास बुला लिया। और इसको अपने साथ रखने लगी।

शमशेर सिंह ने किशोरी की ओर देखा। उसके स्थिर नेत्र एक ओर देखकर रह गये थे।

बाई जी ने फिर कहा—अब मेरे दूसरा कोई नहीं है, इसी लड़की को देखकर मैं अपनी तबियत को समझा लेती हूं। और किसी प्रकार अपने दिन काटती हूँ।

शमशेर सिंह—यही तो मैंने आप से कहा—आदमी सैकड़ों दुखों में सदा घिरा रहता है, यदि वह उन्हीं का ख़्याल करे तो उसके जीवन के दिन नहीं कटते। इसलिये प्रत्येक दशा में मनुष्य को प्रसन्न रहना चाहिये।

बाई जी चुपचाप बैठी थीं, उनके कुछ न बोलने पर शमशेरसिंह ने फिर कहा—संयोग से आप के साथ मेरी मुलाकात हुई। आप के दुखों की कहानी सुनकर मुझे बहुत व्यथा पहुँची है। मैं इतना ही आपसे कहना चाहता हूँ कि आप किसी बात की चिन्ता न करें। आप को जो कुछ कष्ट हो, मुझे बतावें, जहाँ तक होगा, मैं आप की सहायता करूँगा।

किशोरी ने इन बातों को सुनकर, बार-बार शमशेर सिंह की ओर देखा, बाई जी को इन बातों से बहुत शांति मिली। दुख के दिनों में सहानुभूति की बातों से ही बहुत कुछ संतोष मिलता है।

बाई जी ने कहा—आप को देखकर मुझे बहुत सुख मिला है।

शमशेरसिंह ने चुपचाप बैठकर इस बात को सुना।

बाईजी ने फिर कहा—जिस भगवान ने आपको इतना बड़ा आदमी बनाया है, उसीने आपको हृदय भी दिया है। आप गरीबों पर दया करना जानते हैं।

शमशेरसिंह ने पूछा—किशोरी के पिता जी का नाम?

बाई जी—उनका नाम था—पंडित माधव मोहन।

शमशेरसिंह—पंडित माधव मोहन!

बाई जी—जी हां।

शमशेरसिंह—अच्छा

शमशेरसिंह ने मुन्शी जी की ओर देखा और कहा—पंडित माधव मोहन जी तो हमारे परिचित आदमियों में से थे।

शमशेरसिंह ने बाई जी की ओर देखा और पूछा—वे कचहरी में काम करते थे?

बाई जी—जी हाँ।

शमशेरसिंह—ठीक है। मैं पंडित जी को खूब जानता हूँ। वे बड़े सज्जन आदमी थे। हमसे तो वे बहुत ही प्रेम करते थे। उनके मकान पर आने का हमें कभी संयोग नहीं पड़ा था। इसीलिये हम आप लोगों को नहीं जानते।

बाई जी—जी हाँ।

शमशेरसिंह—आज आप लोगों को देखकर, मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

मुन्शी जी बड़ी देर से चुपचाप बैठे थे। शमशेरसिंह के चुप होने पर उन्होंने कहा—कितना अच्छा संयोग मिला है।

शमशेरसिंह—संयोग की ही बात है।

बाई जी—जी हाँ।

मुन्शी जी कुछ सोच कर कहा—सरकार, यहाँ पर एक आदमी ने आप लोगों को बड़ा धोखा दिया है।

शमशेरसिंह—बाई जी को?

मुन्शी जी—जी हाँ।

शमशेरसिंह—क्या?

मुन्शी जी—जहाँ पर आप बैठे हैं, इसमें एक आदमी किराये पर रहता था।

शमशेरसिंह—अच्छा।

मुन्शी जी—वह इस मकान में करीब दो वर्ष रहा।

शमशेरसिंह—हाँ।

मुन्शी जी—अंत में पैंतीस रुपये किराये के लेकर वह चला गया।

शमशेरसिंह—पैंतीस रुपये लेकर कैसे ?

मुन्शी जी—पाँच महीने का किराया, उसने अदा नहीं किया।

शमशेरसिंह—बिना दिये चला गया ?

मुन्शी जी—जी हाँ।

शमशेरसिंह—फिर ?

मुन्शी जी—वह आदमी अब भी इटावा बाजार में रहता है।

शमशेरसिंह—यहीं पास ही ?

मुन्शी जी—जी हाँ।

शमशेरसिंह—अच्छा।

मुन्शी जी—उन रुपयों को वसूल करने के लिये माँ ने उससे बहुत तकाजे किये, लेकिन उससे कुछ मिला नहीं।

शमशेरसिंह ने बाई जी की ओर देखा और पूछा—कितने दिन की बात है ?

बाई जी—अभी साल भर नहीं हुआ।

किशोरी ने कहा—दस महीने में भी अभी कुछ दिन बाकी है।

शमशेरसिंह ने किशोरी की ओर देखा और कहा—अच्छा !

किशोरी—क्या वे रुपये मिल जायँगे ?

शमशेरसिंह—आप विश्वास रखिये। एक-एक कौड़ी उससे वसूल हो जायेगी।

यह सुनकर किशोरी प्रसन्न हो उठी। उसने कहा—वह बहुत दुष्ट आदमी है, उसने माँ को जाने क्या-क्या कहा है।

शमशेरसिंह ने अनेक क्षणों तक किशोरी के मुंह की ओर देखा और फिर हँस कर कहा—उसका बदला आपको मिल जायगा।

किशोरी—कैसे ?

शमशेरसिंह—यदि आप कहेंगी तो उस आदमी को बुलवाकर आप के सामने जूतों से पिटवा दूँगा।

किशोरी ने मुस्करा दिया।

शमशेरसिंह चुप हो गए। कुछ देर ठहर कर उन्होंने कहा—मुन्शी जी।

मुन्शी जी—जी।

शमशेरसिंह—हमको बैठे हुये बहुत देर हो गयी।

मुन्शी जी—आपको तो यहाँ रोज ही बैठने में देर होगी।

बाई जी ने मुस्करा कर कहा—हां, और क्या।

शमशेरसिंह उठकर खड़े होगये। अपनी जेब से उन्होंने मनीबेग निकाला और उससे दस रुपये का एक नोट निकाल कर वे किशोरी को देने लगे।

बाई जी ने कहा—नम्बरदार, इसकी क्या जरूरत है?

शमशेरसिंह—जरूरत है।

किशोरी को ओर देखकर शमशेरसिंह ने कहा—किशोरी तुम मुझे गैर समझती हो!

किशोरी—जी नहीं।

शमशेरसिंह—तो फिर इसे लेलो।

मुन्शी जी ने कहा—किशोरी जी, इसे आप ले लीजिए।

शमशेरसिंह—किशोरी मैं तुमको अपना समझ कर दे रहा हूँ।

बाई जी—अच्छा लेलो किशोरी। नम्बरदार बड़े मेहरबान आदमी हैं।

शमशेरसिंह ने कहा—किशोरी तुम जिसकी लड़की हो, वे मेरे मित्र थे। इसीलिये मैं तुमको दे रहा हूँ।

किशोरी ने नोट ले लिया। शमशेरसिंह कमरे से निकल कर जाने लगे, बाई जी और किशोरी ने उनको नमस्कार किया।

शमशेरसिंह कमरे से निकल कर चले गये।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

शमशेरसिंह नौघड़े के अपने मकान में एक चारपाई पर लेटे हैं। चारपाई मकान की छत पर कमरे के बाहर बिछी हुई है। सायंकाल के पाँच बज चुके हैं। एक घण्टा पूर्व अच्छी वृष्टि हो चुकी है। लेकिन अब पानी पड़ना बन्द हो गया है। यद्यपि बादलों ने आकाश के घेरकर दिन को रात बना रक्खा है।

धीमी-धीमी वायु चल रही है, वृष्टि हो जाने के कारण वायु और भी शीतल हो गयी है। शमशेरसिंह ने यह देखकर मन ही मन कहा—दोपहर के समय धूप थी और हवा के बन्द हो जाने के कारण इतनी अधिक गर्मी बढ़ गयी थी कि भीतर-बाहर, कहीं कल न पड़ती थी। पंखे से जो हवा मिलती थी, उसमें भी आराम न था। कुछ ही घण्टों के बाद ऐसा दृश्य बदला कि इस समय दोपहर की गरमी का कहीं पता नहीं है। इस समय की वायु में जो शीतलता है, वह पंखे की हवा में कभी सम्भव न थी।

शमशेरसिंह ने एक सिगरेट निकाल कर जलाई और उसे पीते हुए वे फिर सोचने लगे—

जीवन की परिस्थितियाँ बदलते हुये देर नहीं लगती, कुछ दिनों के पहले जब सड़क पर हमने किशोरी को देखा था, तो स्वप्न में भी ऐसी आशा न थी कि वह दिन भी आयेगा जब हम उसके निकट बैठकर प्यार और स्नेह की बातें करेंगे। किशोरी को एक बार देखकर जो उत्सुकता उत्पन्न हुई थी, उसकी पूर्ति की सम्भावना न थी। लेकिन भगवान की लीला कोई नहीं जानता। वे बड़े समर्थ हैं। बात की बात में जीवन के वातावरण को वे ऐसे बदल देते हैं; जिन्हें मनुष्य पहले कभी सोचता भी नहीं है।

इन्हीं बातों के फलस्वरूप शमशेरसिंह ने आगे सोचा—किशोरी के साथ जिस सहानुभूति का सम्बन्ध स्थापित हुआ है, उसका अंत क्या होगा, इसे कोई नहीं जानता। फिर भी अनुमान से यही जान पड़ता है कि भगवान को कुछ मंजूर है। नहीं तो किशोरी के मकान में ही रहने के लिये स्थानके मिलने का कारण क्या था! बाई जी के जीवन की परिस्थितियां इतनी अनुकूल क्यों होतीं और इतने थोड़े दिनों के भीतर ही हमारे और उनके बीच इस स्नेहपूर्ण व्यवहार की प्रतिष्ठा कैसे हो पाती!

बाई जी के संबन्ध में सोचते हुए शमशेरसिंह ने मन ही मन कहा—थोड़े दिनों पहले हम किशोरी को जितना ही दूर समझते थे, उतना ही आज हम उसे अपने निकट समझ रहे हैं। उसके सम्बन्ध में प्रत्येक बात को जितना हम कठिन और असंभव समझते थे, उतना ही अब हम सरल, सहज और सम्भव समझ रहे हैं। इन सभी बातों का अर्थ यह है, कि भगवान को कुछ मंजूर है और हमारे और किशोरी के बीच किसी ऐसे सम्बन्ध की सम्भावना है, जिसका पहले कभी सूत्र-पात न था।

इसी समय दिलदार ने आकर कहा—सरकार।

शमशेरसिंह—हाँ।

दिलदार—कल शाम को सरकार एक कोई बाबू जी आये थे।

शमशेरसिंह—बाबू जी!

दिलदार—हां सरकार।

शमशेरसिंह—कौन बाबू जी?

दिलदार—सरकार हमको नाम नहीं मालूम।

शमशेरसिंह—क्या उन्होंने अपना नाम नहीं बताया था!

दिलदार—बताया था।

शमशेरसिंह—तो फिर ?

दिलदार—नाम भूल गया है।

शमशेरसिंह—तो फिर यह क्यों कहते हो कि नाम नहीं मालूम ?

दिलदार—हाँ सरकार।

शमशेरसिंह—तुमको कहना चाहिये कि नाम भूल गया है।

दिलदार—हां सरकार।

शमशेरसिंह—क्या समझे ?

दिलदार—जो सरकार ने कहा है।

शमशेरसिंह ने बिगड़कर कहा—तुम समझे क्या ?

दिलदार ने कुछ भी उत्तर न दिया। वह चुपचाप खड़ा रहा।

शमशेरसिंह ने फिर कहा—समझे ?

दिलदार—जी हाँ।

शमशेर सिंह—क्या

दिलदार फिर चुप हो रहा। यह देखकर शमशेरसिंह ने कहा—तुम किस जिले के रहने वाले हो ?

दिलदार—आज़मगढ़ के।

शमरशेसिंह—आज़मगढ़ में क्या सभी लोग ऐसे होते हैं ?

दिलदार ने कुछ उत्तर न दिया। वह चुपचाप खड़ा रहा।

शमशेरसिंह ने कहा—दिलदार।

दिलदार—जी।

शमशेरसिंह—तुम तो बहुत मूर्ख जान पड़ते हो।

दिलदार ने फिर भी कुछ न कहा। शमशेरसिंह ने उसकी ओर देखा और पूछा—तुम्हारा नाम दिलदार किसने रखा था ?

दिलदार—सरकार, आप ही लोगों ने।

शमशेरसिंह को हँसी आगयी। उन्होंने कहा—तुम बहुत मूर्ख आदमी हो। हम वहाँ कहाँ थे जो तुम्हारा नाम रखते ?

दिलदार—सरकार, आप ही लोगों के बीच में मैं रहा हूँ।

शमशेरसिंह—अच्छा हम समझ गये।

शमशेरसिंह ने कुछ रुककर पूछा—[illegible] बनाने को कहा था ?

दिलदार—हां सरकार।

शमशेरसिंह—तो फिर ?

दिलदार—सरकार, चाय बन गई है। अँगीठी से उतार कर नीचे रख दी है। लाने जाता हूँ।

शमशेरसिंह—जाओ।

दिलदार चाय लाने चला गया। शमशेरसिंह चारपाई पर लेटे हुये चाय का रास्ता देख रहे थे। थोड़ी देर में वह चाय लेकर आ गया। शमशेरसिंह ने चाय उठाकर पीना आरम्भ किया।

शमशेरसिंह चाय पी रहे थे और दिलदार उनके सामने खड़ा था, जब वे चाय पी चुके तो उन्होंने पूछा—दिलदार

जी।

तुम अभी खड़े हो ?

जी हां।

क्यों ?

सरकार, कुछ काम है।

हम से ?

जी हां।

क्या ?

मैं घर जाना चाहता हूँ।

घर ?

हां, सरकार।

अभी क्या तुम बन में हो ?

नहीं सरकार ।

तो फिर ?

अपने घर ।

और यह किसका घर है ?

दिलदार ने कुछ भी उत्तर न दिया । वह चुपचाप खड़ा रहा । शमशेरसिंह ने फिर पूछा—

दिलदार ।

जी ।

बोलो ।

क्या सरकार ?

इस घर को तुम अपना घर नहीं समझते ।

समझता क्यों नहीं हूं ।

फिर तुम कहां जाना चाहते हो ?

सरकार, आजमगढ़ जिले में, जहां मेरे घर के सभी लोग हैं ।

शमशेरसिंह सिगरेट पी रहे थे । उन्होंने कहा—अच्छा, तुम आजमगढ़ के घर में जाना चाहते हो ?

दिलदार—हां सरकार ।

शमशेरसिंह ने कुछ ठहर कर पूछा—तुम्हारे घर पर कौन कौन है ?

दिलदार—मां, बाप, बहनें ।

शमशेरसिंह–और ?

दिलदार ने कुछ उत्तर न दिया । शमशेरसिंह ने फिर पूछा—

तुम्हारे घर में और कौन है ?

दिलदार—और स्त्री है ।

शमशेरसिंह ने हँसकर पूछा—तुम स्त्री के पास जाना चाहते हो ?
दिलदार—सरकार, सभी के पास।
शमशेरसिंह—यह झूठ बात है।
दिलदार—नहीं सरकार।
शमशेरसिंह—अच्छा, तुम्हारे घर पर यदि स्त्री न होती तो ?
दिलदार ने कुछ भी उत्तर न दिया।
शमशेरसिंह ने फिर कहा—बोलो दिलदार।
दिलदार—जी।
शमशेरसिंह—स्त्री के न होने पर भी, तुम घर अपने जाते ?
दिलदार—हाँ सरकार।
शमशेरसिंह—यह तुम झूठ कहते हो,
दिलदार ने कुछ उत्तर न दिया।
शमशेरसिंह ने कुछ देर चुप रहकर फिर पूछा— दिलदार।
दिलदार—जी।
तुम्हारी अवस्था क्या है ?
सरकार—पचीस वर्ष !
और तुम्हारी स्त्री की ?
स्त्री की अठारह साल !
जी हाँ।
तुम उसकी अवस्था कैसे जानते हो ?
सरकार, जब मेरा व्याह हुआ था, तब उसकी अवस्था पन्द्रह वर्ष की थी।
और तुम्हारी शादी के कितने दिन हुये ?
यही करीब-करीब तीन साल।
शमशेरसिंह ने आगे कुछ न कहा और उसकी ओर देखकर

मुस्करा दिया। दिलदार चुपचाप खड़ा था। कुछ ठहर कर शमशेर-सिंह ने पूछा।

दिलदार, एक बात बताओ।

क्या ?

तुमने घर जाने की बात क्यों सोची ?

सरकार, बहुत दिन हो गये।

कितने दिन ?

सरकार, चौदह महीने।

हमारे यहाँ तुमको कितने दिन हुये ?

एक साल बीस दिन।

ठीक ?

हां, सरकार।

शमशेरसिंह ने फिर सिगरेट जलाई और पीते हुये कहा—तो तुम कितने दिनों की छुट्टी लेना चाहते हो ?

दिलदार—सरकार, दो महीने की।

शमशेरसिंह—दो महीने में लौट आओगे ?

दिलदार—जी हाँ।

शमशेरसिंह ने कुछ सोचा और कहा—देखो, इसके लिये तुम मुन्शी जी से बात करना।

दिलदार ने कहा—बहुत अच्छा।

बारहवां परिच्छेद

मुन्शी हिम्मतसिंह को साथ लेकर शमशेरसिंह जब कानपुर से देबीगंज के लिये रवाना हुए थे, तब उन्होंने सोचा था कि वहां से दूसरे या तीसरे दिन लौट आवेंगे, लेकिन देबीगंज में आज उनको पांच दिन समाप्त हो रहे हैं, उनके लौटने का समय नहीं आया।

देबीगंज एक बड़ा गांव है, उसमें तीन-चार छोटे-छोटे जमींदारों को छोड़कर, शमशेरसिंह की जमींदारी है। उसके सिवा अनेक गांवों में भी उनकी पूरी सत्ता है। सदा की भांति इस बार भी उनके पास आने-जाने वालों की संख्या बराबर बनी रही। सभी लोग अपने एक-न-एक कार्य से उनके पास आते थे। और उनके साथ शमशेरसिंह को बैठ कर बातें करनी पड़ती थीं। ऐसी अवस्था में उनको खाली रहने का बहुत कम अवसर मिलता था।

कितने ही लोग आपस के झगड़े लेकर शमशेरसिंह के पास आते थे और उनको शमशेरसिंह के सामने रखकर निर्णय कराना चाहते थे, कुछ ऐसे लोग भी थे, जो केवल मिलने के अभिप्राय से आते थे। और उसके बाद लौट जाते थे।

इस प्रकार लोगों के आने-जाने से इन चार-पांच दिनों में यह हाल हुआ कि शमशेरसिंह को खाने-पीने के मामलों में भी प्रायः समय-असमय हो गया। किंतु वे इस परेशानी को इसलिये विशेष रूप से ख्याल न करते थे कि उनको अपने भी अनेक कार्य इन्हीं लोगों से निकालने पड़ते हैं।

देबीगंज में आज शमशेरसिंह को छठा दिन भी आरम्भ हो गया दोपहर तक आने-जाने वाले लोगों का क्रम चलता रहा। लगभग

दो बजे के शमशेरसिंह खाली होकर बैठे, वे भोजन कर चुके थे। मुन्शी हिम्मतसिंह ने समय पाकर उनसे कहा—

आप से कुछ बात करना है?

शमशेरसिंह—मुझसे?

मुन्शी जी—जी हाँ—

शमशेरसिंह—क्या?

मुन्शी जी—मदारी सुकुल और काशी प्रसाद में झगड़ा हो गया है।

शमशेरसिंह—अच्छा।

मुन्शी जी—आपको यह मालूम है?

शमशेरसिंह—नहीं।

मुन्शी जी—हो गया है, यहाँ पर आप के आने से पहले की बात है।

शमशेरसिंह—अच्छा।

मुन्शी जी—उसमें आप किसका पक्ष लेंगे?

शमशेरसिंह—क्या उसमें इसकी भी ज़रूरत पड़ेगी?

मुंशी जी—जी हाँ।

शमशेरसिंह—क्यों?

मुंशी जी—इसलिये कि उसमें दोनों ही आदमी आपकी सहायता चाहेंगे।

शमशेरसिंह—किस प्रकार की सहायता?

मुंशी जी—उनका मामला अदालत तक पहुँच चुका है। काशीप्रसाद आपकी गवाही अदालत में दिलाना चाहते हैं।

शमशेरसिंह—लेकिन हम तो उसके संबन्ध में कुछ जानते नहीं हैं।

मुंशी जी—तो इससे क्या, गवाही तो आप दे ही सकते हैं।

शमशेरसिंह ने कुछ सोचा और कहा—जो एक सौ रुपये हमें भेंट में दे सकेगा, अदालत में हम उसी का पक्ष समर्थन करेंगे।

मुंशी जी चुप हो रहे। उनके कुछ न बोलने पर शमशेरसिंह ने पूछा--

क्यों, तुम्हारा क्या विचार है?

मुंशी जी—जो आपका है।

शमशेरसिंह—क्या तुम से किसी ने कुछ बात की थी?

'जी हां'—मुंशी जी ने कहा।'

शमशेरसिंह—किसने?

मुंशी जी—झगड़े की बात तो मैंने देबीगञ्ज में कई लोगों के मुँह से सुनी थी।

शमशेरसिंह—कब?

मुंशी जी—इसी बार आपके साथ आने पर।

शमशेरसिंह—अच्छा।

मुंशी जी ने कुछ रुककर कहा—परसों काशी प्रसाद भी मुझे मिले थे। वे बड़ी देर तक मझसे बातें करते रहे। बहुत सी बातों में उन्होंने कहा था कि हम सरकार को गवाह के रूप में पेश करेंगे।

शमशेरसिंह—तुमने क्या कहा?

मुंशी जी—मैंने उनसे पूछा था कि तुम यह बोझ उठा सकोगे?

शमशेरसिंह—फिर?

मुंशी जी—उन्होंने कहा, था कुछ रियायत करा देना।

इस बात को सुनकर शमशेरसिंह कुछ सोचने लगे। मुंशी जी ने फिर कहा—मैंने उन्हें समझा दिया था कि सरकार जिसका पक्ष लेंगे, मुकदमें में उसी की जीत होगी, इसलिये कि मौज़े के दूसरे आदमियों पर इसका असर पड़ेगा।

शमशेरसिंह—फिर?

मुंशी जी—फिर क्या, वे तैयार फिर रहे हैं।

शमशेरसिंह ने कुछ रुककर कहा—हम एक सौ रुपये से कम न लेंगे!

शमशेरसिंह चुप हो गये। मुन्शी जी भी चुप हो रहे। कुछ देर तक दोनों आदमी चुपचाप बैठे रहे।

इसके बाद शमशेरसिंह ने देखा, मुन्शी जी मुस्करा रहे थे। यह देखकर उन्होंने पूछा—क्यों?

मुन्शी जी—कुछ नहीं।

शमशेरसिंह—कुछ तो।

मुन्शी जी—मैं कुछ सोच रहा हूं।

शमशेरसिंह—क्या?

मुन्शी जी—यदि दूसरी पार्टी ने भी आप को चाहा तो?

शमशेरसिंह ने सिगरेट जलाई और पीते हुए कहा—क्या मतलब?

मुन्शी जी—मान लीजिए काशीप्रसाद ने इतने रुपये स्वीकार कर लिये और इसके बाद दूसरी पार्टी भी आपके पास आयी तो?

शमशेरसिंह—तो देखना होगा कि दूसरे लोग कितना देते हैं।

मुन्शी जी—मेरे विचार से पहले किसी को बचन न दिया जाय। इतना मौका रखा जाय कि दूसरी पार्टी भी मिल सके और बात कर सके।

शमशेरसिंह—यह हो सकता है।

मुन्शी जी चुप हो रहे। उनके कुछ न बोलने पर शमशेरसिंह ने फिर कहा—

मुन्शी जी।

मुन्शी जी—जी।

शमशेरसिंह—यदि हो सके तो तुम इसी बीच में मदारी सुकुल से भी बातें कर लेना। और उनकी हालत को भी समझ लेना।

मुन्शी जी—अच्छी बात है।

शमशेरसिंह के चाय पीने का समय हो चुका था। वे उठ कर अपने चाय पीने के कमरे में चले गये। और एक बिछी हुई चारपाई पर लेटकर उन्होंने बुलाया—

चंदा।

बात की बात में एक नवयुवती चारपाई के पास आकर खड़ी हो गई और कहा—जी।

शमशेरसिंह—चाय नहीं पिलाओगी?

चंदा ने हँस कर कहा—चाय जाने कब से बनी हुई रखी है, आपको आदमियों से छुट्टी मिले तब न!

शमशेरसिंह ने चंदा की ओर देखा और कहा—छुट्टी न मिले तो?

चंदा शमशेरसिंह की ओर देख रही थी। उसने कुछ उत्तर न दिया। शमशेरसिंह ने फिर कहा—

क्यों चदा?

चंदा—जी।

शमशेरसिंह—तुम बोली नहीं।

चंदा—बोलती तो हूँ।

शमशेरसिंह—चाय तैयार है?

चंदा—जी हां।

शमशेरसिंह—ले आओ।

चंदा भीतर गई और तश्तरी में चाय का प्याला लेकर आ गई। शमशेरसिंह उठ कर बैठ गये और चंदा के हाथ से चाय की तश्तरी ले ली।

चंदा ने पूछा—और कुछ?

शमशेरसिंह-और क्या!

चंदा—कुछ नमकीन ले आऊँ?

शमशेरसिंह ने एक घूंट चाय पीकर चंदा की ओर देखा और कहा—नहीं।

शमशेरसिंह ने चाय पीकर तश्तरी और प्याला चंदा को दे दिया, चंदा भीतर चली गई।

तेरहवाँ परिच्छेद

देवीगंज से शमशेरसिंह के चले जाने के बाद हिम्मतसिंह जब शांत होकर बैठे तो उनको चतुरी का स्मरण हुआ। देवीगंज आने पर और भी कई बार उन्होंने चतुरी के सम्बन्ध में सोचा था, लेकिन समय और सुविधायें उनको अनुकूल नहीं मिली। वे जानते थे कि शमशेरसिंह के जाने के पहले चतुरी से मिलने का और सुविधा पूर्वक बातें करने का अवसर न मिलेगा, इसलिये वे उनके जाने का रास्ता देख रहे थे।

देवीगञ्ज में ठहरने का कोई विशेष कारण न था। फिर भी हिम्मतसिंह ने कहा—सुनकर शमशेरसिंह से अपने ठहरने की आवश्यकता बताई और वे दो-तीन दिन के लिये ठहर भी गये। शमशेरसिंह के चले जाने पर आने-जाने वालों की संख्या भी बहुत कम हो गयी। हिम्मतसिंह शांति पूर्वक इस प्रकार कमरे में बैठे, जैसे उनके पास अब कोई काम न हो। इसी समय उन्होंने चतुरी का बार-बार स्मरण करके मन ही मन कहा—

नन्हे लाला बड़े दूरदर्शी हैं। चतुरी की आवश्यकता पर वे अपनी मनोकामना चतुरी के साथ पूरी करना चाहते हैं। चतुरी

सुन्दरी है। बाल विधवा है। उसका रूप और सुगठित शरीर सैकड़ों सुन्दरी स्त्रियों का मान भंग करता है। उसकी मुस्कराहट पुरुषों के हृदयों को उत्पीड़ित कर देती है। उनके नेत्रों में यौवन की मदिरा है। नन्हें लाला इस अवसर को पाकर चतुरी पर अपना अधिकार करना चाहते हैं। लेकिन मैंने उनके रहस्य को आगे बढ़ने नहीं दिया। चतुरी से मैंने जो बातें की हैं, उसके फलस्वरूप नन्हें अपने आपको कटी पतंग की भाँति पायेंगे।

हिम्मतसिंह चुपचाप बैठे थे, किन्तु उनके हृदय में चतुरी से मिलने की उत्सुकता बढ़ रही थी। दोपहर ढल चुकी थी। वे कुछ सोच समझ कर उठे और धीरे धीरे चतुरी के घर की ओर रवाना हुए। रास्ते में किसी विशेष व्यक्ति से भेंट नहीं हुई। चतुरी के द्वार पर जाकर देखा दरवाजे के बाहर सुनसान था। उसके घर के किवाड़े खुले थे। हिम्मतसिंह ने भीतर प्रवेश किया। चतुरी के घर में छोटा सा आँगन था। हिम्मतसिंह ने वहाँ जाकर देखा। चतुरी भूमि पर चटाई बिछाये बैठी थी और बालों में कंघी कर रही थी।

चतुरी ने हिम्मतसिंह को देखा, वे खड़े हुये मुस्करा रहे थे। उसने तीव्रता के साथ कहा—

"अहो भाग्य, आपको मेरी याद तो आई।"

"लेकिन तुमने तो बिल्कुल ही भुला दिया।"

चतुरी ने तेजी के साथ हिम्मतसिंह की ओर देखा और कहा—मैंने भुला दिया?

हिम्मतसिंह आगे बढ़कर चटाई पर पहुँच गये और तृषित नेत्रों से चतुरी की ओर देखकर कहा—हां, तुमने भुला दिया।

चतुरी ने कंघी देते हुये कहा—आप सब कुछ कह सकते हैं।

हिम्मतसिंह, चतुरी के एक-एक अंग को इस प्रकार देख रहे थे जैसे वे बड़ी सावधानी के साथ उसका निरीक्षण कर रहे हों। इसी समय चतुरी ने कहा—

मुन्शी जी, चारपाई पर बैठ जाइए।

मुन्शी जी—तुम्हारी माँ कहाँ हैं?

चतुरी—वे अपनी बहन के पास गई हैं।

मुन्शी जी—कहाँ?

चतुरी—गोपालपुर।

मुन्शी जी—अच्छा, वे कब गई थीं?

चतुरी—कई दिन हुए।

इस बात को सुनकर हिम्मतसिंह को प्रसन्नता हुई। चतुरी जहाँ बैठी थी, उसके पीछे, भीतर की ओर एक चारपाई बिछी थी हिम्मतसिंह उसी पर जाकर बैठ गये और मन-ही-मन चतुरी के सम्बन्ध में अनेक कल्पनायें करने लगे।

थोड़ी देर में चतुरी कंघी देकर उठी। शीशा और कंघा एक आले पर रखकर वह चारपाई के पास गई और कहने लगी एक मिनट के लिये खड़े हो जाइए।

"क्यों?"

"मैं चारपाई पर कुछ बिछादूँ।"

"लेकिन इसकी क्या जरूरत है?"

"जरूरत है।"

मुंशी जी ने भावभंगी नेत्रों से चतुरी की ओर देखा और पूछा—क्या?

यह मैं पीछे बता दूँगी।

"और यदि अभी बतादो तो?"

"इतनी जल्दी क्या है?"

हिम्मतसिंह का शरीर रोमाञ्च हो उठा। वे उठकर खड़े हो गये और कहा—अच्छी बात है।

चतुरी ने रुई का एक गद्दा लाकर चारपाई पर बिछा दिया। गद्दा अधिक उजला तो न था लेकिन मैला भी न था। सिरहाने एक तकिया रख दिया और कहा—अब बैठिये।

हिम्मतसिंह ने चतुरी के निकट होकर कहा—अब तो इसमें लेटने को जी चाहता है।

चतुरी—लेट जाइये।

मुंशी जी—लेकिन इतनी जल्दी लेटने का साहस नहीं होता।

चतुरी—क्यों?

मुंशी जी—दुनिया बड़ी अनोखी है।

चतुरी—अपना हृदय साफ होना चाहिये।

मुंशी जी—इसको कौन देखता है।

चतुरी ने कुछ भी उत्तर न दिया। मुन्शी जी चारपाई पर बैठ गये। चतुरी चारपाई के निकट भूमि पर बैठ गई। हिम्मतसिंह ने कुछ सोचकर कहा—तुमसे बहुत जरूरी बात करना है।

"क्या?"

"यह सब मैं बताऊँगा।"

चतुरी चुप थी। उसने कुछ उत्तर न दिया। मुन्शी जी ने फिर कहा-यदि तुम कुछ हर्ज न समझो तो बाहर के किवाड़े बंदकर आओ।

चतुरी ने कहा—किवाड़े बंद करने की क्या जरूरत है।

मुन्शी जी-जरूरत है।

चतुरी—क्या?

मुन्शी जी—यह सब मैं पीछे बताऊँगा।

चतुरी ने कुछ भी उत्तर न दिया। उसको चुप देख कर मुन्शी जी ने फिर कहा—तुम कुछ संदेह न करो।

चतुरी—संदेह की बात नहीं है।

मुन्शी जी—तो फिर, बंद क्यों नहीं कर आती?

"लेकिन यह अच्छा न मालूम होगा।"

"यह तो ठीक है।"

चतुरी चुपचाप बैठी थी, मुन्शी जी ने फिर कहा—जिस बात की तुमको आशंका है, उसको मैं समझता हूँ, लेकिन हमको और तुमको अपना काम देखना चाहिये।

चतुरी ने सिर नीचा करके कहा—आप बातें करिये।

"लेकिन चतुरी, यह ठीक न होगा।"

"ठीक होगा।"

मुन्शी जी ने अनेक क्षण चुप रहकर कहा—अभी तुम समझी नहीं, इसीलिये तुमको दुविधा हो रही है।

चतुरी ने कुछ भी उत्तर न दिया। उसका हृदय अस्थिर हो रहा था। चतुरी को शांति देखकर हिम्मतसिंह ने कहा—

तुम थोड़ा-सा समझो। तुम्हारे घर में बैठकर, तुमसे एकान्त में बातें करना लोगों के दिलों में सन्देह उत्पन्न करेगा। यहाँ कोई-न-कोई आजायगा और बात गाँव-भर में फैल जायगी। लोग अनेक प्रकार बातें करेंगे। हम और तुम दोनो बदनाम होंगे। यह बात यहीं तक न रहेगी। नम्बरदार के कानों में भी पहुँचेगी, वे तुम्हारे सम्बन्ध में अनेक बातें सोचेंगे और हम जो कुछ करना चाहते हैं उसमें बड़ी बाधा पड़ेगी। हमने यह निश्चय कर लिया है कि हमें चाहे जो कुछ करना पड़े, लेकिन तुमको हम छिगरी के भार से मुक्त करावेंगे। इसलिये तुम कुछ चिंता न करो।

चतुरी चुपचाप सुनती रही। मनुष्य की आवश्यकता बुरी होती है। वह उठी और दरवाजे पर जाकर, किवाड़े बंद किये। जञ्जीर लगायी और लौटकर अपने स्थान पर आकर फिर बैठ गयी।

हिम्मतसिंह ने चतुरी की ओर देखा। उसका मुख मंडल गम्भीर हो रहा था। उन्होंने कहा—

चतुरी, तुम मेरी बात सुनो।

चतुरी ने अपना सिर घुमाकर मुन्शी जी की ओर देखा। उसने मुंह से कुछ न कहा। मुन्शी जी ने फिर कहा—

चतुरी, तुम मेरा विश्वास करो। मैं तुम्हारा भला करना चाहता हूं। मैं नहीं चाहता कि तुम्हारा सिर नीचा हो इसलिये तुम संदेह न करो। प्रसन्न होकर बैठो और हृदय खोल कर बातें करो।

चतुरी ने कुछ भी उत्तर न दिया।

मुन्शी जी ने उसका दाहिना हाथ पकड़ कर कहा-चारपाई पर आकर बैठ जाओ।

चतुरी ने अपना हाथ हटाकर कहा-आप बातें करिए।

मुन्शी जी—चारपाई पर आ जाओ।

चतुरी—मैं ऐसा न करूँगी।

मुन्शी जी—तुमको मेरे ऊपर विश्वास नहीं है ?

"है।"

"तो फिर ?"

लेकिन मैं चारपाई पर न बैठूंगी।"

मुन्शी जी ने कुछ रुककर कहा—तो मैं भी नीचे आकर बैठता हूं।

"क्यों ?"

"यों ही।"

"इसकी क्या जरूरत है।"

"इसको मैं समझता हूं।"

चतुरी ने कुछ भी उत्तर न दिया। हिम्मतसिंह ने फिर कहा—तुमको मेरे ऊपर विश्वास नहीं है ?

"क्यों नहीं है।"

"फिर तुम मेरी बात क्यों नहीं सुनती ?"

इसके लिये मेरा हृदय तैयार नहीं होता।"

मुन्शी जी ने चतुरी की ओर देखा और फिर उसके हाथ को पकड़कर चारपाई की ओर खींचा।

चतुरी ने दुखी होकर कहा—ऐसा न करिए।

मुन्शी जी ने हाथ न छोड़ा। शक्तिपूर्वक खींचकर चतुरी को चारपाई पर बिठा लिया और कहा—मैं एक दिन के लिये नहीं, जीवन-भर के लिये तुम्हारा हो चुका हूँ। तुम मुझे अपना समझो।

चतुरी ने कुछ उत्तर न दिया। हिम्मतसिंह ने अपना दाहिना हाथ चतुरी की एक जांघ पर रक्खा और कहा—मैं सब प्रकार तुम्हारी सहायता करूँगा। तुम अपने हृदय से अपनी शङ्का को निकाल कर बाहर करो।

चतुरी ने मुन्शी जी की ओर देखा। उसके मुंह से कोई बात न निकली। मुन्शी जी ने फिर कहा—चतुरी!

चतुरी—कहिये।

मुन्शी जी—तुम सदा की भांति आज प्रसन्न नहीं हो।

चतुरी—मेरी प्रसन्नता भगवान ने छीन ली है।

मुन्शी जी ने देखा चतुरी के नेत्रों से आँसू निकल पड़े। उन्होंने साहस पूर्वक जेब से रूमाल निकाला और उसके नेत्रों के आँसुओं को पोछकर कहा—चतुरी।

चतुरी ने मुन्शी जी के मुँह की ओर देखा और कहा—तुम मेरा परलोक न बिगाड़ो। मैं गरीब हूँ, लेकिन मेरा धर्म सुरक्षित है।

हिम्मतसिंह ने कहा—मैं तुम्हें बिगाड़ना नहीं चाहता।

'लेकिन मुझे जान पड़ता है कि मैं अपने धर्म से हट रही हूं।"

मुन्शी जी—तुम ऐसा न सोचो।

हिम्मतसिंह चुप होकर कुछ सोचने लगे। चतुरी भी चुप थी। अनेक क्षण पश्चात् उन्होंने कहा—नम्बरदार की डिगरी के संबन्ध में तुम्हारा क्या विचार है?

चतुरी—मैं उनका असली रुपया देना चाहती हूँ।

मुन्शी जी—कितने?

"सत्तर।"

"और कुछ?"

"और जो कुछ आप कहिये।"

मुन्शी जी ने हँसकर कहा—मैं तो चाहता हूं कि तुम्हें एक पैसा भी देना न पड़े।

चतुरी—लेकिन यह कैसे हो सकता है?

"हो तो सब-कुछ सकता है।"

चतुरी ने आगे कुछ न कहा। मुन्शी जी ने फिर कहा—तुम जो कुछ चाहोगी, मैं सब-कुछ कर सकूंगा।

चतुरी ने फिर भी कुछ उत्तर न दिया।

मुन्शी जी—चतुरी।

"जी।"

"कुछ बोलो।"

"क्या बोलूं?"

"जो कुछ तुम्हारी इच्छा हो।"

चतुरी ने सिर उठाकर हिम्मतसिंह की ओर देखा और कहा—आज मुझे प्रसन्नता नहीं हो रहा।

मुन्शी जी—क्यों ?

चतुरी ने कुछ उत्तर न दिया।

मुन्शी जी—बोलो।

चतुरी—कुछ समझ में नहीं आता।

मुंशी जी—जो कुछ समझ में आता हो.

"उसके लिये साहस नहीं होता।"

"फिर भी कहो।"

चतुरी ने एक गम्भीर साँस लेकर कहा—कहूँ ?

मुन्शीजी—हाँ, कहो।

चतुरी—डिगरी के रुपयों से मुक्त होने की अब मुझे खुशी नहीं हो रही है।

"ऐसा क्यों है ?"

चतुरी—कुछ समझ में नहीं आता।

इसी समय किसी ने दरवाजे पर जोर से धक्का देकर पुकारा—चतुरी !

हिम्मतसिंह का हृदय काँप उठा। चतुरी उठकर दरवाजे पर गयी। हिम्मतसिंह चारपाई से उठकर आँगन में आकर खड़े हो गये थे। चतुरी दरवाजा खोला। बाहर निकल कर इधर-उधर देखा, कहीं पर कोई न था। वह लौट कर भीतर आई और हिम्मतसिंह से कहने लगी—अब आप जाइये।

अच्छा—हिम्मतसिंह ने कहा—क्या रात को मैं तुमसे बातें कर सकूंगा ?

चतरी—मैं इसका जवाब कल आपको दूंगी।

चतुरी की बात सुनकर हिम्मतसिंह दरवाज़े के बाहर आये और तेज़ी के साथ निकल कर वहाँ से चले गये। चतुरी अपने आँगन में

बैठ गई। उसका हृदय अस्थिर हो रहा था। हिम्मतसिंह के साथ की आज की सम्पूर्ण घटना उसकी आँखों में घूम रही थी। मन ही मन वह अनेक प्रकार की बातें सोचने लगी। उसका मनस्ताप उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था।

चौदहवां परिच्छेद

शमशेरसिंह को देवीगंज से गये हुये चार दिन बीत गये। हिम्मत-सिंह अब भी यहीं पर हैं। चतुरी से उनकी लगभग रोज़ ही मुलाकात होती है। हिम्मतसिंह ने उसे विश्वास दिलाया है कि नम्बरदार की डिग्री का रुपया अदा कराने में और उसके भार से मुक्त होने में मैं तुम्हारी सहायता करूंगा।

चतुरी को हिम्मतसिंह पर बहुत बड़ा विश्वास है। और इस विश्वास को पुष्ट करने में हिम्मतसिंह ने बड़े-से-बड़े प्रयत्नों का प्रयोग किया है। साथ ही इस रहस्य को गुप्त रखने में भी कम सावधानी से काम नहीं लिया गया। हिम्मतसिंह ने चतुरी को समझा दिया है कि दूसरों के देखते हुए हम तुम्हारे सम्बन्ध में अनेक प्रकार का विरोध करते रहेंगे किन्तु तुम इसका कुछ विचार न करना। ऐसा करके ही हम तुम्हारी सहायता कर सकेंगे। चतुरी ने इस बात को भली भाँति समझ लिया है।

आज हिम्मतसिंह कानपुर जाना चाहते थे, किन्तु कुछ सोच-विचार कर वे आज और रुक गये हैं। दोपहर होने के बहुत पहले ही उनके पास गाँव के कई एक आदमी आकर बैठ गये थे। उन लोगों

के साथ हिम्मतसिंह की अनेक प्रकार की बातें होती रहीं। जो बातें हो रही थीं, उनका क्रम समाप्त होते ही भूरे ने पूछा—

क्यों मुंशी जी, चतुरी के मामले में क्या हुआ ?

मुन्शी जी—अभी तो कुछ नहीं।

भूरे—कुछ आपस में समझौते की आशा है !

मुंशी जी—आपस में समझौता उसी समय तक होता है, जब तक मामला अदालत में नहीं जाता।

भूरे—यह आप ठीक कहते हैं।

भूरे के चुप होते ही काशीप्रसाद ने कहा—उसमें तो अदालत से नंबरदार की डिगरी भी होगयी है।

भूरे—हाँ डिगरी तो हो गई है।

काशीप्रसाद—तो फिर अब समझौते की क्या बात है !

भूरे—यह तो मुन्शी जी जाने।

भूरे की इस बात को सुनकर मुन्शी जी ने चौंक कर कहा—मुन्शी जी तो नौकर हैं और नौकर सदा मालिक का भला चाहता है।

काशीप्रसाद—इसमें क्या सन्देह।

मुन्शी जी—मैं सच आप से कह रहा हूँ।

भूरे—मेरे कहने का अभिप्राय यह था कि……।

भूरे के रुकने पर काशीप्रसाद ने कहा—कि………।

भूरे—कि चतुरी कानपुर में नम्बरदार के पास गयी थी। तो मैंने सोचा कि शायद उसका कुछ रास्ता निकला हो।

भूरे की इस बात को सुनकर पास ही बैठे हुए दीना दादा बोल उठे—कानपुर गयी थीं तो सुना नहीं था, सारे गाँव में हंगामा है कि नम्बरदार ने सूखा जवाब दे दिया।

भूरे—वह तो सुना था।

दीना--तो फिर और क्या सुनना चाहते हो ?

भूरे ने आगे कुछ न कहा, सब को चुपचाप देखकर हिम्मतसिंह ने कहा--अपना दुख सब कोई चिल्लाता है। चतुरी भी कानपुर दौड़ी गई थीं। किन्तु उसमें होने के लिए क्या रखा था।

काशीप्रशाद ने इस बात को सुनकर कहा--क्यों मुन्शी जी, चतुरी चाहती क्या हैं ?

मुन्शी जी--चतुरी ?

काशी प्रसाद--जी हाँ।

मुन्शी जी—चतुरी चाहती है कि उनके आदमी ने जितना रुपया लिया था, उतना ही उनसे ले लिया जाय।

काशीप्रसाद—और बाक़ी रुपये ?

मुन्शी जी—बाक़ी रुपये छोड़ दिये जाँय।

काशीप्रसाद ने हँसकर कहा—भला यह कैसे हो सकता है, सोचने की बात है।

काशीप्रसाद के चुप होते ही भूरे ने कहा—नम्बरदार का असली रुपया तो थोड़ा ही है।

दीना—यह तो सब मुन्शी जी जानते होंगे।

काशीप्रसाद ने दाहिने हाथ से अपना सिर खुजलाते हुये कहा—जानने की बात न पूछो।

"क्यों" ?

काशीप्रसाद—इसलिये कि उसकी असलियत तो गाँव के सभी लोग जानते हैं।

भूरे ने हँसकर कहा—काशी भइया, अब तुमने कही है।

काशीप्रसाद—कही क्या है, सच्ची बात है।

मुन्शी जी—लेकिन उस सच्चाई से अब लाभ क्या ?

काशीप्रसाद —कुछ नहीं।

थोड़ी देर के लिये सब लोग चुपचाप बैठे रहे, किसी के मुँह से कोई बात न निकली। यह देखकर भूरे ने कहा—क्यों मुन्शी जी, नम्बरदार की डिगरी कितने रुपये की हुई है?

मुन्शी जी—छः सौ रुपये की।

भूरे —चतुरी के आदमी ने क्या छः सौ रुपये नम्बरदार से लिये थे?

मुन्शी जी ने कुछ रुककर उत्तर दिया—छः सौ रुपये तो नहीं लिये थे।

भूरे—तो?

मुन्शी जी—पहला रुक्का जो लिखा गया था, वह दो सौ रुपये का था और कहा तो यह जाता है कि उसने दो सौ रुपये भी नहीं लिए थे।

दीना—बात तो ठीक ही है।

काशीप्रसाद—ठीक तो है। सत्तर रुपये देकर दो सौ रुपये का कागज़ लिखाया गया था।

मुन्शी जी—कुछ दिनों के बाद पहला कागज़ बदला गया था और कुछ रुपये दे दिवाकर एवं ब्याज मिलाकर दूसरा कागज़ लिखा गया था। चतुरी के आदमी के मर जाने पर दूसरे रुक्के की नालिस की गयी थी उसमें सब खर्च मिलाकर छः सौ की डिगरी हुई है।

काशी प्रसाद—और इस डिगरी में नम्बरदार एक पैसा भी कम नहीं करना चाहते।

मुन्शी जी ने हँसकर कहा—बात तो कुछ ऐसी ही है।

इसी समय एक नौकर ने आकर कहा—मुन्शी जी, भोजन तैयार है।

नौकर यह कहकर चला गया। मुन्शी जी फिर भी बातें करते रहे। थोड़ी देर में बातें समाप्त होने पर हिम्मतसिंह वहाँ से उठकर भोजन करने के लिये जाने लगे। इसी समय बैठे हुये आदमी भी उठ कर वहाँ से चले गये।

हिम्मतसिंह ने मकान के रसोई-घर में जाकर देखा। चन्दा उनका रास्ता देख रही थी। मुन्शी जी के पास आने पर चन्दा ने मुँह बना कर कहा---जब मालिक कानपुर से आते हैं तब न तो उनको खाने की छुट्टी मिलती और न मुन्शी जी, आपको।

मुन्शी जी ने हँसकर कहा—चंदा, तुम इन बातों को क्या समझो जमींदारी के काम ऐसे ही होते हैं। एक आता है, एक जाता है।

चंदा ने बिगड़कर कहा—तो समय पर भोजन कर लिया करो, फिर बातें किया करो। महराजिन बैठे-बैठे ऊब उठती हैं।

मुन्शी जी ने खाने के लिये कपड़े उतारते हुए कहा—लेकिन महराजिन ने तो हमसे कुछ कहा नहीं। तुम्हीं हमारे ऊपर नाराज हो रही हो।

चंदा—नाराज होने की बात ही है। दिनभर इतनी बातें होती हैं कि वे कभी खतम हो नहीं होतीं।

मुन्शी जी—अच्छा तो तुम्हारा क्या हुकुम है, चंदा, कि बातें न की जायँ!

मुन्शी जी चौके में खाने के लिए बैठ गये थे। इसी समय शमशेरसिंह की स्त्री रतनी खड़ाऊँ पहने हुए उधर से आ निकलीं। वे कुछ देर से हिम्मतसिंह और चँदा की बातें सुन रही थीं। उन्होंने आते ही कहा—

जिसका जैसा मालिक, उसका वैसा नौकर। चंदा तू बेकार की बातें करती है।

हिम्मतसिंह ने हँसकर कहा—क्यों मालकिन !

रतनी—मालकिन से क्या पूछते हो ।

हिम्मतसिंह—तब किससे पूछूँ, मालकिन !

"अपने हृदय से ।"

हिम्मतसिंह ने कुछ रुककर कहा—नौकर को चाहिये कि मालिक को देखकर चले ।

रतनी—यही तो मैं भी कहती हूँ ।

हिम्मतसिंह—आप भी तो मेरे मालिक हैं ।

रतनी—मैं तो कहने भर के लिए मालकिन हूं । मालिक तो आपके कानपुर में रहते हैं, जिनको लिए हुए आप शहर में घूमा करते हैं ।

हिम्मतसिंह ने चकित नेत्रों से रतनी की ओर देखा और कहा मैं उनको लिए हुए फिरा करता हूँ ?

रतनी—जी हाँ, मुन्शी जी, कानपुर की एक-एक बात का मुझे पता है । वही आपके मालिक जब यहाँ आते हैं तो मुझसे बात करने के लिए उनको छुट्टी नहीं मिलती ।

मुन्शी जी ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया । रतनी ने फिर कहा—मैंने इसीलिए आपसे कहा है, जिसमें आप अपने मालिक से यह बात कहें ।

हिम्मतसिंह—मैं भला उनसे क्या कह सकता हूँ । वे मेरे मालिक हैं और आप मेरी मालिकिन हैं ।

रतनी—तो और आप क्या कर सकते हैं !

हिम्मतसिंह—मालिक का और आप का जो हुक्म होता है मैं उसको पूरा करता हूं ।

रतनी चुपचाप सुन रही थीं । उनके कुछ न बोलने पर चँदा ने कहा—मालकिन आप बेकार इनसे बातें करती हैं । मालिक से पचासों बार ये बातें कही गयी हैं, लेकिन वे कभी सुनते भी हैं !

रतनी—न सुने, उन्हीं की कौन सुनता है।

हिम्मतसिंह भोजन कर चुके थे। वहाँ से लौटते हुए उन्होंने कहा—चंदा, आज तो तुमने मालकिन को भी हमसे नाराज कर दिया।

चंदा पान लगा रही थी। उसने कुछ उत्तर न दिया और पान लगाकर हिम्मतसिंह के हाथ में लाकर दिया। मुन्शी जी पान खाकर बाहर चले आये और कमरे में चारपाई पर जब लेटे तो वे मन-ही-मन सोचने लगे, देवीगंज में हमें कई दिनों की देरी लग गई। दो-तीन दिनों के बाद ही तो कानपुर आने के लिये हमने कहा था। वे रोज कानपुर में हमारा रास्ता देखते होंगे। यदि मैं अब कानपुर नहीं जाता तो कानपुर से कोई न कोई आदमी हमें बुलाने के लिए आना ही चाहता है। ऐसी दशा में हमें कानपुर चला जाना चाहिये।

चरपाई पर लेटे लेटे हिम्मतसिंह को कुछ आलस मालूम हुआ, उनकी आँखें बंद हुई और वे सो गये।

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

किशोरी के मकान में मुन्शी हिम्मतसिंह ने ऊपर का जो भाग किराये पर लिया था, उसमें शमशेरसिंह को आते-जाते दूसरा मास बीत रहा है। किराये पर हिम्मतसिंह ने लिया था, किन्तु उसकी चाभी शमशेरसिंह के पास रहती है। उनकी जब तबियत होती है, तब वे वहाँ चले जाते हैं और जितनी देर इच्छा होती है, बैठते हैं, उठते हैं, लेटते हैं और किशोरी तथा उसकी माँ-बाईजी के साथ बातें करते हैं।

किशोरी और बाई जी के साथ शमशेरसिंह का सम्बन्ध दिन पर दिन गम्भीर होता जाता है। उनके बीच किसी प्रकार का पार्थक्य नहीं रह गया। बाई जी के किराये के रुपये जो आदमी लेकर चला गया था, उन पैंतीस रुपयों को शमशेरसिंह ने किशोरी के हाथों में देकर अपना और भी विश्वास सुदृढ़ बना लिया है। बाई जी ने शमशेरसिंह को अपने लिए एक विश्वासपात्र सहायक मान लिया है और किशोरी के मनोभावों पर शमशेरसिंह के प्रभाव की पूरी छाप है। इसलिए वह अपनी माँ के न होने पर भी, शमशेरसिंह के पास उठती-बैठती है और श्रद्धापूर्वक बातें करती है।

शमशेरसिंह अनेक प्रकार की वस्तुएं देवीगंज से मँगाकर किशोरी के पास भेजा करते हैं। शहर से भी वे कितने ही पदार्थ किशोरी के लिए ले जाते हैं। शमशेरसिंह के इन व्यवहारों ने किशोरी के हृदय पर विजय पाई है। दोनों ही के बीच स्नेह सम्बन्ध इतना अधिक हो गया है कि किसी दिन शमशेरसिंह के न पहुँचने पर किशोरी को अपना घर सूना मालूम होता है, शमशेरसिंह के आने पर वह रूठ-कर उलाहना देती है। शमशेरसिंह, किशोरी के हृदय की भावनाओं को भली प्रकार समझते हैं।

एक दिन किशोरी की माँ—बाई जी बिरादरी में किसी के घर गई थीं, उस दिन दोपहर को शमशेरसिंह किशोरी के मकान पर पहुँचे उनके साथ एक झोला लिए हुए, उनका नौकर भी था। किशोरी के मकान पर पहुँच जाने के बाद शमशेरसिंह ने नौकर के हाथ से झोला ले लिया और वह वहाँ से लौट कर चला आया। शमशेरसिंह ने ऊपर जाकर कमरे में झोला टाँग दिया और बिछी हुई चारपाई पर वे जैसे ही बैठे, किशोरी जाकर सामने खड़ी हो गई। उसे देखकर शमशेरसिंह मुस्कराये। किशोरी ने भी हँस दिया। वह शमशेरसिंह को बाबू जी कहा करती है। उसने कहा—

बाबू जी।

शमशेरसिंह—हाँ।

"आज माँ सवेरे से चली गई हैं।"

शमशेरसिंह किशोरी की ओर देख रहे थे। उन्होंने कुछ न कहा। किशोरी ने फिर कहा—इसलिए मकान में बड़ा सूना लग रहा था।

शमशेरसिंह के शरीर में बिजली का-सा स्पर्श हुआ। उन्होंने कहा—किशोरी!

किशोरी ने कुछ भी उत्तर न दिया।

शमशेरसिंह ने फिर कहा—किशोरी!

"जी।"

"कुछ कहना चाहता हूँ।"

"कहिए।"

"लेकिन साहस नहीं होता।"

किशोरी ने हँसकर कहा—आप तो राजपूत हैं।

शमशेरसिंह के नेत्र पलकहीन अवस्था में किशोरी के मुंह की ओर देख रहे थे। उन्होंने धीरे-से कहा—राजपूत!

किशोरी—जी।

"मेरे जैसे राजपूतों की राजपूती तुम्हारे सामने पानी भरती है।

किशोरी ने गम्भीर होकर कहा—ऐसा न कहिये।

"क्यों?"

किशोरी—मुझे दुख होता है।

शमशेरसिंह—तुम्हें दुख होता है!

किशोरी ने सिर हिलाकर स्वीकार किया।

शमशेर सिंह ने स्नेह पूर्ण स्वर में कहा—किशोरी!

"जी।"

"क्या तुम मेरे पास चारपाई पर बैठोगी नहीं?"

"बैठूंगी"—कहकर किशोरी शमशेरसिंह के निकट चारपाई पर बैठ गयी।

कुछ क्षण चुप रहकर और अपने नेत्रों को बंद करके शमशेरसिंह ने कहा—किशोरी!

"जी।"

"हमारे हृदय की गत जाने क्यों तीव्र हो रही है।"

किशोरी ने घबराकर कहा—क्यों?

शमशेरसिंह—पता नहीं।

किशोरी—इसका कुछ उपाय करिए।

शमशेरसिंह ने किशोरी की ओर देखा और कहा—इसका उपाय?

किशोरी—जी हाँ

शमशेरसिंह—इसका उपाय तुम्हीं करोगी।

किशोरी ने उनकी बात का कुछ उत्तर न देकर कहा—जब आप नहीं आते तो मुझे मकान में अच्छा नहीं लगता।

किशोरी ने अपनी बात कहकर, अपने दोनों हाथों से अपना मुँह ढक लिया। शमशेर सिंह चुपचाप किशोरी की बात सुन रहे थे। अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर उन्होंने किशोरी के हाथों को उसके मुँह पर से खींचा। उसकी आँखों से आँसू निकलकर उसके गालों पर बह रहे थे।

शमशेरसिंह ने कहा—किशोरी!

"जी।"

"तुम रंज क्यों करती हो?"

किशोरी—न करूँगी।

शमशेरसिंह—मैं तुम्हें रंजीदा देख नहीं सकता।

किशोरी चुपचाप सुन रही थी। शमशेरसिंह ने फिर कहा—यदि मैं तुम्हें सुखी न बना सका तो मैं आत्म हत्या कर लूंगा।

किशोरी ने शमशेरसिंह की ओर देखा। उसने कुछ उत्तर न दिया। उसके नेत्रों से तेज़ी के साथ आंसू निकल पड़े।

शमशेरसिंह ने किशोरी को देखकर कहा—किशोरी!

किशोरी—जी।

शमशेरसिंह—भगवान क्या चाहते हैं?

किशोरी—भगवान ही जाने।

शमशेरसिंह—तुम नहीं जानती?

किशोरी—जी नहीं।

शमशेरसिंह ने धैर्य पूर्वक किशोरी की बात को सुना। इसी समय किशोरी का ध्यान मकान के बाहर आकृष्ट हुआ। उसने तत्परता के साथ कहा—बाबू जी!

शमशेरसिंह—हाँ।

"बाहर स्वामी जी की आवाज़ सुनाई पड़ी है।"

"कौन स्वामी जी?"

"एक स्वामी जी हैं। बहुत अच्छी ज्योतिष जानते हैं। सभी लोग उनसे बातें पूछा करते हैं।"

शमशेरसिंह—अच्छा।

किशोरी—आप कहें तो मैं उनको बुलाऊँ।

शमशेरसिंह—क्या पूछोगी?

"कुछ पूछूँगी।"

शमशेरसिंह ने हँसकर कहा—क्या?

किशोरी—अभी न बताऊँगी।

शमशेरसिंह—अच्छा बुलाओ।

किशोरी कुछ रुककर सोचने लगी। शमशेरसिंह ने पूछा—क्यों, क्या बात है ?

किशोरी—लेकिन मां सुनेंगी तो बुरा मानेंगी।

शमशेरसिंह—हम कह देंगे कि हमने बुलाया था।

किशोरी तेजी के साथ उठकर वहां से गयी और नीचे जाकर स्वामी जी को आवाज़ लगायी। स्वामी जी एक बूढ़े आदमी से बात कर रहे थे। उन्होंने सुना और वे किशोरी के पास आकर खड़े हो गये। किशोरी के कहने से वे उसके पीछे-पीछे चले और ऊपर कमरे में आकर खड़े हो गए। किशोरी ने दूसरी चारपाई बिछा दी। स्वामी जी उसपर बैठ गये। किशोरी भी शमशेरसिंह की चारपाई पर बैठ गयी। स्वामी जी ने कहा—

कहो बेटी।

किशोरी ने अपनी मुख-मुद्रा को गम्भीर बनाकर कहा—स्वामी जी, मैं आपको अपना हाथ दिखाना चाहती हूँ।

स्वामी जी ने एक बार किशोरी के मुख पर अपनी दृष्टि डाली। किशोरी ने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। स्वामी जी ने अपने हाथ से उसकी उंगलियों को पकड़ कर ध्यान पूर्वक देखा। कुछ ठहरकर और सोचकर स्वामी जी ने कहा—

बेटी, तू है तो सौभाग्यवती किन्तु तेरा सौभाग्य छोटेपन में ही भगवान ने छीन लिया है।

किशोरी ध्यान पूर्वक सुन रही थी। स्वामी जी ने फिर कहा—सास और ससुर से तेरी अनबन रहेगी।

स्वामी जी फिर ध्यान से हाथ की रेखाओं को देखते रहे और कुछ देर में उन्होंने किशोरी की ओर देखा और कहा—

बेटी, भगवान ने तुझे कोई सन्तान नहीं दी।

शमशेरसिंह कभी स्वामी जी की ओर और कभी किशोरी की ओर देख रहे थे। किशोरी ने किसी बात का उत्तर न दिया और न मुँह से कुछ कहा। वह शांतिपूर्वक सुन रही थी।

स्वामी जी ने किशोरी की हस्त रेखाओं का अध्ययन करते हुए कहा—बेटी तेरी युवावस्था में एक बड़ा आदमी तुमसे प्रेम करेगा और तुझको बहुत चाहेगा।

किशोरी ने अपने नेत्रों को मूँद लिया और अपनी मुस्कराहट को मुँह के भीतर ही छिपा लेने की चेष्टा की।

स्वामी जी ने किशोरी का हाथ छोड़ दिया। किशोरी ने शमशेरसिंह की ओर देखा और कहा—बाबू जी, आप भी हाथ दिखायेंगे ?

शमशेरसिंह—हम तो स्वामी और संत जनों का केवल आशीर्वाद लिया करते हैं।

स्वामी जी ने प्रसन्न होकर कहा—भगवान आप की मनोकामना पूरी करे।

शमशेरसिंह ने अपनी जेब से एक रुपया निकाल कर किशोरी के हाथ में दिया। किशोरी ने उसे स्वामी जी के हाथ में देकर, दोनों हाथों से प्रणाम किया।

स्वामी जी वहाँ से उठकर आशीर्वाद देते हुए वापस चले गये।

स्वामी जी के चले जाने के पश्चात् शमशेरसिंह ने किशोरी की ओर देखा वह चुपचाप बैठी थी। शमशेरसिंह को शांत देखकर उसने पूछा—

बाबू जी।

"हाँ।"

"आपने सुना ?"

"क्या ?"

किशोरी—स्वामी जी ने जो कुछ बताया है।

शमशेरसिंह—हाँ, सुना।

किशोरी—आप के प्रश्न का उत्तर मिला ?

शमशेरसिंह—किस प्रश्न का ?

किशोरी—कुछ पहले आप ने कहा था, भगवान क्या करने चाहते हैं !

शमशेरसिंह—हाँ, कहा था !

शमशेरसिंह ने किशोरी की ओर देखा, वह टक-टकी लगाकर देख रही थी। शमशेरसिंह के देखते ही उसने अपने नेत्रों को नीचा कर लिया।

यह देखकर शमशेरसिंह ने कहा—किशोरी !

किशोरी ने उनकी ओर देखा, गंभीरता पूर्वक देखा। उसने मुँह से कुछ उत्तर न दिया, किन्तु उसका दृष्टिपात, उसके हृदय की जिस भावना को व्यक्त कर रहा था, शमशेरसिंह उसके समझने की चेष्टा करने लगे !

सोलहवाँ परिच्छेद

शमशेरसिंह की सम्पत्ति और प्रभुता से प्रभावित होकर, किशोरी ने माँ का स्नेह भुलाकर अपना घर छोड़ देने का निश्चय कर लिया। शमशेरसिंह के साथ सदा सर्वदा के लिए चले आने के पूर्व, किशोरी ने अनेक प्रकार की बातें सोचीं—अनेक रुकावटों को अनुभव किया, किन्तु अंत में उसने साहस-पूर्वक सब की अवहेलना की, माँ की ओर

से आँखें बंद कीं और कल रात को माँ की निन्द्रा अवस्था में वह मकान से निकलकर बाहर आयी, आगे बढ़ते ही शमशेरसिंह का तेज़ इक्का उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसके आते ही शमशेरसिंह, किशोरी को लेकर इक्के में बैठे और क्षण-भर में वहाँ से ला-पता होगये !

बँगाली मुहाल से मीलों की दूरी पर बसे हुए आर्य नगर में शमशेरसिंह का इक्का जाकर रुका। पास ही एक मकान के दरवाज़े पर शमशेरसिंह ने हिम्मतसिंह का नाम लेकर आवाज़ लगायी ! बात-की-बात में मुंशी हिम्मतसिंह दरवाज़ा खोलकर बाहर आये और इक्के के पास जाकर किशोरी को उतरने के लिए कहा। हिम्मतसिंह उसे लेकर मकान के भीतर चले गये और इक्का वहाँ से शहर की ओर फिर लौट गया।

आर्य नगर का यह मकान शमशेरसिंह के एक मित्र ज़मींदार का मकान है। यह मकान सदा खाली रहता है। जब वे कभी कानपुर आते हैं, तो इसी में ठहरते हैं और उसके बाद वे फिर अपनी ज़मींदारी में लौट जाते हैं। शमशेरसिंह ने इस मकान में कुछ दिन ठहरने के लिए पहले से ही प्रबंध कर लिया था। इस नये मकान में शमशेर-सिंह जब किशोरी के साथ बैठे तो एक बार मुस्कराकर, उन्होंने किशोरी से पूछा—

किशोरी !

किशोरी ने उत्तर दिया—जी।

शमशेरसिंह—तुम्हारी तबीयत ठीक है ?

किशोरी—जी हाँ।

शमशेरसिंह—कुछ निर्बलता तो नहीं है ?

किशोरी ने अर्द्ध मुस्कान के साथ कहा—जी नहीं।

किशोरी का उत्तर सुनकर मुंशी जी ने कहा--किशोरी में निर्बलता नहीं हो सकती।

शमशेरसिंह ने पूछा—यह तुमने कैसे जाना !

मुंशी जी—हम जानते हैं।

शमशेरसिंह—कैसे !

मुंशी जी—इसलिए कि किशोरी को हमने आप से पहले देखा है पहले से बातें की हैं और आप से पहले समझा है।

शमशेरसिंह ने हँसकर किशोरी की ओर देखा और पूछा—किशोरी, मुंशी जी का कहना सही है ?

किशोरी ने मुस्कराकर कहा—जी हाँ !

शमशेरसिंह कुछ सोचने लगे। किशोरी उनकी ओर देख रही थी। इसी समय शमशेरसिंह ने कहा—मुंशी जी, देखिए कितना बजा है।

मुंशी जी ने कोट की जेब में पड़ी हुई घड़ी में देखा और लौटकर कहा—सवा दो।

शमशेरसिंह ने किशोरी से पूछा—तुम्हें नींद लगी है ?

किशोरी ने मुस्कराकर कहा—और आपको ?

शमशेरसिंह—न।

किशोरी—न।

किशोरी के इस उत्तर को शुनकर मुन्शी हिम्मतसिंह को हँसी आ गई। शमशेरसिंह भी मुस्कराने लगे। कुछ देर ठहरकर उन्होंने कहा—किशोरी।

"जी।"

"तुमने जिस रास्ते पर पैर रखा है, उसमें आपत्ति भी आ सकती है।"

किशोरी—आने दीजिये।

"तुम उसके लिए तैयार हो?"

"जी हाँ।"

शमशेरसिंह—कहाँ तक?

"जहाँ तक जरूरत होगी।"

कुछ देर रुककर शमशेरसिंह ने कहा—इस सम्बन्ध में हम लोग यदि कुछ बातें करलें तो ठीक ही होगा।

किशोरी—जी हाँ।

शमशेरसिंह ने एक गंभीर सांस लेकर कहा—तुम्हारी मां ने यदि कानूनी कार्यवाही की और पुलिस में रिपोर्ट की तो हमारे और तुम्हारे नाम वारंट निकलेगा।

किशोरी—निकलने दीजिये।

शमशेरसिंह—तुम इसके लिये तैयार हो?

किशोरी—जी हाँ।

शमशेरसिंह—मुकदमा चलने पर तुम क्या बयान दोगी?

किशोरी—जैसा आप बताइए।

शमशेरसिंह—हिन्दू ला में तुमको ऐसा करने का अधिकार नहीं है।

किशोरी—किन्तु अपने ऊपर मेरा अपना अधिकार है।

मुन्शी जी ने हँसकर कहा—ठीक!

शमशेरसिंह कुछ सोचने लगे। मुन्शी जी चुपचाप बैठे थे। किशोरी ने साहस पूर्वक कहा—मैं आपके ऊपर कोई आपत्ति न आने दूँगी। सारा अपराध अपने सिर पर लेने के लिये मैं तैयार हूँ।

शमशेरसिंह ने मुन्शी जी की ओर देखते हुए कहा—मुन्शी जी, किशोरी को कुछ समझाने की जरूरत नहीं है।

मुन्शी जी—जी नहीं।

शमशेरसिंह चुप हो रहे। मुन्शी जी ने फिर कहा—हमारा अनुमान है कि बाई जी कुछ न करेंगी

शमशेरसिंह—यह अभी कैसे कहा जा सकता है?

मुन्शी जी ने अँगड़ाई लेते हुए कहा—यदि वे कुछ करेंगी भी तो उसके लिए हम लोगों को तैयार रहना चाहिये।

शमशेरसिंह—यह तो ठीक है।

शमशेरसिंह ने किशोरी की ओर देखा, और फिर मुन्शी जी से कहा—मुन्शी जी, यहां पर बने रहने में कोई हानि तो नहीं है!

मुन्शी जी—मेरा तो विचार यह है कि दो चार दिनों के बाद हम लोग देवीगंज चलें और वहीं पर कुछ दिनों तक रहें।

शमशेरसिंह—मैंने भी इस बात को सोचा है।

मुन्शी जी—यदि कोई कार्यवाही की भी गई तो वहाँ की पुलिस अपने हाथ में है।

मुन्शी जी—वहां पर लियाकत अली जब तक दारोगा है, तब तक हम लोगों को किसी बात की चिन्ता नहीं है।

शमशेरसिंह—बिल्कुल नहीं।

शमशेरसिंह के चुप होने पर मुन्शी जी ने कहा—हमारा विचार है कि थोड़ी देर आप लोग सो लेवें।

मुन्शी जी की बात को सुनकर किशोरी ने शमशेरसिंह की ओर देखा।

इसके पश्चात् मुन्शी जी वहां से उठकर अपने लेटने के स्थान पर चले गये। शमशेरसिंह जिस चारपाई पर बैठे थे, उसी पर लेट गये और किशोरी के लेटने का रास्ता देखने लगे।

वह अब भी बैठी हुई थी। शमशेरसिंह ने कहा—किशोरी।

किशोरी ने कुछ उत्तर न देकर शमशेरसिंह की ओर देखा। उसकी आँखों में न तो आलस था और न किसी प्रकार का भय! उसकी इस अवस्था का अनुभव करते हुए शमशेरसिंह ने कहा-किशोरी!

"जी।"

"तुमको पाकर आज मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

किशोरी ने कुछ उत्तर न दिया।

शमशेरसिंह ने फिर कहा—तुम्हारे प्रेम ने मुझे जिस प्रकार हताहत् बना रखा था, उसे बताया नहीं जा सकता।

किशोरी ने मदोन्मत्त नेत्रों से शमशेरसिंह की ओर देखा। उन्होंने फिर कहा - यदि तुमने मेरा साथ न दिया होता तो तुम जानती हो, मेरे जीवन का क्या परिणाम होता है?

किशोरी ने अपना दाहिना हाथ शमशेरसिंह के वक्षस्थल पर रखकर कहा—और यदि आप ने मुझे इस रूप में न स्वीकार किया होता तो आप नहीं जानते कि किस घटना का जन्म होता!

शमशेरसिंह ने किशोरी के मुँह की ओर देखा, उसका सम्पूर्ण मुख-मण्डल सौन्दर्य की आभा से परिपूर्ण हो रहा था उसकी आँखों में यौवन की मदिरा झलक रही थी!

शमशेरसिंह ने धीरे-से कहा—किशोरी!

किशोरी ने शमशेरसिंह की ओर देखा, उसने कुछ उत्तर न दिया।

शमशेरसिंह—तुम सोओगी नहीं?

"नींद नहीं है।"

"क्यों?"

"यह नहीं मालूम।"

"फिर किसको मालूम है?"

किशोरी ने मुँह बनाकर कहा—यह भी नहीं मालूम !

शमशेरसिंह चुप हो रहे। किशोरी ने आगे फिर कहा—आप सोना चाहते हैं ?

शमशेरसिंह—हाँ, सोचता हूँ, एक-दो घण्टा हम लोग सो लेवें।

किशोरी ने कुछ उत्तर न दिया।

शमशेरसिंह ने फिर कहा—क्यों !

किशोरी—आप सो जाइए।

शमशेरसिंह—और तुम ?

"मुझे नींद नहीं है।"

"फिर भी चेष्टा करो।"

"इसकी क्या आवश्यकता है !"

शमशेरसिंह ने आश्चर्य चकित होकर किशोरी की ओर देखा। उसने फिर कहा—जो सुख जीवन के उन्माद में मिलता है, वह शांति और नींद में नहीं मिलता !

शमशेरसिंह ने गंभीर होकर उसकी ओर देखा और कहा—उन्माद !

किशोरी—हाँ, उन्माद !

"इस उन्माद का परिणाम !"

"इसको कौन सोचता है !"

"और यदि सोचा जाय ?"

"तो वह अच्छा ही जान पड़ता है।"

शमशेरसिंह ने अवाक् नेत्रों से किशोरी की ओर देखा, उनके मुँह से कुछ न निकला। किशोरी ने फिर कहा—प्रत्येक मनुष्य जीवन का सुख चाहता है,

शमशेरसिंह—किन्तु वह सुख ?

किशोरी ने गंभीरता पूर्वक कहा—जीवन का सुख, जीवन के एक उन्माद के सिवा कुछ नहीं है !

किशोरी चुप हो गयी। शमशेरसिंह के नेत्र किशोरी को देख रहे थे। वे चुप थे। ऐसा जान पड़ता था, जैसे वे सब कुछ भूल गये हों। अनेक क्षण शांत रहकर उन्होंने कहा—

किशोरी, आज तुम्हारी बातों को सुनकर मैं जीवन का सब-कुछ भूल रहा हूँ। ऐसा जान पड़ता है कि अबतक मैंने जो कुछ समझा था, वह सब की सब मेरी भूल थी। तुम्हारी बातों में जो आलोचना है, उसने मुझे पता नहीं कितनी देर के लिए चेतना हत् बना दिया है !

किशोरी चुपचाप बैठी थी। उसके कुछ न बोलने पर शमशेरसिंह ने फिर कहा—किशोरी, तुमने इस प्रकार की बातें और कभी नहीं कीं !

किशोरी ने एक बार छत की ओर देखा और कहा—तब मेरे साथ जीवन का उन्माद न था !

शमशेरसिंह—और आज ?

किशोरी—और आज जीवन का उन्माद मेरे जीवन के साथ है !

शमशेरसिंह ने किशोरी की ओर देखा, उन्होंने कुछ उत्तर न दिया।

सत्रहवाँ परिच्छेद

अपराध करने के पश्चात् मनुष्य का शक्तिशाली आत्मा भी निर्बलता अनुभव करने लगता है। शमशेरसिंह का स्वभाव जितना ही आग्रहपूर्ण, उतना क्रूर और निर्दय रहा है। उन्होंने कभी किसी की उपेक्षा नहीं की, जो कुछ सोचा है, वही किया है; ऐसा करने में जिस लाभ हानि का सामना करना पड़ा है, उसमें उन्होंने अधिक सोच-विचार नहीं किया, किन्तु किशोरी को अपने साथ ले आने के पश्चात् वे कभी-कभी अनेक प्रकार की बातें सोचने लगते हैं।

आर्य नगर के मकान में किशोरी ने कई दिन बताये। उसके मनोभावों पर किसी समय संकोच की रेखायें नहीं पैदा हुई। इन दिनों में उसने जिस साहस से काम लिया है, उसको पहले उसने कभी सोचा न था। माता का सम्पर्क छोड़ने के बाद उसने किसी समय, किसी प्रकार के भय का अनुभव नहीं किया। अप्रसन्नता और दुविधा भी उसके सामने बाधा के रूप में नहीं खड़ी हुई। कभी-कभी अकेली होने की अवस्था में उसने सोचा—

मैंने जो कुछ किया है, सोच-विचार कर किया है। प्रचलित सामाजिक व्यवस्था मेरी शत्रु बन सकती है, किन्तु वह मेरे सुख का साधन भी तो न थी। माँ को छोड़कर मेरा कोई न था। समस्त संसार को मैं सन्देह की दृष्टि से देखती थी और संसार की आँखें मुझे देखकर न जाने क्या समझती थीं! मेरे जीवन की पीड़ा, मेरे साथ थी—मन की व्यथाओं ने मेरे शरीर को क्रीड़ास्थल बना रखा था। मैं समाज की व्यवस्था के अनुकूल जीवन का एक-एक दिन काटती थी। किन्तु सुख और संतोष मेरे साथ न था!

मन की इन परिस्थितियों में वह कभी-कभी सोचती—मेरा आज का जीवन कुछ और है ! सामाजिक नियमों के पुराने वस्त्रों को मैंने चीर-फाड़ डाला है ! जीवन के जिस मार्ग में मैंने पदारोपण किया है, उसमें मेरा कोई अपराध नहीं है ! जिसने जन्म दिया है, उसने सदा सुखी रहने के लिए हमारे जीवन में बुद्धि की व्यवस्था की है। उससे काम लेना मेरा कर्त्तव्य है। इसको अपराध नहीं कहते ! मुझे कोई कुछ कह सकता है—अविचारक मुझे अपराधी के रूप में देख सकते हैं, परिचित और सम्बन्धी मेरे प्रति अनुचित धारणा बना सकते हैं. किन्तु मेरे हृदय पर उसका कोई प्रभाव नहीं है। इतनी बड़ी अवस्था तक मैंने जिस प्रकार का जीवन बिताया है, उसे मेरे सिवा और कौन जान सकता है ?

इसी प्रकार के भावोवेग में वह कभी-कभी सोचने लगती—मेरे जीवन का यह नया मार्ग सुखकर बन सकेगा या नहीं, इसे मैं स्वयम् नहीं जानती ! मैं यह भी नहीं जानती कि जिसे अपना बनाया है, वह अपना बनकर रह सकेगा या नहीं ? मैं तो केवल इतना ही जानती हूँ कि जिन पुराने मैलेवस्त्रों से मेरा हृदय प्रत्येक क्षण खिन्न रहता था, उनको उतार कर मैंने फेंक दिया है। यह ठीक है कि मेरा शरीर आज वस्त्रावरणहीन हो रहा है। जिसमें शीत और ग्रीष्म—दोनों का मुझे सामना करना पड़ेगा। मैं इस बात को समझती हूं और यह भी समझती हूँ, कि आने वाला जीवन बिल्कुल ही अनिश्चित् और अनिश्चयात्मक है। किन्तु उसकी मुझे कोई चिन्ता नहीं है। एक पुराने फोड़े की असह्य पीड़ा को मिटाने के विचार से, डाक्टरों का आपरेशन अच्छा मालूम होता है !

अपने इन विचारों के साथ किशोरी ने नवीन जीवन के दिनों को बिताना आरम्भ किया। वह सदा प्रसन्न रहती है। सब के साथ हँसती

बोलती है और खूब बातें करती है। उसके सामने किसी प्रकार की दुश्चिन्ता नहीं है। किन्तु शमशेरसिंह की अवस्था कुछ और है। वे कभी-कभी दुश्चिन्ता में पड़ जाते हैं। अपनी स्त्री—रतना का संकोच भी उनको कभी-कभी विक्षुब्ध बना देता है। सामाजिक बंधन भी उनको कम भयभीत नहीं करता और मित्रों तथा परिचितों का उपहास भी उन्हें कम भयानक नहीं मालूम होता! जहां जीवन में ये सब बातें एक ओर हैं, वहीं दूसरी ओर किशोरी के साथ स्नेह, उसका यौवन कालीन सौन्दर्य और उसकी वाक्-पटुता का प्रलोभन भी कम नहीं है। इन दोनों प्रकार के वातावरण को साथ लेकर शमशेरसिंह ने किशोरी को हुसैनगंज पहुँचाया है।

किशोरी को अपना घर छोड़ने के बाद मुन्शी हिम्मतसिंह आज तक वहाँ नहीं गये। इसीलिए वहां के समाचारों का कुछ पता नहीं है।

एक दिन शमशेरसिंह ने हिम्मतसिंह को बुलाकर कहा—मुन्शी जी।

"जी।"

"मैं सोचता हूं कि...।"

मुन्शी जी ध्यान पूर्वक सुन रहे थे। शमशेरसिंह ने कुछ रुक कर कहा—कि आप कानपुर चले जाइए।

मुन्शी जी—बहुत अच्छा।

"वहां जाकर आप बाई जी के मकान पर जावें और देखें कि वहां का...।"

मुन्शीजी ने बीच ही में बात काटकर कहा—बाई जी के मकान पर जानेमें मैं डरता नहीं, लेकिन...।

"लेकिन!"

मुन्शी जी—लेकिन वहां जाना चाहिये या नहीं, इसको सोच लेना—चाहिये।

शमशेरसिंह—हां, ठीक है।

मुन्शी जी—मेरा विचार है कि मुझे कानपुर जाना चाहिये। किन्तु मैं एकाएक बाई जी के घर न पहुंचूं।

शमशेरसिंह—अच्छा।

मुन्शी जी—फिर जैसा आपका विचार हो।

मुन्शी जी ने कुछ देर चुप रहकर कहा—मेरी समझ में वहां का समाचार बाहर-बाहर लेना चाहिये और उसके पश्चात् फिर जैसा अवसर हो।

शमशेरसिंह—लेकिन कैसे पता लिया जाय?

मुन्शी—पता?

शमशेरसिंह—हां, पता।

मुन्शी जी ने कुछ सोचते हुए कहा—पता लेने के बहुत रास्ते हैं।

शमशेरसिंह—बहुत रास्ते हैं!

मुन्शी जी—जी हां।

"जैसे!"

"जैसे कि महरी जो बरतन धोने आती थी, उसके यहां जाकर मिला जाय।"

शमशेरसिंह—और!

मुन्शी जी—दूसरा यह कि अपने किसी अपरिचित आदमी को भेजकर वहां की बातों का पता लगाया जाय।

शमशेरसिंह चुप हो रहे। उनको चुप देखकर मुन्शी जी ने कहा—आप का क्या विचार है।

शमशेरसिंह—हां, ठीक है।

कुछ रुककर उन्होंने फिर कहा—मुन्शी जी।

"जी।"

"आपको कौन-सा रास्ता अच्छा लगता है?"

"मुझे?"

शमशेरसिंह ने कहा—हां, आपको।

मुन्शी जी ने कुछ सोचकर कहा—मैं सोचता हूँ कि कल मैं कानपुर चला जाऊँ और वहां से किसी आदमी को बाई जी के मकान पर भेजूँ।

शमशेरसिंह—किस आदमी को?

मुन्शी जी—यह तो मैं कानपुर जाकर सोचूँगा।

"कानपुर जाकर?"

"जी हां।"

"लेकिन कुछ यहीं से अनुमान लगाइए।"

"यहां से अनुमान लगाना तो कठिन जान पड़ता है।"

"फिर वहां आपको कौन मिल जायगा?"

"वहां?"

"हां, वहां।"

"वहां कोई न कोई मिल ही जायगा।"

शमशेरसिंह ने कुछ रुककर कहा—हमारे पूछने का अभिप्राय यह है कि वह आदमी समझदार होना चाहिए।

मुन्शी जी—जी हां।

शमशेरसिंह—कहीं ऐसा न हो कि···।

मुन्शी जी—नहीं, इससे निश्चिन्त रहिए।

शमशेरसिंह—यह ठीक है।

"लेकिन?"

शमशेरसिंह ने कहा - उन सभी बातों को हम लोग आपस में ले लें......!

मुन्शी जी -- तो बहुत अच्छा है।

शमशेरसिंह—हां, बहुत अच्छा है।

मुन्शी जी चुप हो रहे। कुछ देर रुककर उन्होंने कहा—यदि कोई और आदमी दिखायी न पड़ा तो मैं बाबू जी के छोटे मुन्शी जी को भेजूँगा।

"कौन बाबू जी?"

"बाबू रामकिशोर अग्रवाल, वकील।"

शमशेरसिंह—अच्छा।

मुन्शी जी— उनका छोटा मुन्शी बहुत होशियार है।

"लेकिन वह......।"

मुन्शी जी—हां, वह जायगा।

'आप जानते हैं!'

"हां, जानता हूँ।"

कुछ देर रुककर शमशेरसिंह ने पूछा - तो वह वहां पर क्या करेगा!

मुन्शी जी—बाई जी के मकान पर जाकर वह मुझे पूछेगा और कहेगा कि मुन्शी जी नम्बरदार के साथ दस दिन पहले इलाहाबाद गये थे, वे लौटे कि नहीं।

शमशेरसिंह कुछ सोचने लगे। मुन्शी जी ने फिर कहा—इस बहाने जब वह आदमी बाई जी के पास पहुँचेगा, तो अपने आप कुछ बातें होने लगेंगी।

शमशेरसिंह – अच्छा और यदि इससे रहस्य न खुला तो?

मुन्शी जी—तो फिर कुछ और सोचना पड़ेगा।

शमशेरसिंह—क्या ?

मुन्शी जी—मैं महरी से मिलूँगा।

"हाँ, महरी से मिलने पर सभी बातें आसानी से मालूम होंगी—"शमशेरसिंह ने कहा।"

"महरी बहुत समझदार है—"मुन्शी जी ने मुस्कराकर कहा।

शमशेरसिंह—हाँ, समझदार है। वह बातें भी बहुत करती है और उससे सभी बातों का रहस्य मालूम हो जायगा।

मुन्शी जी—चुप हो रहे, शमशेरसिंह ने भी कुछ देर तक कुछ न कहा। मुन्शी जी को चुप देखकर उन्होंने कहा—यदि वहाँ जाने पर और पता लगाने पर मालूम हो कि बाई जी ने कुछ नहीं किया तो मेरी समझ में उनसे मिलने पर हानि है ?

हानि ?

हाँ !

सोच लीजिए।

शमशेरसिंह—हमारी समझ में तो कोई हानि नहीं है, लेकिन उस अवस्था में जब कि उन्होंने अब तक कोई कार्यवाही न की हो।

मुन्शी जी—लेकिन ऐसा हो नहीं सकता।

"क्या ?"

"यही कि उन्होंने अब तक कुछ न किया हो।

शमशेरसिंह—आपका क्या विचार है ?

मुन्शी जी—मेरा तो यही अनुमान है कि वे चुप न बैठेंगी।

शमशेरसिंह चुप हो रहे। मुन्शी जी ने फिर कहा—इस के लिए सबसे पहला काम तो यह है कि कानपुर जाकर किसी प्रकार वहाँ का समाचार लेना चाहिये और फिर उसके बाद सोचा जाय कि अब क्या करना है। मैं पहले एकबार कानपुर होकर लौट आऊँ और आपको

सब समाचार बताऊँ, इसके बाद फिर सोचिये कि अब क्या करना चाहिये !

शमशेरसिंह—हाँ, यह भी ठीक है। लेकिन एक बात और है।

मुन्शी जी—क्या ?

आप कानपुर जाकर, सबसे पहले नवघड़े के अपने मकान पर जाइए, वहाँ देखिए कोई बात तो नहीं है।

मुन्शी जी—कैसी बात ?

शमशेरसिंह—मेरे कहने का मतलब यह कि यदि कोई कार्यवाही हुई होगी तो इस मकान में नटकी बात अवश्य आई होगी। इसलिए सबसे पहले आप अपने इस मकान में जाइए। क्योंकि अपना वह मकान तो सभी को मालूम है और बाई जी को भी मालूम है। मकान पर अपना नौकर रहता है, उससे इन बातों का पता चल जायगा।

मुन्शी जी ने सतर्क होकर पूछा—और यदि वहाँ से इस प्रकार की बातों का कुछ पता चला तो ?

शमशेरसिंह—तो क्या ?

मुन्शी जी—तो फिर मैं क्या करूँगा ?

शमशेरसिंह—मैं समझा नहीं !

मुन्शी जी—आपका ध्यान नहीं और मालूम होता है। मैं कहता हूँ कि मान लीजिए, अपने मकान से इन बातों का पता चला और जैसे कि यहाँ चिन्ता की जा रही है, यही बात हुआ भी तो मैं कानपुर में ठहरूँगा या लौट कर चला आऊँगा ?

शमशेरसिंह—मेरे विचार से आप लौट कर पहले यहाँ सब बता जाइये। इसके बाद हम और आप सोचेंगे कि आगे क्या होना चाहिये

इसी निर्णय के अनुसार मुन्शी हम्मतसिंह दूसरे दिन कानपुर चले गये।

अठारहवाँ परिच्छेद

देहात में आने और रहने का संयोग किशोरी के जीवन में पहला अवसर है। जिसने यहाँ के देहात नहीं देखे और जिसको जन्म से लेकर बड़ी अवस्था तक बड़े-से-बड़े शहर में ही बीता है, उसको देहाती जीवन का कुछ भी ज्ञान नहीं हो सकता। इस अवस्था में किशोरी के सामने आज एक नया संसार है।

शमशेरसिंह ने किशोरी को देवीगंज में जिस मकान में रखा है, वह उनके पुराने घर से बिल्कुल अलग है। शमशेरसिंह एक ज़मीदार हैं, उनका बहुत बड़ा प्रभाव है; उनके जीवन में सब प्रकार की सुविधायें हैं। उनकी स्त्री—रतनी जिस घर में रहती हैं, उसका, इस घर से कोई सम्बन्ध नहीं है। किशोरी की सेवा और सहायता के लिये शमशेरसिंह ने चन्दा को रख दिया है।

किशोरी के यहाँ आने पर किसी प्रकार की बड़ी चर्चा नहीं होने पाई, शमशेरसिंह ने इसका बहुत ध्यान रखा है। फिर भी कुछ इने-गिने आदमियों में किशोरी का आना प्रकट हो गया है। गांव की अधिक स्त्रियाँ किशोरी के पास न पहुँचे, इसका भी प्रबन्ध रखा गया है। किन्तु इतना सब होने पर भी एक-दो स्त्रियाँ वहाँ पहुँच ही जाती हैं। जो स्त्रियाँ आती हैं, किशोरी उनके पास बैठकर प्रेम से बात करती हैं। देवीगंज की अनेक बातों को वह समझने की चेष्टा करती है। जिन बातों को वह नहीं जानती, उनको जानने का प्रयत्न करती है।

आने वाली स्त्रियों के व्यवहारों को देखकर किशोरी को बहुत आश्चर्य मालूम होता है। कभी-कभी तो ऐसा होता है कि जो स्त्रियाँ आजाती हैं, वे किशोरी के पास बैठकर घण्टों मुँह ताका करती हैं, किशोरी को नीचे से ऊपर तक बार-बार देखती हैं किन्तु मुँह से कुछ

कहती नहीं। आयी हुई स्त्रियों का चुपचाप बैठा रहना और आश्चर्य के साथ बार-बार देखना किशोरी को विस्मय जनक जान पड़ता है। वह स्वयम् उनसे बातें करना चाहती है, किन्तु परिचय न होने के कारण उनसे कुछ पूछने में उसे बड़ा कष्ट मालूम होता है।

एक दिन तीन स्त्रियों ने किशोरी के घर में प्रवेश किया। उनमें दो अधेड़ और एक नयी अवस्था की स्त्री थी। किशोरी की चारपाई के पास एक दूसरी चारपाई बिछी थी, उनको देखकर किशोरी ने आदरपूर्वक बुलाया और चारपाई पर बैठने का संकेत किया। कुछ देर तक वे तीनों चुपचाप बैठी रहीं। इसके बाद उनमें से एक स्त्री ने किशोरी की ओर देखकर पूछा—

"तुम कौन हो ?"

किशोरी ने सुनकर मुस्करा दिया। उसने कुछ उत्तर न दिया।

इसी समय उसने फिर पूछा—तुम कौन हो, यहां कैसे आयी हो !

किशोरी ने धीरे-से हँसकर कहा—आपको इन बातों का जवाब नम्बरदार देंगे।

"नम्बरदार जवाब देंगे ?"

किशोरी—हाँ।

"और तुम ?"

किशोरी—मुझे इनका जवाब नहीं मालूम।

किशोरी की इस बात को सुनकर आने वाली तीनों स्त्रियां आपस में कानाफूसी करने लगीं। वे एक-एक करके किशोरी को देखतीं और फिर आपस में एक दूसरे के कान में बात करतीं।

किशोरी इन व्यवहारों को देखकर, उनके सामने अपने आप को एक अपराधी के रूप में अनुभव करती। कभी-कभी उसे मन-ही-मन संकोच भी मालूम होता।

इसी समय आने वाली स्त्रियों में से दूसरी स्त्री ने पूछा—हम लोगों को मालूम नहीं है, इस लिए तुमसे पूछा है कि तुम कौन हो और नम्बरदार के साथ कैसे आयी हो ?

किशोरी ने कहा—आपको इन बातों का उत्तर नम्बरदार बतावेंगे।

स्त्री—और तुम न बतावोगी ?

किशोरी—मुझे बताना नहीं आता।

किशोरी की इस बात को सुनकर तीनों स्त्रियाँ आपस में हँसने लगीं। कुछ देर के बाद तीसरी युवती स्त्री ने अपने साथ की स्त्रियों से कहा—नम्बरदार ने इनके साथ अपना व्याह किया है।

"व्याह किया है ?"

"हाँ व्याह किया है।"

"तो क्या नम्बरदार के स्त्री थी नहीं ?"

"स्त्री तो थी।"

"तो फिर ?"

युवती ने उत्तर दिया—उन्होंने अपना यह दूसरा व्याह किया है।

स्त्री—ऐसा भी कहीं व्याह होता है कि न कोई जाने और न समझे, और व्याह हो जाय !

युवती—हाँ होता है।

स्त्री—यह कैसे ?

युवती—दिदिया तुम नहीं जानती हो, अँगरेजी व्याह ऐसे ही होते हैं।

स्त्री ने हँसकर कहा—तो क्या यह मेम हैं ?

युवती हँस पड़ी। दोनों स्त्रियाँ भी हँसने लगीं।

किशोरी इन बातों को सुन रही थी। वह मन-ही-मन सोचने लगी देहात की स्त्रियाँ जब शहरों में जाती हैं और गलियों और सड़कों पर मारी-मारी फिरती हैं तो मुझे बड़ी दया लगा करती थी। मैं उनको देखकर रंज करती थी। पुस्तकों में उनके दुख की कहानियाँ पढ़कर कभी-कभी मैं रोने लगती थी। जिनके सम्बन्ध में मैंने अब तक दूर से जाना था, उन्हें आज करीब से देखने और समझने का मैंने अवसर पाया है। अत्यन्त निकट से इनको देखकर मैंने यह समझा कि देहात की स्त्रियों के संबंध में मैं जो कुछ जानती थी, वह सही न था, उनका वास्तविक जीवन यही है जो आज मेरे सामने है।

इसी समय एक स्त्री ने फिर पूछा—तुम रहोगी या चली जाओगी?

किशोरी को हँसी आ गयी। उसने कहा—मुझे यह भी नहीं मालूम।

किशोरी की बात को सुनकर तीनों स्त्रियाँ आपस में हँसने लगीं।

कुछ देर के बाद तीनो स्त्रियाँ उठकर चली गयी। जब वे बैठी थीं, उस समय चंदा भी आकर पास ही बैठ गयी थी। स्त्रियों के चले जाने के बाद चंदा ने मुँह बनाकर कहा—इन लोगों को बात करना नहीं आता।

किशोरी ने चंदा की ओर देखा और कहा—तुम इस बात को जानती हो!

उसने कहा—जी हां।

किशोरी ने चंदा की ओर देखा और कुछ रुककर पूछा—चंदा, मैं तुम्हारे संबंध में कुछ जानना चाहती हूँ।

चंदा, किशोरी के अभिप्राय को समझ गयी। उसने कहा—मैं नम्बरदार की बिरादरी की लड़की हूँ। मेरे पिता गरीब आदमी थे।

मैं जब बहुत छोटी थी तो मेरे पिता मेरी माँ को लेकर कलकत्ते चले गये थे, वहाँ पर उन्होंने एक मारवाड़ी के यहाँ नौकरी कर ली थी। जब मैं ग्यारह वर्ष की हुई तो मेरी माँ की मृत्यु हो गयी। उसके बाद मेरे पिता मुझे लेकर यहाँ चले आये थे और यहाँ पर वे नम्बरदार के यहाँ काम करने लगे थे। साल भर भी न बीता कि वे भी मुझे छोड़कर चले गये। तब से मैं नम्बरदार के साथ रहती हूँ।

किशोरी ने चंदा की यह कहानी ध्यान पूर्वक सुनी। उसे चंदा के ऊपर बड़ी दया आयी। उसने चंदा को अपने पास चारपाई पर बुलाकर बिठा लिया और पूछा—

चंदा, तुम्हारी अवस्था अब कितनी है?

चंदा—मेरी उम्र के पन्द्रह साल बीत चुके हैं, सोलहवाँ वर्ष आरंभ हो गया है।

किशोरी ने उसकी पीठ पर हाथ रखा और कहा—नम्बरदार के साथ रहने में तुमको कोई कष्ट तो नहीं है!

चंदा—नहीं।

"नम्बरदार ने तुम्हारे विवाह का कुछ प्रबन्ध नहीं किया?"

"शायद बातचीत चल रही है।"

किशोर ने पूछा—नम्बरदार की स्त्री तुमको प्यार से रखती हैं?

चंदा—जी हाँ।

तुमको अपने माता-पिता की कभी याद आती है?"

चंदा ने कुछ उत्तर न दिया, उसकी आँखों से कई एक आँसुओं के बूँद निकले और भूमि पर टपक पड़े। किशोरी उसके मुँह की ओर देख रही थी! चंदा का साँवला रंग था। भरा हुआ चेहरा था, बड़ी-बड़ी आँखें थी। वह स्वभाव की हँसमुख थी और सदा प्रसन्न रहती थी।

किशोरी चुपचाप बैठी थी। कुछ देर में चंदा ने किशोरी की ओर देखा और पूछा—आप अब जायँगी तो नहीं ?

किशोरी ने कहा—क्यों ?

चंदा ने संकोच के साथ अपना सिर नीचा कर लिया। और धीरे से कहा—आपके साथ रहने में मुझे बहुत अच्छा लगता है।

किशोरी ने पूछा—तुमको मेरे साथ अच्छा लगता है ?

चंदा ने उत्तर दिया—ऐसी तबीयत होती है कि मैं आपके पास बराबर बैठी रहूँ।

किशोरी ने चंदा की इस बात को ध्यान पूर्वक सुना, वह चंदा की ओर देख रही थी। चंदा ने फिर कहा—आप की बातें मुझे बड़ी अच्छी लगती हैं।

किशोरी ने हँसकर कहा—यदि मैं यहां से चली गयी तो ?

चंदा ने किशोरी की ओर देखकर कहा—तो मैं आप के साथ चलूँगी।

किशोरी ने चंदा का हाथ पकड़कर कहा—तुमने इतना स्नेह मुझसे क्यों कर लिया है ?

चंदा ने कहा—मैं इस बात को स्वयम् नहीं जानती।

"तुम क्या जानती हो ?"

"केवल इतना जानती हूं कि आपको छोड़ने को जी नहीं चाहता।"

किशोरी ने कुछ देर चुप रहकर कहा—तुम्हारी नम्बरदारिन जब तुम्हारी इस बात को सुनेंगी, तो बुरा मानेंगी।

चंदा—उनका स्वभाव बड़ा खराब है।

किशोरी—यह तुमने कैसे जाना ?

चंदा—वे बहुत क्रोध किया करती हैं।

किशोरी ने कुछ उत्तर न दिया। चन्दा ने फिर कहा—नम्बरदार की उनसे कभी पटती नहीं है।

किशोरी—क्यों ?

चन्दा—यह मैं नहीं जानती।

इसी समय एक बूढ़ी स्त्री ने भीतर आकर कहा—चन्दा, तुमको मालकिन बुला रही हैं।

बुढ़िया की इस बात को सुनकर चन्दा ने किशोरी की ओर देखा और कहा—अभी थोड़ी देर में मैं लौटकर आ जाऊँगी।

किशोरी ने चन्दा की बात को सुनकर कहा—अच्छा, चन्दा, बुढ़िया के साथ-साथ वहां से चली गयी।

उन्नीसवाँ परिच्छेद

देवीगंज में किशोरी के जितने ही दिन बीतते जाते थे, वहाँ के स्त्री-पुरुषों के साथ किशोरी का संबंध उतना ही गहरा होता जाता था। पहले पहल देवीगंज की स्त्रियों ने जिस दृष्टि से उसे देखा था, उसमें अब बड़ा अन्तर पड़ गया है। आने-जाने वाली स्त्रियों के निकट किशोरी अत्यन्त समझदार-बुद्धिमती और व्यवहार कुशल प्रमाणित हुई है। इसी लिए देवीगंज के घर-घर किशोरी की प्रशंसा की चर्चा है।

जो स्त्रियां किशोरी के पास आती हैं, वे उसकी बातचीत से प्रसन्न होती हैं। लौटकर अपने घरों पर जब जाती हैं तो वे दूसरी स्त्रियों से उसकी प्रशंसा करती हैं। कोई कहती है—स्त्रियाँ तो हमने बहुत देखीं, लेकिन किशोरी की तरह हमें कोई अभी तक नहीं मिली। उसकी बातचीत में कितना मोह है—कितनी ममता है। उसके व्यवहारों में कितना स्नेह भरा हुआ है और बातों में जान पड़ता है, जैसे फूल झड़ते हों।

कुछ स्त्रियां कहतीं—किशोरी पढ़ी-लिखी है। पढ़े-लिखे आदमी के चार आंखें होतीं हैं। उसकी बातें हम जैसे मूर्खों की तरह नहीं होतीं। किशोरी का स्वभाव नम्रता से भरा हुआ है। जब स्त्रियां उसके पास जाती हैं तो वह बड़े आदर के साथ बिठातीं है और बहुत प्रेम से बातें करती हैं।

किशोरी की आलोचना करते हुए स्त्रियाँ कहतीं—हम लोगों के जाने पर वह ऐसे मिलती है, जैसे बहुत पुरानी मित्रता हो। घण्टों बातें करती है। हम लोगों के घरों के छोटे-बड़े बच्चों का हाल पूछती है और किसी के बच्चे को कुछ तकलीफ होती है तो तरह-तरह के उपाय बताती है। हम लोग तो अपने बच्चों को छोड़कर दूसरे के बच्चों से प्रेम करना जानती ही नहीं।

किशोरी के संबंध में इस प्रकार की बातें करती हुई कोई स्त्री कहतीं—शहर के और देहात के आदमी में बड़ा अंतर होता है। किशोरी शहर की रहने वाली है। शहर में पैदा हुई है और शहर में ही इतनी बड़ी हुई है। शहरों की जिन्दगी का क्या कहना है। इसीलिए तो पुराने आदमी कह गये हैं, "शहर बसन्ते देवा नाम।" शहरों में मनुष्य नहीं, देवता लोग बास करते हैं। देवता हैं ही। हम लोग जब कभी मेला या गंगा-स्नान के बहाने वहां पहुँच जाती हैं तो बड़ा अच्छा लगता है। तबीयत होती है कि यहाँ से लौटकर न जाँय। यहां पर कुँओं में पानी भरे-भरे हाथों की गति हो जाती है। शहरों की क्या बात है। एक-एक घर में दो-दो, तीन-तीन पानी के पम्पे लगे हैं। उनको ज़रा-सा छू दिया कि मकान में पानी-ही-पानी होगया। शहरों की तो बात ही दूसरी है। वहाँ से सभी स्त्री-पुरुष पढ़े-लिखे होते हैं।

देवीगंज में किशोरी ने अपने व्यवहारों से सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। जो स्त्रियाँ पहले पहल ऊट-पटांग के प्रश्न करती थीं, वे स्वयम् अपने ऊपर लज्जित होती हैं। अब तो अवस्था

यह है कि एक, दूसरे से किशोरी की प्रशंसा सुनकर, किशोरी से मिलने आती हैं।

इतना सब होने पर भी शमशेरसिंह की स्त्री—रतनी किशोरी से प्रसन्न नहीं है। वे पहले भी शमशेरसिंह के ऊपर जली-भुनी रहा करती थीं और अब तो उनकी नाराज़गी का ठिकाना ही नहीं है। चन्दा के अधिक आने के कारण वे उसे बराबर डांटा करती हैं। किन्तु चन्दा के ऊपर उनकी डांट-फटकार का कुछ प्रभाव नहीं है। वह प्राण बचाकर किशोरी के पास आती है और यहां से उसका लौटने को जी नहीं चाहता।

एक दिन की बात है दोपहर के चार बज चुके थे। रतनी ने चंदा को किशोरी के पास आने से रोक रखा था। लेकिन उसका जी मानता न था। चार बजने के बाद उसको कुछ मौका मिला, वह रतनी की आंखें बचाकर किशोरी के पास चली आयी। किशोरी उसकी इस हालत को समझती थी। उसने पूछा—

चंदा, आज सुबह से तुम आयी नहीं?

चंदा—मालकिन ने मना कर रखा था।

"मना कर रखा था?"

'हां।'

"क्या कहा था?"

'यों तो वह रोज ही बकती रहती हैं।'

"क्या?"

चंदा ने कुछ उत्तर न दिया, उसका सिर भारी हो रहा था। किशोरी ने मुस्करा पूछा—चंदा?

"जी।"

"बोलो।"

चंदा ने फिर भी कुछ उत्तर न दिया। किशोरी ने फिर कहा क्या मालकिन ने बहुत डांटा है ?

चंदा—वे तो रोज़ ही डांटती रहती हैं।

किशोरी—क्या कहती हैं ?

चंदा ने कहा—कहती हैं, वहां मत जाया करो।

किशोरी—मेरे पास !

चंदा—जी।

किशोरी—फिर ?

चन्दा—जब मैं नहीं मानती हूँ तो मुझे बुरी-बुरी गालियां देती हैं।

किशोरी ने देखा चन्दा का चेहरा उदास हो रहा था। उसकी आंख नीचे को थीं। किशोरी ने कहा—चन्दा, तुम इस बात को बुरा क्यों मानती हो। वे जो कुछ कहती हैं। उन्हें कहने दो।

चंदा चुपचाप बैठी हुई सुन रही थी। किशोरी ने उसकी तरफ़ देखकर कहा—तो तुम्हारी मालकिन की नाराज़ी सिर्फ़ इसीलिए है कि तुम मेरे पास आती हो।

चंदा—जी हां।

किशोरी—तो फिर तुम न आया करो।

चन्दा ने सिर उठाकर किशोरी की ओर देखा और पूछा—क्यों ?

किशोरी—इसलिए कि तुम्हारी मालकिन नहीं चाहतीं कि तुम मेरे पास आओ।

किशोरी की बात को सुनकर चंदा ने अपना सिर नीचा कर लिया। किशोरी उसके मुँह की ओर देख रही थी। उसके देखते-देखते चंदा के नेत्रों से आंसू निकल पड़े जिनको चंदा ने अपनी धोती के एक किनारे से पोंछा। यह देखकर किशोरी का हृदय सहम उठा। उसने पूछा—चंदा, तुम रोयी क्यों ?

किशोरी की बात सुनकर चंदा के हृदय का दुख और भी उमड़ पड़ा। वह रोने लगी। रोते-रोते उसने कहा—मैं गरीब हूँ बिना माँ-बाप की हूँ, मेरे कोई नहीं है। इसीलिए तो वे मुझे रोज़ गालियाँ दिया करती हैं!

चंदा के मुँह से निकले हुए शब्दों को किशोरी ने सुना। उसके हृदय के टुकड़े-टुकड़े हो रहे थे। किशोरी के कानों में जैसे कोई बार-बार कह रहा था, जिसके कोई नहीं होता उसका यही हाल होता है। गरीब और अनाथ को सब कोई सब कुछ कह सकता है! किशोरी के नेत्र चन्दा को देख रहे थे। उसने गद्‌गद कण्ठ से कहा—चन्दा मैं जो तुम्हारी हूँ। तुम मुझे अपना समझती हो। मुझसे प्रेम करती हो फिर मुझे क्यों भूल जाती हो! तुम मेरी हो—मैं तुम्हें कभी भूल नहीं सकती! मैं चाहूँगी, तुम मुझसे कभी दूर न हो! चन्दा चुप हो गयी। उसने बड़ी देर तक अपने मुँह से कुछ न कहा। इसी समय किशोरी ने पूछा—चन्दा।

"जी।"

"तुम्हारी इन बातों को नम्बरदार जानते हैं?"

चन्दा—जी हाँ।

"क्या तुमने उनसे कभी शिकायत की?"

चन्दा—जी नहीं।

"तो फिर वे कैसे जानते हैं?"

"वे उनके सामने भी गाली देने लगती हैं।"

"उनको सुन कर नम्बरदार कभी कुछ कहते हैं?"

चन्दा—जी नहीं।

"उन्होंने मालकिन को इसके लिए कभी कुछ कहा नहीं?"

चन्दा—जी नहीं।

चन्दा चुप हो रही। किशोरी ने कुछ देर तक चुप रह कर कहा—क्यों चन्दा, तुम अब मालकिन के पास जाओगी तो वे तुमसे नाराज होंगी?

चन्दा ने कहा—हाँ।

"उनके नाराज होने पर तुम कभी कुछ जवाब देती हो?'

चन्दा—जी नहीं।

किशोरी ने चन्दा को संतोष देते हुए कहा—तुम यह ठीक करती हो। एक बात तुम और किया करो।

चन्दा ने किशोरी की ओर देखकर पूछा—क्या?

किशोरी–तुम उनकी बातों से रंज न किया करो।

चंदा ने किशोरी की ओर देखा उसने कुछ उत्तर न दिया। किशोरी ने फिर कहा—तुमको बहुत थोड़े दिन उनके साथ रहना है।

तुम्हारे ब्याह में अब बहुत दिन नहीं हैं! मैं तुम्हारा ब्याह ऐसे लड़के के साथ करूँगा जो पढ़ा-लिखा, सुन्दर, स्वस्थ और पैसे वाला होगा। जो तुमको बहुत प्यार करेगा। जब उसको मैं तुम्हें सौंप दूँगी तभी मैं तुमसे अलग होऊँगी।

चंदा ने गम्भीर होकर कहा—न।

किशोरी—क्यों?

चंदा—मैं आपके साथ रहूँगी!

किशोरी ने हँसकर कहा—चंदा, तुम बड़ी पगली हो।

इसी समय शमशेरसिंह ने घर में प्रवेश किया। चंदा वहां से उठ कर चली गई।

किशोरी ने शमशेरसिंह की ओर देखा। उनका मुख प्रसन्न था। उनकी आँखें हँसती हुई किशोरी की ओर देख रही थी। शमशेरसिंह ने किशोरी की चारपाई पर बैठकर कहा—मुन्शी जी आ गये।

'किशोरी ने उत्सुकता पूर्वक पूछा--कब ?

'अभी।'

"क्या समाचार लाये ?"

शमशेरसिंह ने मुस्करा कर कहा--चिन्ता की कोई बात नहीं है।

किशोरी ने आतुर नेत्रों से शमशेरसिंह की ओर देखा और पूछा--और कुछ ?

शमशेरसिंह—अधिक बातें फिर करेंगे।

किशोरी--लेकिन जितना आपने कहा है, इससे कुछ बोध नहीं होता।

शमशेरसिंह ने मुस्कराते हुए कहा-अभी तुम इतना ही जान लो कि चिन्ता की कुछ भी बात नहीं है। इसके बाद फिर किसी समय बैठकर विस्तार पूर्वक बातें करेंगे। उस समय मुन्शी जी भी होंगे।

किशोरी ने सतोष पूर्वक कहा—अच्छी बात है।

तीसवाँ परिच्छेद

किशोरी के पास बैठकर जब शमशेरसिंह ने मुन्शी हिम्मतसिंह से बातें करने का विचार किया तो वे बड़ी देर तक मन ही मन कुछ सोचते रहे। वे कभी किशोरी की ओर देखते थे और कभी मुन्शी जी की ओर। किशोर शमशेरसिंह की ओर देखकर उनके मुँह से कुछ सुनने का रास्ता देख रही थी।

इसी समय शमशेरसिंह ने कहा—मुन्शी जी, आप ने बड़े आदमियों की कही हुई उस बात को सुना है ?

मुन्शी जी—किस बात को ?

शमशेरसिंह—जिसमें उन्होंने बताया है कि जो कुछ होनहार होती है उसके साधन और सामान पहले से तैयार हो जाते हैं।

मुन्शी जी हँसकर कहा—हाँ सरकार, यह तो प्रत्यक्ष भी दिखाई पड़ता हैं;

शमशेरसिंह ने मुस्करा कर पूछा—कैसे ?

मुन्शी जी—किसी एक बात में नहीं, प्रत्येक बात में।

किशोरी ने अत्यन्त शांति के साथ पूछा—मुन्शी जी, आप और बाबू जी क्या आज पहेलियां बुझाने बैठे हैं!

मुन्शी जी ने जोर के साथ हँसकर कहा—नहीं तो ?

किशोरी में न जाने क्या सुनने के लिए व्याकुल हो रही हूं और आप लोग........।

शमशेर सिंह ने बीच में ही बात काट कर कहा—आप जो सुनना चाहती हैं, वही आपको सुनाया जायगा।

किशोरी—अच्छी बात है।

किशोरी चुप हो रही। शमशेर सिंह ने हिम्मत सिंह की ओर देखा और पूछा—मुंशी जी बताया नहीं तमने ?

मुन्शी जी—आप यही तो कहते हैं सरकार कि जो होनहार होती है, उसका मार्ग अपने आप बन जाता है।

शमशेर सिंह—हाँ, उसका अभिप्राय यही है।

मुन्शी जी ने मुस्कराते हुये कहा—किशोरी जी को देवीगंज में आना था, इसलिए उनका मकान किराये पर लिया गया था।

शमशेर सिंह—यही बात है।

मुन्शी जी—किशोरी की माँ का मकान किराए पर लेना था और उसमें रहना था, इसीलिए उसके पहले गंगा जी के मार्ग मे आप से और किशोरी जी से भेट हुई थी।

शमशेर सिंह ने मुस्करा कर कहा—यह भी ठीक है।

मुन्शी जी—इस प्रकार यदि आप देखेंगे तो सभी बातों को कुछ इसी ढङ्ग पर पावेंगे।

इन बातों को सुनकर किशोरी को कुछ संतोष न मिल रहा था। वह कुछ कहना ही चाहती थी कि तब तक शमशेर सिंह ने कहा—मुन्शी जी कानपुर में आप क्या कर आये ?

मुन्शी जी—कानपुर में मैंने वही किया, जिसे आप चाहते थे।

किशोरी ने मुँह बनाकर कहा—आप यह पहेली कब तक बुझाते रहेंगे।

मुंशी जी ने कुछ सोच कर कहा—मैंने आते ही सभी बातें सरकार से कह दी थीं। वे सब संक्षेप में इस प्रकार है कि आप की माँ—बाई जी ने न तो किसी प्रकार की रिपोर्ट की और न उसके सम्बन्ध में कुछ सोचा ही।

किशोरी ने पूछा—आपने कैसे जाना ?

मुशी जी—मैंने इस बात का पता पूरा-पूरा लगा लिया था। उसके बाद बहुत कुछ सोच समझकर मैं उनके पास गया।

किशोरी ने आश्चर्य के साथ पूछा—अच्छा, आप उनके पास गये भी थे ?

मुन्शीजी—जी हाँ!

किशोरी—फिर!

मुन्शी जी—बाई जी से भेंट हुई।

किशोरी विस्मत नेत्रों से मुन्शी जी की ओर देख रही थी: उसने पुछा—फिर क्या हुआ।

मुन्शी जी—उन्होने सदा की भाँति मुझसे बातें की। उनको मालूम था कि किशोरी सरकार के साथ गयी है ?

मुन्शी जी—जी हाँ।

किशोरी—यह कैसे मालूम था ?

मुन्शी जी यह तो मैं नहीं कह सकता, लेकिन उन्होंने मुझसे जिस प्रकार की बातें की उनसे मालूम हुआ कि वे इस घटना को समझ चूकी थी।

किशोरी —अच्छा फिर !

मुन्शी जी—उन्होंने मुझसे इतना ही कहा कि किशोरी ने अपना यह रहस्य मुझसे जाहिर नहीं किया। यदि मैं समझती कि उसका ऐसा विचार है तो मैं उसको रोकती नहीं।

किशोरी चुपचाप सुन रही थी मुन्शी जी ने फिर कहा—उनके साथ मेरी बातें बहुत देर तक होती रही। उन्होंने यह भी कहा कि मेरे कौन बैठा है जिसके लिए मैं सोच विचार करती। लोक विरुद्ध होने पर भी मुझे उसका कुछ अधिक डर न था।

मुन्शी जी कहते कहते चुप हो गये। किशोरी शांत बैठी थी। मुन्शी के चुप होने पर उसने पूछा—मैंने कुछ और कहा था ?

मुन्शी जी—उन्होंने कोई अनुचित बात न तो आप को ही और न हम लोगों को। किन्तु उनको रंज बहुत है।

मुन्शी जी की बात को सुन कर शमशेरसिंह ने कहा—रंज की बात यह है, मुन्शी जी कि उनके और कोई सन्तान नहीं है कोई आगे पीछे भी नहीं है। ऐसी दशा में उनको रन्ज होना ही चाहिए।

शमशेर सिंह के चुप होने पर मुन्शी जी ने कहा—हम लोगजिस बात की आशंका कर रहे थे, वह निर्मूल निकली। हमें ऐसा जान पड़ता है कि भविष्य उज्वल है।

शमशेर सिंह ने इस बात को सुना और हँसकर कहा—भविष्य तो उज्वल है किन्तु यहां का हाल भी कुछ सुना है ?

मुन्शी जी—यहां का हाल ?

शमशेर सिंह—हां, यहां का हाल।

मुन्शी जी—क्या !

शमशेर सिंह—यहां पर किशोरी के आने से सब को प्रसन्नता है लेकिन श्रीमती मलकिन जी का पारा बहुत गरम है।

मुन्शी जी ने मुस्कराकर कहा उनका पारा ठंडा कब रहता था!

शमशेरसिंह—यह तो ठीक है, लेकिन वे जैसी थीं, वैसा ही हम भी उनके साथ व्यवहार करते थे। अब इनके आने से उनका संसार कुछ बदल गया है। बल्कि यों कहना चहिए कि उनको चौबीस घंटे नशा बना रहता है।

मुन्शी जी ने कुछ सोचकर कहा—उनके नशे और पारे की बात मैं अधिक जानता हूँ। आपको उतना नहीं मालूम। इसलिए कि आप तो इन झगड़ों से दूर रहते थे। भुगतना तो हम लोगों को पड़ता था। वे सीधी कभी नहीं बोलीं। लेकिन हमने उनकी किसी बात का उत्तर नहीं दिया।

बड़ी देर से किशोरी चुपचाप बैठी हुई इन बातों को सुन रही थी। उसने कहा—मुन्शी जी, वे ऐसा क्यों करती हैं?

मुन्शी जी—स्वभाव की बात है।

किशोर—यह भी स्वभाव की बात होती है?

मुन्शी जी—जी हां।

किशोरी—लेकिन ऐसा करने से सब से अधिक हानि तो उन्हीं को पहुँचती है। जो आदमी इस प्रकार जला-भुना करता है वह सब से पहले अपने को ही नुकसान पहुँचाता है।

मुन्शी जी—इसमें क्या सदेह!

शमशेरसिंह ने धीरे-धीरे कहा—उनको जितना अधिक मैं समझता हूँ, उतना कोई दूसरा नहीं समझता। मैं उनको समझता था, इसलिए उनसे सदा दूर रहता था और आज कल भी जितनी खामोशी से हम काम ले रहे हैं, उससे काम चलेगा नहीं।

शमशेरसिंह चुप होरहे। मुन्शो जी भी चुपचाप बैठे थे थोड़ी देर ठहरकर शमशेरसिंह ने फिर कहा—किशोरी के यहां आने पर जो वातावरण उत्पन्न हुआ है, उससे वो बहुत अप्रसन्न हैं।

मुन्शी जी—कैसा वातावरण?

शमशेरसिंह—वातावरण?

मुन्शी जी—जी।

शमशेरसिंह—देवी गंज तो एक साधारण गांव है। यहां स्त्री-पुरुषों में शिष्टाचार का अधिक ज्ञान तो है नहीं। मूर्खों में एक मात्र भय, शिष्टाचार का स्थान लेता है। जहां भय नहीं होता, वहां पर मूर्ख मनुष्य पशुओं से भी पतित हो जाता है। इसी आधार पर किशोरी के साथ यहां की स्त्रियों ने कुछ मूर्खता पूर्ण व्यवहार किया। किन्तु किशोरी की सहानुभूति और लोकप्रियता ने सब को इनका भक्त बना दिया। धीरे-धीरे सम्पूर्ण गांवों में इनके लिए प्रशंसा होने लगी। यह बात श्रीमती मालकिन को जलाने के लिए एक विशेष कारण बन गयी।

मुन्शी जी ने कहा—यह स्वाभाविक होता है।

शमशेर सिंह और मुन्शी जी कुछ देर तक इन बातों को करते रहे। उसके बाद उनके चुप होने पर किशोरी ने शमशेर सिंह की ओर देखा और कहा—उनके स्वभाव को बदला जा सकता है।

मुन्शी जी—अभी आपको उनका अनुभव नहीं है।

किशोरी ने हंसकर कहा—इसका उत्तर तो भविष्य देगा।

मुन्शी जी इस बात को सुनकर हंस पड़े। किशोरी ने फिर कहा—मैंने आप से सही कहा है। मेरा ऐसा ही विश्वास भी है।

शमशेर सिंह ने हँसकर किशोरी से कहा—हमको और आपको दोनों को देखना है, क्या होता है। किन्तु इस समय...

मुन्शी जी—इस समय क्या।

शमशेर सिंह—इस समय हम लोगों का निर्णय करना है बाई जी के साथ क्या करना चाहिये ?

मुन्शी जी—मेरा विचार यह है कि इस बीच में यदि आप कानपुर जावें तो उनसे मिल लें।

शमशेर सिंह—हम ?

मुन्शी जी—जी हां, आप।

शमशेर सिंह—इसका परिणाम ?

मुन्शी जी—इसका परिणाम अच्छा ही होगा।

शमशेर सिंह ने सन्देह पूर्ण शब्दों में कहा—और यदि ऐसा न हुआ तो ?

मुन्शी जी—तो उससे डरने की कोई बात नहीं है।

शमशेर सिंह—तो, ऐसा क्यों न हो कि उस मौके पर हम और तुम दोनों हों।

किशोरी ने अपनी शान्ति भंग करते हुए कहा—माँ को सबसे अधिक मैं समझती हूँ। और उसी आधार पर मेरा अनुभव है कि वे ऐसी कोई बात न करेगी जिससे मझे किसी प्रकार का दुख पहुँचे।

मुन्शी जी—इस पर मेरा भी विश्वास है !

शमशेर सिंह—यह सम्भव है !

मुन्शी जी—तो सबसे पहले उनसे मिलने की बात रखी जाय !

शमशेर सिंह—यही ठीक होगा !

इक्कीसवाँ परिच्छेद

शमशेर सिंह दो दिनों से देवीगंज में नहीं है। वे बाहर गये हैं। आज लौटने के लिए कह गए थे। लेकिन अभी तक नहीं आये। किशोरी ने बार-बार उनका रास्ता देखा। आँखों ने उनकी प्रतीक्षा में आज सम्पूर्ण दिन किसी प्रकार काटा। जब कोई नौकर किशोरी के रहने के घर में पहुँचा तो वह आशा करती कि आने वाला आदमी, उनके आने का समाचार सुनायेगा। लेकिन उसके लौट जाने पर वह फिर निराश हो जाती।

दिन समाप्त हो गया। सूर्यास्त होने के बाद का प्रकाश भी धीरे-धीरे तिरोहित हुआ और उसके पश्चात् अन्धकार ने परिपूर्ण रात्रि का आगमन हुआ। किन्तु शमशेर सिंह के आने का समाचार किसी ने किशोरी को नहीं सुनाया।

जाड़े के दिन हैं। रात्रि का भोजन करके किशोरी जब अपनी चारपाई पर लेटी तो उसका चेहरा उदास हो रहा था आज दिन में भी उसको किसी से बातें करने का मौका नहीं मिला। आज गांव की स्त्रियां भी उसके पास नहीं आयी। दोपहर के पहले चन्दा एक बार आयी थी किन्तु उसको भी फिर आने का अवसर नहीं मिला।

किशोरी चारपाई पर लेटी थी। कुछ दूरी के अन्तर से खूँटी पर टँगी हुई लालटेन का प्रकाश हो रहा था। अपनी चारपाई पर लेटी हुई किशोरी ने एक लम्बी सांस ली और मन-ही-मन कहा—

"आज मेरा मन क्यों गिरता जाता है! इसका कोई कारण जान नहीं पड़ता! सोचने के बाद भी कोई विशेष बात समझ में नहीं आती! मां की याद जैसे आज आयी है, वैसे तो रोज ही आया करती थी, दो दिनों से बाबू जी का न रहना एक कारण मालूम होता है किन्तु यह बात कोई ऐसी नहीं है, जिसे मैं अधिक महत्व दे सकूँ!

दो दिन चार दिन, छः दिन अथवा इससे भी कम या अधिक दिनों के लिए बाबू जी यदि नहीं रहते तो इसका भी यह परिणाम न होना चाहिये था।"

कुछ देर रुककर किशोरी ने फिर सोचा—देवीगंज में मेरा कोई विशेष सम्बन्धी नहीं है। किसी स्त्री के आजाने पर कुछ बातें हो जाती हैं। मैंने अपना ऐसा स्वभाव बना लिया है, कि जो कोई अपने पास आता है, उसी के साथ मैं हँसने बोलने लगती हूँ। फिर भी यदि मैं सोचने बैठूँ तो यहाँ पर अपना कोई नहीं है। बाबू जी दो दिन के लिए गए थे। तीसरे दिन उनको लौटना था। आज तीसरा दिन है। सारा दिन बीत गया, वे नहीं आये। संभव है एक-आध दिन बाद आवें। वे किसी काम से गये हैं, काम करके ही उनको आना चाहिये। अभी काम न हुआ होगा। इसलिए वे नहीं आए।

किशोरी फिर थोड़ी देर के लिए चुप हो गयी। उसके कान मानों दरवाजे पर किसी की आहट सुन रहे हैं। किन्तु कोई आवाज़ न मिलने पर किशोरी का फिर ध्यान पलटा वह फिर सोचने लगी—

"बाबू जी को अपना बनाने में कदाचित् मैंने शीघ्रता से काम लिया है। मैंने उनको समझने-बूझने में अधिक ध्यान नहीं दिया पता नहीं, मेरी यह शीघ्रता मुझे संतोष देगी या असंतोष! आज तो अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। किन्तु इतने थोड़े दिनों के भीतर मुझे अपने ऊपर कभी-कभी संदेह हुआ है। उस संदेह की कोई रूप-रेखा नहीं बन सकी। संदेह पैदा होने के बाद भी मैं कभी किसी परिणाम में नहीं पहुँची। किन्तु कभी-कभी संदेह हुआ अवश्य है, किसी दूसरे पर नहीं—अपने ऊपर!"

कभी-कभी रुककर मानसिक आवेग में वह फिर मन-ही-मन कहने लगती—ऐसा जान पड़ता है कि मैंने जिस नवीन जीवन की रचना की है।' उसमें मुझे अचानक कुछ धक्का लगा है। इस धक्के का कुछ

स्पष्ट रूप नहीं है। फिर भी जाने क्यों उसका आभास सा होता है। यदि भविष्य अनुकूल न बन सका तो मैं यही समझूँगी कि मैंने सोच-समझकर अपना पैर नहीं उठाया। यद्यपि अभी यह बात समझ में नहीं आती। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को जितना समझना चाहता है, मैंने उतना ही समझने की चेष्टा की है; फिर भी यदि भविष्य का अंधकार बना ही रहे तो उसके सम्बन्ध में आज नहीं कुछ कहा जा सकता!

शमशेरसिंह के सम्बन्ध में विचार करते हुए उसने मन ही मन कहा—जितना मुझसे उन्होंने स्नेह प्रकट किया था, उसमें कुछ सोचने की मुझे गुञ्जाइश दिखायी नहीं देती थी। ऐसा जान पड़ता था कि उनके हृदय में जितना प्रेम है, वह सब मेरे लिए है। यही नहीं, अपना सर्वस्व केवल मेरे सामने उत्सर्ग करने में ही वे जीवन का सब से बड़ा सुख समझते थे। ऐसी अवस्था में मैं और क्या जानने की कोशिश करती। मैंने उनसे स्पष्ट पूछा था, तो उन्होंने कहा था, मैं अकेला हूँ। तुम्हीं को पाकर मैं समर्थ बनूँगा, अभी तक ईश्वर ने मुझे असमर्थ ही रखा है! उनका यह उत्तर बहुत स्पष्ट और साफ था किन्तु देवीगंज पहुँचते-पहुँचते मुझे यह मालूम हुआ कि उनकी पत्नी हैं। पता नहीं, इस प्रकार की बात मुझसे क्यों कही थी।

किशोरी चारपाई पर उठकर बैठ गयी। आँगन की तरफ़ दृष्टि डाली और फिर आकाश की ओर देखा, उसे मालूम हुआ कि रात अधिक गई है। देवीगंज में किसी के घर से आवाज़ नहीं आ रही। मालूम होता है, सभी लोग सो गये। यह सोचकर किशोरी फिर लेट गयी। और सोने का उपक्रम करने लगी। कुछ देर तक चुपचाप लेटे रहने के बाद उसे आँखों में आलस मालूम हुआ। इसी समय किवाड़ों के पास से आवाज़ आई—किशोरी!

किशोरी चौंक पड़ी। चारपाई पर लेटे-लेटे उसने ज़ोर के साथ पूछा—कौन, बाबू जी?

शमशेरसिंह— हाँ।

आवाज़ पहचान कर किशोरी तेजी के साथ दरवाजे पर गयी, उसने किवाड़ खोल दिये। शमशेरसिंह भीतर गये और किशोरी की चारपाई पर बैठ कर कहने लगे—किशोरी!

"जी।"

"तुम अभी सोई नहीं?"

"जी नहीं।"

"क्यों?"

किशोरी चारपाई पर जाकर बैठ गयी थी। उसने शमशेरसिंह की बात का उत्तर न देकर पूछा—आने में रात कैसे हो गई?

शमशेरसिंह—देर में चला था।

किशोरी—इतनी देर में कि रात भर रास्ता ही चलते रहे!

शमशेरसिंह—रात भर तो नहीं, लेकिन हाँ, देर जरूर हो गयी है।

किशोरी—मैंने आज दिन भर आप का रास्ता देखा।

शमशेरसिंह—मैं जानता था, तुम रास्ता देखोगी। इसलिये कि मैं आज आने के लिए कह गया था।

किशोरी—इसीलिए तो।

शमशेरसिंह चुप हो रहे। किशोरी ने फिर कहा—देर हो गयी थी तो कल सुबह आ जाते, रात को चलना अच्छा नहीं होता।

किशोरी की बात को सुनकर शमशेरसिंह ने उसकी ओर देखा, किशोरी के नेत्र अब भी शमशेरसिंह की ओर देख रहे थे। शमशेरसिंह ने कहा—

किशोरी!

"जी।"

शमशेरसिंह—जो कुछ हम कहेंगे, उस पर विश्वास करोगी?

किशोरी—जी हाँ।

शमशेरसिंह—हम दो रोज़ यहाँ रहे नहीं, किन्तु हमारे प्राण यहीं रहे हैं। आज सुबह से ही वहाँ हमारी तबियत न लगती थी। इसीलिए हमने निश्चय कर लिया था कि आज हम जायँगे अवश्य।

किशोरी ने ध्यानपूर्वक शमशेरसिंह की इस बात को सुना। उसने कहा—मैं न कहूँगी कि मेरे ये दिन कैसे कटे हैं। आज दिन भर मेरी आंखें दरवाज़ पर रही हैं। जो कोई घर में आता था। मालूम होता था कि वह बाबू जी के आने का समाचार देने आया है। किन्तु उसके इस प्रकार कुछ न कहने पर मुझे कितनी निराशा होती थी, इसे मैं बता नहीं सकती।

शमशेरसिंह चारपाई पर लेट गये। वे कुछ देर तक सोचते रहे। उसके बाद किशोरी की ओर देखकर पूछा—किशोरी?

"हां।"

"आज तुम्हें बहुत कष्ट हुआ।"

किशोरी ने अपनी दृष्टि को नीचा करके कहा—इसको कष्ट नहीं कहते।

शमशेरसिंह—इसको कष्ट नहीं कहते?

किशोरी—जी नहीं।

शमशेरसिंह—तो इसे क्या कहते हैं?

किशोरी—यह मैं नहीं जानती।

किशोरी की इस बात को सुनकर शमशेरसिंह को हंसी आगयी। उन्होंने मुस्करा कर कहा—किशोरी।

"जी।"

"तुमने इस प्रकार बातें करना किससे सीखा है ?

किशोरी ने शमशेरसिंह की ओर देखा और कहा-- आपसे।

"हमसे !"

किशोरी—जी हाँ, आपसे।

शमशेरसिंह ने कुछ भी उत्तर न दिया। किशोरी ने फिर कहा—जब तक आपसे मैं मिली नहीं थी, मैं अधिक बातें करना नही जानती थी। अब तो स्वयं मुझे मालूम होता है कि मैं बहुत बातें करने लगी हूँ। मै पहले बहुत कम बात करती थी। मुझमें लज्जा भी बहुत थी। अपने मुझे बिल्कुल बदल दिया है।

शमशेरसिंह ध्यान पूर्वक किशोरी की इन बातों को सुन रहे थे। उनकी आंखें, किशोरी के चेहरे पर थीं। कुछ देर तक चुप रहकर उन्होंने कहा—मैंने तुमको बदल दिया है। और तुमने भी हमको कम नहीं बदला।

किशोरी ने गम्भीर होकर कहा—यदि मैं आपको बदल सकी तो मुझे प्रसन्नता होगी।

शमशेरसिंह ने किशोरी को उत्तर देते हुए कहा —तुम्हें प्रसन्नता होगी ?

किशोरी— जी हां।

शमशेरसिंह—क्यों !

किशोरी—यह मैं नहीं जानती। केवल इतना ही जानती हूँ कि मुझे बहुत बड़ी प्रसन्नता होगी।

शमशेरसिंह चुपचाप सुन रहे थे। क्षण-भर रुककर किशोरी ने फिर कहा—आपको बदलने का मुझे अधिकार है या नहीं, मैं यह भी नहीं जानती।

शमशेरसिंह ने गम्भीरतापूर्वक किशोरी की ओर देखा और कहा—तुमको अधिकार !

किशोरी ने शमशेरसिंह की ओर देखा किन्तु कुछ उत्तर न दिया। शमशेरसिंह ने फिर कहा—मैं अपना सब कुछ तुमको दे चुका हूँ। मैं वही करूँगा जो तुम्हें प्रिय होगा। मैं अपने जीवन में ऐसी बात न करूँगा, जो तुम्हें प्रिय न होगी।

किशोरी ने गम्भीर सांस लेकर कहा—किन्तु ऐसा करने में कदाचित् आपको कष्ट होगा।

शमशेरसिंह—कष्ट !

किशोरी— जी हां, कष्ट !

शमशेरसिंह ने किशोरी का एक हाथ लेकर अपने वक्षस्थल पर रखते हुए कहा—मैं तुम्हें कैसे बताऊँ, मेरे जीवन का सुख क्या है।

किशोरी—बताइए।

शमशेरसिंह—तुम सुनोगी ?

किशोरी—जी हां।

शमशेरसिंह—संसार में जिसे सुख मान रखा है, वह सब-का-सब मेरी आंखों से उतर चुका है। अब तो सुख के नाम पर मेरी आंखें केवल तुम्हें देखना चाहती हैं और तुम्हारे ही सुख को वे अपना सुख समझना चाहती हैं ! मेरे हृदय में किसी दूसरे के लिये मोह नहीं रह गया ? जीवन में कोई दूसरा प्रलोभन नहीं है ! पता नहीं क्यों, तुमको प्यार करने में मुझे तृप्ति नहीं होती—मेरी प्यास बढ़ती जाती है !

किशोरी ने कुछ सोचकर कहा—आप मुझे इतना महत्व क्यों दे रहे हैं ?

शमशेरसिंह—इसे मैं स्वयं नहीं जानता। केवल इतना ही जानता हूं कि जो कुछ मैंने तुम से कहा है, उसमें एक मात्रा भी असत्य नहीं है। मैं तुमको पाकर सम्पन्न हुआ हूं। अब तो केवल इतना ही जानता हूँ, कि तुम्हारे जीवन का सुख और संतोष ही, मेरे जीवन का सबसे बड़ा सुख बनेगा।

किशोरी चुपचाप बैठी थी। उसके नेत्र शमशेरसिंह को देख रहे थे और उसके कान शमशेरसिंह की बातों पर थे। वह ध्यान पूर्वक सुन रही थी। उसके कुछ न बोलने पर शमशेरसिंह ने कहा—किशोरी।

किशोरी—जी।

"तुम क्या सोच रही हो?"

किशोरी—मैं?

शमशेरसिंह—हां, तुम।

किशोरी ने मुस्करा कर कहा—मैं न बताऊँगी।

शमशेसिंह—क्यों?

किशोरी—यों ही।

शमशेरसिंह—तुम मुझे न बताओगी?

किशोरी ने मुस्कराते हुए सिर हिलाकर इन्कार किया।

शमशेरसिंह ने फिर पूछा—किशोरी, तुम बताओगी नहीं।

बताऊँगी—किशोरी ने कहा। आज आप के न आने पर बहुत बेचैनी थी, तबीयत उदास हो रही थी। किसी काम में जी न लगता था। ऐसा जान पड़ता था, जैसे संसार में कोई अपना नहीं है। चारो ओर सूनापन मालूम हो रहा था किन्तु......।

शमशेरसिंह ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। किशोरी ने फिर कहा—किंतु आपके आजाने पर वे सभी बातें, एक साथ न जाने कहां विलीन हो गयीं, इसे मैं समझ न सकी।

किशोरी की इस बात को सुनकर शमशेरसिंह ने मुस्करा दिया और कहा—फिर तुमने मुझे क्यों जाने दिया था !

किशोरी ने अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से शमशेरसिंह की ओर देखा और कहा—अब न जाने दिया करूँगी।

शमशेरसिंह को हँसी आगयी। किशोरी ने भी मुस्करा दिया।

ग्यारहवां परिच्छेद

दिन जाते देर नहीं लगती। शमशेरसिंह के साथ किशोरी के स्नेह-सम्बन्ध की अवस्था दूसरे वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। इस बीच में उसको अधिक देवीगंज में ही रहने का मौका मिला है जब कभी इच्छा होती है, वह कानपुर भी चली जाती है। वहां पर वह अपनी मां के पास ही ठहरती है। मां ने उसके सम्बन्ध में जो अपनी विचार धारा बनायी थी, किशोरी ने उसको तोड़ दिया है। उसने मां को समझा दिया है कि तुम मेरे ऊपर किसी प्रकार का अविश्वास न करना। समाज के पुराने बन्धनों से निकल कर मैंने बाहर पैर रखा है, उसका अभिप्राय तुम आगे चलकर समझ सकोगी। अभी तुम केवल इतना ही समझो कि मैंने अविश्वास का कोई कारण नहीं पैदा किया। और आगे भी न करूँगी।

इस प्रकार माता के साथ किशोरी का स्नेह-विभाजन नहीं हुआ। अपनी मां का जिस प्रकार वह पहले आदर करती थी, आज उससे भी अधिक करती है, इससे मां के स्नेह और शान्तिपूर्ण जीवन में किसी प्रकार की बाधा नहीं उत्पन्न हुई।

किशोरी के व्यवहारों से शमशेरसिंह दिन पर दिन उसके अनुकूल होते जाते हैं। वे जब कभी एकान्त में बैठते हैं, तो मन ही मन सोचते हैं---किशोरी के स्वभाव में तनिक भी स्वार्थ नहीं है। मैं अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर, उसको सुखी बनाने की कोशिश करता हूं किन्तु उसने आज तक अपनी किसी मांग को मेरे सामने नहीं रखा। उसने कभी मूल्यवान वस्त्रों की बात नहीं कही, सुन्दर भोजन के प्रति अपनी रुचि कभी नहीं दिखायी और न कभी अपने हित और स्वार्थ को लेकर उसने कोई प्रस्ताव मुझसे किया। जब कभी उसने मुझे उलाहना दिया, तो किसी न किसी विपद में पड़े हुए परिवार की ही बात कही।

किशोरी की यह मनोवृत्ति न केवल शमशेरसिंह को मालूम हो चुकी है बल्कि उसकी यह भावना सर्व साधारण में प्रचार पा चुकी है। लोगों का विश्वास हो गया है कि किशोरी के हृदय में दीनों और दरिद्रों के लिए बड़ा स्थान है। किसी की आपत्ति में किशोरी अपनी पूरी शक्ति से सहायता करती है। उसके प्रति दिन पर दिन इन बातों का प्रचार बढ़ता जाता है और जितनी ही ये बातें फैलती जाती हैं, उसके पास आने वाले स्त्री पुरुषों की संख्या बढ़ती जाती है।

किशोरी के पास आनेवाले स्त्री और पुरुष न जाने किस प्रकार का अनुमान लगाकर आते हैं। किन्तु उसकी साधारण वेष भूषा देखकर सब को बड़ा आश्चर्य होता है। उसने अपने मकान में अपने बैठने के लिए कुर्सियों का प्रबन्ध नहीं रखा। चारपाई पर बैठकर वह सब के साथ बातें करती है। सभी को उचित और आदरपूर्ण स्थान देती है। उसके इस व्यवहार से सभी लोगों को अत्यन्त सन्तोष मिलता है।

देवीगंज के निवासियों की सभी बातों को उसने खूब समझने की कोशिश की है। जिन बातों को वह पहले न जानती थी आज

उसने जाना है। किसी बड़े आदमी और ज़मीदार के प्रति उसके हृदय में जो सम्मान रहा करता था, वह आज नहीं है। उसको विश्वास होगया है कि बड़े आदमियों के ऐश्वर्य के सामान हजारों और लाखों स्त्री पुरुषों को ग़रीबी देकर बनते हैं। पक्के मकानों के स्थान पर उसको गरीबों के घरों पर अधिक स्नेह हो गया है। बड़े आदमियों के बच्चों की अपेक्षा मैले कुचैले कपड़े पहने हुए, दुबले पतले बच्चों को वह अधिक प्यार करती है और मूल्यवान वस्त्रधारी स्त्री पुरुषों की अपेक्षा वह गरीब स्त्री-पुरुषों को अधिक महत्व देती है।

अपने इन विचारों के साथ किशोरी अपने जीवन का नित नया निर्माण करता है। वह नहीं सोचती कि मुझसे कौन प्रसन्न है और कौन अप्रसन्न। अपने विचारों पर वह विश्वास करती है। उन्हीं पर वह चलती है और उन्हीं के आधार पर वह अपने जीवन का भविष्य कार्यक्रम तैयार करती है। मुंशी हिम्मतसिंह, शमशेरसिंह के सदा दाहिने हाथ बनकर रहा करते थे किन्तु उनका अब वह संबंध शमशेरसिंह के साथ ढीला पड़ गया है। यही कारण है कि मुंशी हिम्मतसिंह भीतर से किशोरी के साथ बहुत प्रसन्न नहीं हैं। किन्तु कुछ कहने-सुनने का न उनमें साहस है और न अधिकार ही है।

अपनी इस प्रकार की जीवन-चर्या पर किशोरी को अभी अधिक सन्तोष नहीं है। उसने एक दिन शमशेरसिंह के साथ बैठकर बहुत सी बातें की। उस समय मुंशी हिम्मतसिंह के सिवा शमशेरसिंह के कई एक विश्वास पात्र अदमी बैठे थे। हिम्मतसिंह ने ही कुछ बातों को उठाया और कहा—

किशोरी जी के यहाँ आने पर देवीगंज की हालत में बड़ा अन्तर पड़ गया है।

शमशेरसिंह—किस प्रकार का!

मुंशी जी—किशोरी जी के स्वभाव में साधु-वृत्त अधिक है।

शमशेरसिंह—अभी आप की बात स्पष्ट नहीं होती।

मुंशीजी ने कहा—जमींदारी के काम कुछ दूसरे ढंग के होते हैं। साधु वृत्ति से एक जमींदार का काम नहीं चल सकता।

बैठे हुए लोगों ने मुंशी जी की बात को सुना, किंतु किसी ने कुछ उत्तर न दिया। शमशेर सिंह भी चुपचाप थे। किशोरी ने कहा—

दूसरों को दुखी बनाकर कोई भी मनुष्य सुखी नहीं बन सकता। एक मनुष्य, दूसरों को दिव्य पदार्थ खिलाकर जिस स्वर्गीय सुख का अनुभव करता है, उसका अनुभव वह स्वयम् उन पदार्थों को खाकर नहीं कर सकता।

किशोरी की इस बात ने बैठे हुए सभी लोगों के हृदयों को अपनी ओर आकृष्ट किया। शमशेरसिंह ने कुछ सोचकर गंभीरता पूर्वक कहा—

मुंशी जी, किशोरी के साथ मेरे जीवन का जो सम्पर्क हुआ है, उसमें ईश्वर की प्रेरणा ही है। इसीलिए मेरे ऊपर किशोरी के विचारों की छाप है। चाहे मेरी यह निर्बलता ही क्यों न हो, किन्तु किशोरी के जीवन के कार्यों में मैं किसी प्रकार की बाधा नहीं उत्पन्न कर सकता।

बैठे हुए आदमियों ने इस बात का समर्थन करते हुए कहा—किशोरी जी का आगमन आपकी रियासत में एक देवि का आगमन है। इनके इन व्यवहारों के कारण ही आज घर-घर में इनकी प्रशंसा हो रही है।

मुंशी हिंमतसिंह ने कहा—यह बात तो ठीक है।

सब को चुपचाप देखकर किशोरी ने कहा—मैं नहीं जानती कि मेरी विचार-धारा से बाबू जी को सहानुभूति है या नहीं। किन्तु

इतना जानती हूँ कि मेरे साथ इनकी बहुत बड़ी ममता है। पूर्व जन्म के पुण्य प्रताप के फलस्वरूप मैंने बाबू जी की जो महान कृपा प्राप्त की है, मैं नहीं चाहती कि उसका उपभोग मैं स्वयम् करूँ। मेरी हार्दिक कामना है कि इस कृपा का सुखोपभोग लाखों की संख्या में गरीबों को मिलना चाहिए! मेरी इच्छा है कि भगवान ने जो सम्पत्ति और ऐश्वर्य बाबू जी को दिया है, उसके द्वारा बड़ी-से-बड़ी संख्या में गरीब, जीवन का सुख भोगें! वस्त्रहीन गरीब स्त्री और बच्चे सुन्दर वस्त्रों को पहनकर रहें और जितनी अधिक संख्या में संभव होसके पेटभर भोजन न करने वाले कंगाल भोजन से तृप्ति पा सकें! इस प्रकार समस्त पुण्य एकत्रित होकर बाबू जी को अगले जन्म में आज से भी अधिक ऐश्वर्यशाली बनाने में सहायता करेगा!

किशोरी अपनी बात कहकर चुप होरही। उसकी बातों को सुनकर न केवल शमशेरसिंह का हृदय रोमाञ्चित होरहा था, वरन् मुंशी जी को लेकर बैठे हुए आदमियों का हृदय दया और सहानुभूति से प्लावित होरहा था।

शमशेरसिंह ने पास ही बैठे हुए लोगों की ओर देखा, उन्हें मालूम हुआ मानो सभी के हृदयों पर किशोरी का प्रभाव अपना काम कर रहा है।

शमशेरसिंह ने बैठे हुए आदमियों से कहा—मेरी समझ में आप लोगों को किशोरी को समझने का आज अधिक अवसर मिला है।

बैठे हुए लोगों ने कहा—नहीं नम्बरदार, आज के पहले भी किशोरी जी के व्यवहारों को हम लोग जान सके थे। किशोरी जी ने जो बातें आपके सामने कही हैं, ये इनकी कुछ नयी नहीं हैं।

शमशेर सिंह—नई नहीं।

एक आदमी ने कहा—बड़े सुन्दर विचार हैं।

दूसरे आदमी ने कहा–हम लोगों पर प्रसन्न होकर भगवान ने एक देवी के रूप में किशोरी जी को यहाँ भेजा है।

तीसरे आदमी ने कहा—इसमें सन्देह नहीं।

शमशेरसिंह ने मुंशी जी से कहा—यहाँ पर जो हमारे स्नेही, विश्वास पात्र हैं, उपस्थित हैं। आप के ऊपर भी मैंने सदा विश्वास किया है। सब से बड़ी बात यह है कि किशोरी के साथ स्नेह स्थापन में आप का भी हाथ है। इसलिए आपकी और अपने शुभचिंतक मित्रों की उपस्थिति में मैं एक निर्णय करना चाहता हूँ।

मुंशी जी ने कहा—सुनाइए।

शमशेरसिंह ने साहस के साथ कहा—मैं अपना निश्चय कर चुका हूँ, उस निश्चय को मैं आप लोगों के सामने रखना चाहता हूँ। वह निश्चय यह है कि मेरी सम्पूर्ण सम्पत्ति का स्वामीत्व किशोरी का होगा और उसका संचालन तथा व्यवस्थापन इन्हीं की इच्छानुसार किया जायगा!

मुंशी जी—मैं अन्तःकरण से कह रहा हूँ कि आज के पहले मैं किशोरी जी के साथ कुछ मतभेद रखता था। किन्तु आज मेरा समस्त मतभेद जलकर राख हो चुका है। आप के इस निर्णय पर मैं आपकी प्रशंसा करता हूँ। अभी तक मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया है। इस व्यवस्था में भी मैं आपकी आज्ञा का पालन करना चाहता हूं।

शमशेर सिंह ने बैठे हुए लोगों की ओर देखा। शमशेरसिंह का भाव समझकर एक आदमी ने कहा—नम्बरदार, आप ने अपना जो निर्णय हम लोगों को सुनाया है, यह न केवल आपका निर्णय है, बल्कि इसमें सर्वशक्तिमान परमात्मा की प्रेरणा है!

दूसरे आदमी ने कहा—यही बात है।

तीसरे आदमी ने समर्थन करते हुए अपनी अनुमति दी—जो भगवान को स्वीकार होता है, वही होता है।

चौथे आदमी ने अपनी सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा—शाजहाँ बादशाह ने नूरजहाँ के स्मारक में ताजमहल बनवाकर अपना नाम अमर किया था। आपका यह निर्णय आपको अमर बनायेगा।

पांचवे आदमी ने कहा—किशोरी देवी के पुण्य-कार्यों से प्रसन्न होकर हजारों गरीब स्त्री-पुरुषों ने जो जै-जैकार की है, यह उसी का प्रभाव है!

शमशेरसिंह—ने हँसकर कहा...इसका निर्णय हो चुका।

बड़ी देर से चुपचाप बैठी हुई किशोरी ने कहा, बाबू जी की इस देन को मैं सिर झुकाकर स्वीकार करती हूँ किन्तु उसके साथ मेरी दो बातें हैं। बाबू जी ने अपने इस निर्णय में संचालन का भार मेरे ऊपर रखा है। मैं विश्वास करती हूँ कि उसमें बाबू जी किसी प्रकार का परिवर्तन न करेंगे।

बैठे हुए सभी लोगों ने किशोरी की ओर देखा। किशोरी ने फिर कहा—आप लोगों ने बाबू जी का निर्णय सुना। मैंने इतनी थोड़ी देर के भीतर ही इसके संचालन का रूप बना लिया है। बाबू जी की सम्पूर्ण सम्पत्ति का स्वामीत्व अधिकार आपके बाद, बाबू जी का नहीं, हमारी और आप की मालकिन रतनी देवी का रहेगा। उनकी सहायता से मेरा एक कार्य क्रम बनेगा जिसमें मैं अधिक से अधिक गरीब स्त्रियों की सेवा का कार्य कर सकूँ और अपने जीवन के बाकी दिनों को इस सेवा के द्वारा व्यतीत करूँ। बाबू जी अपनी आंखों से इस नवीन व्यवस्था को देखेंगे। रियासत की नयी स्वामिनी की सहायता करेंगे और अपने जीवन में एक नवीन सुख और सन्तोष का अनुभव करेंगे!

किशोरी की इस बात को सुनकर शमशेरसिंह ने कुछ कहने की चेष्टा की किंतु किशोरी ने बात काटकर कहा—मैं पहले कह चुकी हूँ कि बाबू जी अब कोई नया परिवर्तन न करेंगे !

बैठे हुए लोगों ने कहा—बहुत सुन्दर।

मुन्शी जी ने मुस्कराकर समर्थन किया—भगवान की इच्छा यही है।

शमशेरसिंह ने मुस्करा कर कहा—अब मुझे कहने का कुछ अधिकार नहीं है !

किशोरी—जी नहीं।

शमशेरसिंह—मेरे ऊपर यह आधिपत्य होगा।

बैठे हुए लोगों ने हँसकर एक साथ कहा—जब कोई नयी सरकार आती है तो पहले पहल आधिपत्य ही करती है।

मुन्शी जी ने हँस कर कहा—बिल्कुल ठीक है।

शमशेरसिंह ने सब को देखकर मुस्करा दिया और कहा—अच्छी बात है।

तेईसवां परिच्छेद

शमशेरसिंह की सम्पत्ति के सम्बन्ध में किशोरी ने अपने जिन विचारों को, शमशेरसिंह तथा उनके शुभचिन्तकों के सामने रखा है, वे वायु की भाँति फैलकर लोगों के कानों में पहुँचे। जिसने सुना, उसी ने अपनी इच्छा के अनुसार उसकी आलोचना की।

सभी पुष्पों की गंध एक समान नहीं होती। सभी फलों के गुण और स्वभाव सदा एक से नहीं पाये जाते। फल वे भी कहलाते हैं जो अत्यन्त मीठे, रुचिपूर्ण और लाभ दायक होते हैं। और वे भी फल ही कहलाते हैं जिनके जिह्वा पर रखते ही अनेक प्रकार के अरुचिपूर्ण स्वाद का अनुभव होता है। ठीक इसी प्रकार मनुष्य की प्रकृति भी रुचि विभिन्न पायी जाती है।

एक बड़ी संख्या में स्त्री और पुरुषों ने किशोरी के विचारों की प्रशंसा की। उसकी सहानुभूति और स्नेहपूर्ण व्यवहारिकता की बहुत कुछ सराहना की। किन्तु ऐसे स्त्री पुरुषों की भी संख्या कम न थी जो किशोरी के विचारों को सुनकर कहते थे।

जो कुछ भी हो, किशोरी बहुत जलते पुरजे और व्यवहार कुशल स्त्री है। यदि उसने अपनी इस सहानुभूति से काम न लिया होता तो यहां दूसरे के देश में कौन उसकी प्रशंसा करता। अपनी बातों के द्वारा ही उसने शमशेरसिंह पर अपना आतंक फैला रखा है।

इसी प्रकार के लोग बातें करते हुए कहते—किशोरी की बातों में कोई गंभीर रहस्य है। यह रहस्य अभी न मालूम होगा। जब तक वह सभी को अपने अनुकूल न बना लेगी और छोटे से लेकर बड़े तक को अपने अधिकार में न फँसा लेगी, तब तक वह अपने असली रूप को प्रकट न करेगी।

इस प्रकार विभिन्न रूप में किशोरी के विचारों की आलोचना की गयी। कौन प्रशंसा करता है, किशोरी को इन बातों का कुछ पता नहीं और न उसे इसी बात का ज्ञान है, कि किन स्त्री-पुरुषों ने उसको रहस्यमयी मान रखा है। वह अपने विचारों में मग्न रहती है। उन्हीं में उसको सुख मिलता है और उन्हीं में उसे संतोश प्राप्त होता है।

किशोरी के ये विचार अन्य सभी स्थानों के साथ साथ रतनी के कानों तक भी पहुँचे हैं। कितनी ही स्त्रियों ने उसके पास जाकर

किशोरी की बातों की चर्चा की है, जो स्त्रियां वहां पहुँची हैं और जिन्होंने रतनी के साथ बैठकर बातें की हैं, उनमें भी अनेक प्रकार की विषमता रतनी के देखने में आयी है।

जिन गरीबों के प्रति किशोरी ने अपनी सम्पूर्ण सेवायें प्रदान करने की बात का निश्चय कर रखा है, उन्हीं में से कितने ही स्त्री-पुरुषों ने रतनी को सचेत और सतर्क रहने की बात कही है। जहां इस प्रकार के स्त्री और पुरुषों ने रतनी के पास जाकर विभिन्न प्रकार की बातें की हैं, वहां ऐसे स्त्री-पुरुषों की भी कमी नहीं रही जिन्होंने रतनी के सामने किशोरी की हृदय खोलकर प्रशंसा की है।

रतनी ने सभी की बातें सुनी हैं। किन्तु अपनी बात उसने किसी से नहीं कही। उसने सब के विचारों को समझा है किन्तु अपने विचारों को समझने के लिए उसने दूसरों को मौका नहीं दिया। आज की रतनी—वह रतनी नहीं रही जब वह रात दिन जला-भुना करती थी। रतनी के जीवन का आज वह समय नहीं है जिसमें सब कुछ होने पर भी वह एक भाग्यहीन स्त्री की भाँति निरुपाय होकर रहा करती थी। उसके हृदय में आज जितनी शान्ति और सुख की मात्रा है पता नहीं शमशेर सिंह के घर में आने पर कब उसके जीवन में इतने सुख और संतोष की बात रही है।

आज दोपहर को खाना खाकर रतनी अपने कमरे में अकेले जाकर लेटी है। उसके पास वहां पर कोई नहीं है। लेटे-लेटे रतनी ने न जाने कितनी बातें सोच डाली। दाहिने से बायीं ओर और बायें से दाहिनी ओर को उसने न जाने कितनी करवटें बदली उसका हृदय चंचल हो रहा था। मन के विचार अस्थिर हो रहे थे। वह कुछ सोचती थी और फिर चुप हो जाती थी। कुछ देर चुप रहकर वह फिर सोचने लगती थी।

अपनी इसी अवस्था में लेटे हुए रतनी को बड़ी देर हो गयी। वह अब भी लेटी थी जो कुछ वह सोचती। थी उसके सामने उसका कु रूप न बनता था। थोड़ी देर में उसे कुछ शांति मिली। उस मन-ही-मन कहा—

किशोरी के सम्बन्ध में मैंने निरन्तर भूल की है। देवीगंज में उसके आने पर मैंने उसको समझने की चेष्टा नहीं की! बिना समझे-जाने मैंने उसके साथ जो व्यवहार प्रकट किया है, वह सब उसके पास पहुँचा होगा। इसमें कोई सन्देह नहीं, मेरी सभी बातों को उसने जाना है—समझा है किन्तु इन तमाम बातों के होने पर भी उसने अपना जो व्यवहार प्रकट कर रक्खा है, वह किसी साधारण स्त्री-पुरुष का नहीं हो सकता। मनुष्य, होता है। वह गालियों के बदले में आशीर्वाद नहीं देता और यदि देता है, तो वह साधारण मनुष्य नहीं होता!

किशोरी की थोड़ी सी बातों ने ही मुझे इतना पलट दिया है कि स्वयम् कुछ समझने बूझने के योग्य नहीं रह गयी। यह भी सत्य है कि अभी उसको न मैंने ठीक-ठीक समझा है और न किसी दूसरे ने। यह भी सत्य है कि उसके जीवन का कोई एक बड़ा कार्य है, जिसका सम्पादन वह प्रत्येक तरीके से करना चाहती है। ऐसा जान पड़ता है, कि उसके जीवन का जो प्रधान कार्य है, उसके मार्ग में स्वार्थ, प्रलोभन, अहंकार और किसी प्रकार का अहम्भाव नहीं है। इसीलिए उसके जीवन का एक-एक क्षण स्नेह से डूबा हुआ है।

मैं किशोरी की कोई आलोचना नहीं कर सकती। आज बड़ी देर से किशोरी के साथ बातें करने के लिए मेरी इच्छा हो रही है। जिसका कोई शत्रु नहीं है, वह मनुष्यों की श्रेणी से बहुत ऊँचे उठ जाता है। वह साधारण मनुष्य हो भी नहीं सकता। बहुत अच्छा हुआ कि आज तक मैंने किशोरी से आमने-सामने होकर किसी दिन बातें

नहीं की। मुझे बहुत संदेह है कि यदि अवसर मिलता तो मैंने न जाने कितनी बड़ी भूल की होती !

रतनी ने चारपाई पर लेटे हुए अपना सिर उठाया और आवाज लगायी—चंदा !

कोई भी उत्तर न मिला। रतनी ने इधर-उधर देखकर फिर पुकारा—चंदा !

फिर भी किसी के बोलने की आवाज न आयी। वह चारपाई पर उठकर बैठ गयी और धीरे-धीरे कहने लगी—चंदा कहां गयी। उसको तो मेरे पास रहना चाहिए। फिर उसका पता क्यों नहीं है। अच्छा, मैं समझ गयी, चंदा किशोरी के पास गयी होगी। उसे वहां बहुत अच्छा लगता है। जीवन का रहस्य कितना स्पष्ट है। चंदा खाती किसी का है, पहनती किसी का है और बैठती किसी के पास है। ऐसा क्यों है !

आज तक मैं इस बात को न समझी थी। मैंने सभी नौकरों पर आतंक रखने की कोशिश की थी। किन्तु क्रोध और आतंक में कभी कोई रहना पसन्द नहीं करता। प्रत्येक मनुष्य वहीं रहना चाहता है जहां उसको प्रेम, सहानुभूति और स्वाधीनता मिलती है। मैंने इन बातों का मूल्य कभी नहीं समझा, इसलिए सब कुछ होने पर भी मैं अपने आपको एक दुखी के रूप में पाती थी। और इन गुणों का मूल्य समझने के कारण, कुछ न होने पर भी किशोरी अपने आपको सब से अधिक सुखी अनुभव करती है।

इसी समय सामने से एक बूढ़ी स्त्री जाती हुई दिखायी पड़ी। उसे देखकर रतनी ने कुछ जोर के साथ कहा—लोचना की माँ।

बुढ़िया ने घूमकर देखा। और रतनी के निकट आकर कहा—मालकिन क्या तुमने मुझे बुलाया है ?

रतनो—हां, बुलाया है।

"क्यों, क्या काम है ?"

रतनी ने कहा—तुम उधर जाते हुए देखना, कहीं चंदा दिखायी पड़े तो भेज देना।

बुढ़िया—अच्छा, भेज दूंगी।

रतना ने कुछ भी उत्तर न दिया। बुढ़िया ने पूछा—कुछ और काम है।

"नहीं।"

बुढ़िया ने फिर पूछा—तो, मैं जाऊँ ?

रतनी—हाँ, तुम जाओ।

बुढ़िया वहाँ से घूमकर लौट पड़ी। इसी समय रतनी ने फिर उसको बुलाकर कहा—लोचन की मां।

बुढ़िया फिर लौटी और उसने पूछा—मालकिन क्या तुमने फिर बुलाया ?

रतनी—हां।

बुढ़िया—क्यों, कुछ और काम है ?

रतनी—और कुछ काम नहीं है, देखो अगर चंदा कहीं दिखायी न पड़े तो वह किशोरी के पास होगी।

बुढ़िया ने आश्चर्य के साथ कहा—किशोरी!

रतनी—हां किशोरी!

बुढ़िया ने सावधान होकर कहा—अच्छा, समझ गयी मैं। मैं जाती हूँ, वहाँ से भेज दूंगी। और कुछ काम तो नहीं है ?

रतनी—कुछ नहीं।

बुढ़िया चली गयी। रतनी चारपाई पर लेट कर चंदा के आने का रास्ता देखने लगी। अभी-अभी देर न हुई थी, सामने से चंदा

आती हुई दिखायी पड़ी उसका मुँह सूखा हुआ था। देखने से घबड़ाई हुई मालूम होती थी। रतनी समझ गयी। उसने साधारण स्वर में कहा—चंदा।

चंदा ने निकट आकर धीरे से उत्तर दिया—जी।

"तुम इतनी देर से कहाँ हो?"

चंदा ने कुछ भी उत्तर न दिया। वह भयभीत हो रही थी। रतनी ने हँसकर कहा—चंदा, तुम डरो नहीं। मैं तुम्हें कुछ कहूँगा। किशोरी के यहाँ से आ रही हो न?

चंदा ने डरते-डरते कहा—जी हाँ।

रतनी ने कुछ सोचा और फिर पूछा—चंदा किशोरी क्या कर रही है?

चंदा ने उत्तर दिया—वे एक किताब पढ़ रही हैं।

"तो फिर तुम वहाँ बैठी हुई क्या कर रही थीं?"

चंदा—वे पढ़-पढ़कर कुछ बातें समझाती थीं, उन्हीं को मैं सुन रही थी।

रतनी ने कहा—तुम जाओ, किशोरी को यहाँ लिवा लाओ।

रतनी की बात सुनकर चंदा बहुत प्रसन्न हुई। वह तेजी के साथ लौटी और मिनटों में किशोरी के पास जाकर, उसने रतनी का संदेशा कहा—किशोरी ने अपनी पुस्तक उठाकर रखदी और चंदा के साथ रतनी के पास आने के लिए रवाना हो गयी।

रतनी ने चंदा के पीछे किशोरी को आते हुए देखा। वह चारपाई से उठ बैठी और आगे बढ़कर उसने किशोरी का हाथ पकड़ लिया। दोनों ही आकर एक ही चारपाई पर बैठ गयीं।

किशोरी के बैठते ही रतनी ने कहा—बहन, आज बड़ी देर से तुमको बुलाने के लिए मैं सोच रही थी। अन्त में नहीं रहा गया और मैंने चंदा को बुलाकर तुम्हारे पास भेजा।

किशोरी ने हँसकर कहा—आपको देखकर आज मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है।

रतनी—सबसे पहले, बहन मैं तुमसे एक बात कहूँगी।

किशोरी ने कहा—क्या !

"नम्बरदार तथा और कुछ लोगों के सामने जो तुम्हारी बहुत सी बातें हुई हैं, उनकी अपेक्षा मेरे ऊपर तुम्हारी कुछ दूसरी ही बातों का का प्रभाव पड़ा है।

किशोरी ने हँसकर कहा—मेरी बातों का प्रभाव ?

रतनी—हां, तुम्हारी बातों का प्रभाव।

किशोरी—मैं समझ नहीं सकी।

रतनी ने गंभीरता पूर्वक कहा—मैं तुमसे आज तक मिल नहीं सकी, इसका मुझे आज बहुत रंज है। लेकिन मैं सोचती हूँ कि यह भी अच्छा ही हुआ। बहुत सम्भव है पहले मैं तुम्हें समझ न सकती किन्तु आज तुम्हारे विचारों ने तुम्हारा परिचय अपने आप सबको दे रक्खा है।

किशोरी ने चुपचाप बैठकर इन बातों को सुना। उसने कुछ उत्तर न दिया। रतनी ने फिर कहा—मैं एक साधारण स्त्री हूं। साधारण मनुष्यों के जीवन की त्रुटियां मुझ में भी हैं। तुमको पाकर मैं अब उनको दूर करूँगी।

किशोरी ने फिर भी कुछ उत्तर न दिया। रतनी ने फिर कहा—तुमसे न मिलने पर भी तुम्हारी बातें बराबर मेरे पास पहुँचती रही हैं। उन्हीं बातों और विचारों ने मेरे जीवन में अनेक प्रकार का परिवर्त्तन किया है। मैंने तुम से सीखा है कि मनुष्य जीवन का सब से बड़ा सुख, दूसरों के प्रति उसके हृदय का स्नेह और सहानभूति का भाव है। जो दूसरों से प्रेम करना जानता है, वह कभी दुखी नहीं

हो सकता और जो इसे नहीं जानता, वह कभी सुखी नहीं हो सकता। मैंने यही बात तुमसे सीखी है। तुम्हारी इस शिक्षा ने मुझे कुछ का कुछ बना दिया है।

किशोरी ने हँसकर कहा—मैं आपको शिक्षा देने के योग्य नहीं हूँ। मेरा काम तो आप की सेवा करना है। मैं बड़ी प्रसन्न होऊँगी यदि आप मुझे अनुग्रह पूर्वक अपना सेवा धर्म पालन करने देंगी।

रतनी ने किशोरी की इस बात को ध्यान पूर्वक सुना। वह पलक हीन नेत्रों से किशोरी की ओर देख रही थी। किशोरी ने फिर कहा—मेरे जीवन का सबसे बड़ा सुख इसी में है कि मैं दूसरों से स्नेह करूँ, उनकी सेवा करूँ और उनकी पीड़ा एवम् यंत्रणा के समय मैं उनके साथ सहानुभूति रखूँ।

रतनी की आँखें अब भी किशोरी की ओर देख रही थीं। किशोरी की बातों को सुनकर रतनी ने कहा—अभी तक तुम्हारी शिक्षा को मैंने दूर से सुना है, अब निकट बैठकर सुना करूँगी। साथ ही मैं अपना सब से बड़ा सौभाग्य समझूँगी, यदि मैं अपने आपको बदल सकूँगी।

किशोरी के साथ रतनी ने किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं रखा। उसने अत्यन्त श्रद्धा के साथ, उसके पास बैठकर बहुत देर तक बातें कीं। चंदा भी वहीं पर बैठी हुई इन बातों को सुन रही थी।

चौबीसवाँ परिच्छेद

एक पवित्र आत्मा न जाने कितने आत्माओं के शुद्ध करने का कार्य करता है। किशोरी के संसर्ग और सम्पर्क में आकर देवीगंज के कितने ही लोगों में महान परिवर्तन हुआ है। मुंशी हिम्मतसिंह आज के कुछ दिन पूर्व किशोरी के विरुद्ध सोचा करते थे। किन्तु आज उनकी अवस्था कुछ और है। वे अपनी पहले की बातों पर धूल डालने की चेष्टा करते हैं और दिन पर दिन वे अपने आपको बदलता हुआ देखते हैं।

शमशेरसिंह के साथ चतुरी के डिगरी का मामला अभी तक ज्यों का त्यों पड़ा था। मुंशी हिम्मतसिंह चतुरी को बहुत विश्वास देने के बाद भी कुछ कर न सके थे। इधर कुछ दिनों से उनके हृदय में इस प्रश्न को लेकर जो समस्या उठ रही थी, उसे वे किसी प्रकार सुलझा न पाते थे।

एक दिन कुछ सोच-समझकर मुंशी हिम्मतसिंह किशोरी के पास गये और चतुरी के मामले को उन्होंने विस्तारपूर्वक समझाकर कहा—

इस उलझन को मैं आपके पास लेकर आया हूँ। मुझे विश्वास है कि इसको सुलझाने में आप चतुरी की सहायता करेंगी।

मुंशी हिम्मतसिंह के साथ चतुरी भी आयी थी, जो किशोरी के पास ही, कुछ अन्तर से बैठी थी। मुंशी जी की बात को सुनकर किशोरी ने चतुरी की ओर देखा और कहा —

इसके सम्बन्ध में बाबू जी ने अब तक क्या किया है?

चतुरी—मैं उनसे कानपुर में मिली थी। उनके साथ जो बातें हुई थीं, उनमें मुझे कोई आशा न थी।

किशोरी—फिर तुमने क्या किया।

चतुरी—मेरे पास कोई उपाय न था, सिवा इसके कि जो लोग नम्बरदार के पास आते-जाते थे, मैं उनसे कहती और अपना उद्धार चाहती।

किशोरी—फिर ?

चतुरी—लेकिन इसका भी कोई परिनाम न निकला।

किशोरी—इसके बाद ?

चतुरी—अन्त मे मैंने मुंशी जी की शरण ली। इन्होंने मुझे विश्वास दिलाया था कि तुम्हारा निपटारा हो जायगा। किन्तु अभी तक यह मामला ज्यों का त्यों पड़ा है।

चतुरी की बात सुनकर किशोरी कुछ सोचने लगी। इसी समय मुंशी जी ने कहा —

किशोरी जी।

किशोरी—हाँ।

मुंशी जी—इसमें न तो मै कुछ कह सकता था और न किसी ...रे का हाथ था। सच्ची बात यह है। फिर भी मैं किसी सुअवसर ...खोज में था लेकिन मुझे कोई मौक़ा मिला नहीं।

किशोरी ने कुछ सोचकर कहा—तो इसमें क्या होना चाहिए ?

मुंशी जी ने चतुरी की ओर देखा और फिर किशोरी से कहा — इसमे क्या होना चाहिए, इसको तो आप जाने। मैं केवल इतना ही कहूंगा कि यदि आपके यहाँ आने का संयोग न पैदा हुआ होता तो नम्बरदार ने इस मामले को अपनी इच्छा के अनुसार कर डाला होता।

किशोरी चुपचाप सुनती रही। उसके कुछ न बोलने पर मुंशीजी ने फिर कहा चतुरी के इस मामले में कुछ होनहार अच्छा ही है। क्यों कि यहाँ की परिस्थित में जो परिवर्तन हुए हैं, उनके द्वारा इस मामले के सुलझने में सहायता मिलेगी।

किशोरी ने कुछ देर शांत रहने के बाद कहा—चतुरी, तुम इस मामले में क्या चाहती हो?

चतुरी ने दीनतापूर्वक उत्तर दिया जो कुछ आप निर्णय कर देंगी, मैं उसे स्वीकार करूँगी।

किशोरी—यह मेरा मतलब नहीं है।

चतुरी—तो?

किशोरी—मेरे कहने का मतलब यह है कि इसको सुलझाने के लिए तुमने क्या सोच रक्खा है?

चतुरी—इसके सम्बन्ध में मैंने नम्बरदार से जो कहा था, वही मैंने दूसरों से भी कहा है। और अब भी मैं वही चाहती हूँ।

किशोरी—क्या?

चतुरी—वह यह कि नम्बरदार का जो रुपया असली है, मैं उसे अदा करदूँ और नम्बरदार मुझे उऋण करदें।

चतुरी की बात को सुनकर किशोरी ने कुछ सोचा और कहा—मूल रुपये के साथ-साथ बाबू जी का और जो कुछ खर्च हुआ है, नालिश इत्यादि में, यदि वह भी तुम्हें देना पड़े तो?

चतुरी ने प्रसन्न होकर कहा—मुझे मन्जूर है।

किशोरी ने शमशेरसिंह के पास मुंशी जी को भेजा और चतुरी से रुपये ले आने के लिए कहा। चतुरी उठकर चली गयी। वह रुपये लेकर जब लौटी तो आकर देखा कि शमशेरसिंह किशोरी के साथ बातें कर रहे हैं। और मुंशी जी एक, दूसरी चारपाई पर बैठे हुए हैं। चतुरी वहाँ पर आकर बैठ गयी। कुछ देर तक बातें कर चुकने के बाद किशोरी ने चतुरी से कहा—

चतुरी, मैंने तुमसे जो कुछ कहा था, उस हिसाब से बाबू जी को रुपये अदाकर दो!

चतुरी अपनी धोती के एक किनारे पर रुपयों की पोटली बाँधे थी। उसने उठकर शमशेरसिंह के सामने सब रुपये रख दिये। शमशेरसिंह ने रुपयों को गिना और किशोरी की ओर देखकर कहा—क्या होना चाहिए?

किशोरी ने उत्तर दिया—मालकिन को बुलाकर ये रुपये दे दीजिए और डिगरी का हवाला देकर पूरे चुकते की रसीद आप चतुरी को दे दीजिए।

शमशेरसिंह ने यही किया। रतनी भी वहाँ आकर बैठ गयी थी चतुरी को देखकर उन्होंने कहा—तुम्हारा काम हो गया!

चतुरी ने उठकर रतनी के पैरों पर सिर रखा और फिर हाथ जोड़कर कहा—आपकी मेहरबानी है।

इस प्रकार चतुरी के मामले का अन्त हुआ देवीगंज के अनेक विपद ग्रस्त स्त्री-पुरुषों की कठिनाइयों को दूर करने में किशोरी ने उनकी बड़ी सहायता की।

रतनी की सहायता से किशोरी ने एक बहुत अच्छे लड़के के साथ चंदा का विवाह संस्कार किया। विवाह के बाद चंदा अपनी ससुराल चली गयी और सुखपूर्वक वह वहाँ पर रहने लगी।

किशोरी ने अपनी इच्छा के अनुसार देवीगंज में एक सेवा आश्रम स्थापित किया। उसमें उसने सर्वसाधारण को और विशेषकर स्त्री बच्चों के सभी प्रकार के रोगों में दवायें देने का प्रबन्ध किया। आश्रम में एक चतुर चिकित्सक की सहायता से किशोरी सभी कार्य स्वयम् करती थी। इस प्रकार उसने सर्व साधारण की सेवा करने में जो ख्याति पायी उससे उसको बहुत प्रसन्नता हुई। जो लोग बीमार होकर उस आश्रम में आते थे, उनका चिकित्सा का प्रबन्ध करते हुए,

रोगी स्त्री-पुरुषों से किशोरी हँसकर कहा करती थी—भगवान ने इसी कार्य के लिए मुझे यहां भेजा है, इसीलिए अपने इस कार्य में मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है।

किशोरी की इस बात को सुनकर, आश्रम के सभी रोगी हँस दिया करते थे।

॥ समाप्त ॥

बाल साहित्य माला की बच्चों के लिए बहुत सरल, सरस, रोचक, सचित्र और सस्ती पुस्तकें।

१—जीव जन्तुओं की कहानियाँ ।।।)
२—महायुद्ध की कहानियां ।।)
३—हँसी का पिटारा ।।)
४—अनोखे चुटकुले ।)
५—रंगीले चुटकुले ।)
६—वायु के चमत्कार ।।)
७—निराला देश ।।)
८—अंगूर के गुच्छे ।।=)
९—सोने की डिबिया ।।)
१०—रंगीली कहानियां ।।)
११—दोनों भाई ।।)
१२—भारत के वीर बालक ।।)
१३—महाभारत की कहानियां ।।)
१४—खून का तालाब ।)
१५—अह: ह: ह: ।।)
१६—कनेटी पड़ाका ।।)
१७—भारत की वीर-बालाए प्रथम भाग ।।)
१८—भारत की वीर-बालाएँ दूसरा भाग ।।)
१९—वीर सौमित्र ।।=)
२०—रामू श्यामू ।)
२१—नल दमयन्ती ।-)
२२—भैंसा सिंह ।।)
२३—सपूतों की गाथा ।।)
२४—छटंकी लाल ।।)
२५—मोतियों का देश ।।)
२६—पुराणों की कहानियाँ ।।)
२७—ग्राम समस्यायें ।=)

साहित्य निकेतन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूची

१—सरल राजस्व १)
२—गंगा रहस्य ५)
३—बुनाई विज्ञान १।।)
४—सचित्र स्वास्थ्य और योगासन १।।)
५—मधुवन १।।)
६—घरेलू शिक्षा ३)
७—विचार धारा १।)
८—अमीरी के दिन ३)
९—तिलस्मी जासूस १)
१०—जीवन की झलक १।।)
११—किसान कन्या ।।।)
११—सम्पत्ति के उपभोग १।)
१३—आरती के दीप १।)
१४—छाया १।।)

पता—साहित्य निकेतन, दारागंज, प्रयाग